प्रथमावृत्ति
१९५९

मूल्य साढ़े तीन रुपया

प्रकाशक नवयुग प्रकाशन चावड़ी बाजार, दिल्ली
मुद्रक ज्ञानप्रकाश गुप्ता द्वारा कम्पोज होकर सम्राट प्रेस में मुद्रित

वेकरी का मालिक

हवा का बवण्डर रूखे-सूखे बर्फ के टुकड़ों, घास के पूलों और लकड़ी के छिलकों का एक भँवर सा बनाता हुआ आँगन में वेग के साथ घुस आया। और उस अँधड़ के बीच एक गोल-मटोल, थल-थल आदमी, खड़ा हुआ नजर आया जिसके शरीर पर टखनों तक नीली धारीदार तातार कमीज थी और पैरों में रबर के ऊँचे जूते। उसने हाथ स्थूल तोंद पर बाँध रखे थे और वह बड़ी तीव्रता से अपने दोनों हाथों के मोटे-मोटे अंगूठे अमेठ रहा था। उसने अपनी असमान दानेदार आँखों से जिनमें दाहिनी मँजरी थी और बायीं फुल्ली, मुझे घूर कर देखा और गरज कर कहा :

"चल भाग बे—कोई काम-वाम नहीं है यहाँ! जाड़ों में भी कहीं काम मिलते सुना है!"

उसके सफाचट, झुर्रियोंदार चेहरे पर ग्लानि के भाव उभर आये। उसकी पीली मूँछों के चंद बाल ऊपरी होंठ पर सहसा झुके और निचला होंठ उसके चिड़चिड़े स्वभाव के कारण नीचे को दबा और उसके छोटे-छोटे दाँतों की पंक्ति नजर आई। नवम्बर का महीना था। सर्द हवा के तेज झक्कड़ चल रहे थे जिन्होंने उसकी भारी भवों वाले माथे के महीन बालों को बिखेर दिया था। प्रचंड वायु के झोंकों से उसकी पोशाक उड़ रही थी और घुटनों तक उसकी मोटी-मोटी चिकनी गावदुम टाँगें खुल गई थीं जिन पर पीले रंग के रोंयेदार बाल उगे हुए थे। पर उसे कुछ भान ही न था बल्कि उससे तो यही प्रकट होता था कि यह [illegible] शख्स पतलून पहनना भी नहीं जानता। उस व्यक्ति के [illegible] कुरूप चेहरे में भी एक अजीब आकर्षण था और उसकी नन्हीं आँखों की पलकों में एक अविचारणीय अपमान के भाव निहित थे। मुझे कोई

जल्दी थी नहीं चुनाँचे मैंने सोचा इससे कुछ गप्प ही लगाऊँ। मैंने पूछा —

"तुम क्या यहाँ के दरवान हो?"

"चल-चल, रास्ता ले अपना। तुझे क्या मैं कुछ भी हूँ • •"

"अरे भाई मेरे, तुम पतलून-वतलून पहने नहीं हो, सर्दी लग जायेगी न तुम्हें • ?"

भवों की जगह जो लाल-लाल दाग थे ऊपर को तन गये, बेमेल आँखें कुछ अजीब ढंग से तरेरीं और उस आदमी का शरीर कुछ इस कार आगे को झुका कि ऐसा लगा अब गिरा, अब गिरा।

"और कुछ कहना है?"

"भई तुम्हें सर्दी लग जायेगी, तुम मर जाओगे!"

"तो फिर?"

"फिर कुछ भी नहीं।"

"बस तो बहुत हो गया।" उसने अंगूठों की अमेठन थामी और गरजा। फिर उसने अपने हाथ खोल लिये, चाव से अपने कूल्हे थपथपाये और मेरी ओर झुककर मुझसे पूछा :

"यह सब तुमने किसलिये कहा?"

"अरे योंही कह दिया। अच्छा यह बताओ मालिक वासिली सेम्यांनोव से मैं मिल सकता हूँ क्या?"

उसने एक ठण्डी सांस भरी और सिर से पैर तक अपनी मजरी आँख से मुझे जाँचते हुए वह बोला •

"मैं ही तो हूँ। • "

मेरी तो पैरों तले जमीन खिसक गई, नौकरी की सारी आशाएँ धूल में मिल गईं। सहसा जिस्म में कटकटाती हवा की सर्द लहरें दौड़ गईं और मेरे सामने खड़ा आदमी बड़ा ही घिनावना लगने लगा।

"अब बोलो?" उसने मुझे तिरछी नजरों से देखते हुये कहा। "दरवान कहा था न, एँ?"

अब चूँकि वह मेरे बिलकुल नजदीक खड़ा था मैंने यह जाँच लिया कि वह नशे में धुत्त है। उसकी आँखों के ऊपर वाले लाल गूमड़ों पर बड़े महीन पीले रोएँ उगे हुये थे और वह कुल मिलाकर एक भयानक चूजे जैसा दिखाई दे रहा था।

"निकल जाओ यहाँ से!" उसने आनंदित हो कहा और शराब की गंध के बादलों में मुझे ढँक दिया। साथ ही उसका ठूँठ जैसा बाजू हिला और उसकी बँधी हुई मुट्ठी ऐसी नजर आई जैसे शेम्पेन शराब की डाटदार बोतल हो। मैं मुड़ा और आहिस्ता-आहिस्ता फाटक की ओर चल दिया।

"अरे सुनना! तीन रूबल महीने पर काम करेगा?"

तो क्या मुझ जैसा १७ वर्षीय हृष्ट-पुष्ट, शिक्षित लड़का उन मोटू शराबी के यहाँ १० कोपेक रोजाना पर काम करने लायक था? लेकिन जाड़ों का मौसम था—ठिठुर के रह जाता मैं। फिर दूसरा चारा भी क्या था। चुनाचे बड़े अनमने और जब्र से मैंने कहा

"अच्छा, करूँगा।"

"पासपोर्ट है?"

मैंने झट अपना हाथ अन्दर की जेब में डाला लेकिन मेरे मालिक ने अपना बाजू हिलाया और बुरा-सा मुँह बनाकर मना कर दिया।

"रहने दो, रहने दो। क्लर्क को दे देना। जाओ अन्दर चले जाओ .. वहाँ साश्का को पूछ लेना . "

दुमंजिला इमारत की धुँआ भरी दीवार पर एक जर्जर तामचीन के नीचे दरवाजे में किवाड़ एक ही चूल पर टिके हुये थे। मैं दरवाजे में दाखिल हुआ और आटे के बोरों में से गुजर कर एक तंग व अँधियारे कोने में पहुँचा तो खट्टी, गर्म और भूख जगाने वाली भाप मेरे नथुनों से टकराई। सहसा आँगन में से आती हुई भयानक आवाजें मेरे कानों पर पड़ीं—ऐसा लगा कि लोग पैरों से धम-धम कर रहे हैं और घर्र-घर्र की आवाज निकाल रहे हैं। सामने की दीवार की एक [illegible] से अपना मुँह लगाये मैं भौंचक्का हो खड़ा रहा। यहाँ क्या [illegible] है कि

मेरा मालिक अपनी कुहनियाँ कूल्हों पर जमाये आँगन में इस प्रकार कूद फाँद कर रहा है जैसे कोई अदृष्ट घोड़े सधाने वाला घोड़े को चाल सिखा रहा हो। उसकी पेशियाँ और मोटे, गोल-मटोल घुटने खुले हुए थे, उसकी तोंद और थल-थल गाल फड़क रहे थे, उसका मछली जैसा मुँह सिकुड़ गया था और वह ज़ोर-ज़ोर से खाँस-खाँस कर बेदम हुआ जा रहा था।

"खा, खा "

आँगन संकीर्ण था और चारों ओर टूटी-फूटी बेढंगी कोठरियाँ बड़ी अस्त व्यस्त-सी बनी हुई थीं जिनके दरवाजों पर कुत्तों के सिरों-जैसे बड़े-बड़े ताले लटके हुये थे। बारिश से भीगकर ऐंठे हुये पेड़ की दर्जनों ग्रंथियाँ अधों की नाईं दीख पड़ रही थीं। आँगन के एक कोने में छत तक शकर के खाली पीपे अटे हुये थे जिनके खुले हुये गोल मुँहों में से तिनके झाँक रहे थे। ऐसा प्रतीत होता था कि आँगन को कूड़ाघर की तरह इस्तेमाल किया जाता है और हर प्रकार का काठ-कबाड़ वहाँ फेंक दिया जाता है।

और घास-फूस के भँवर लकड़ी के छिलकों और छेपटों के नाचते हुये छल्लों के दरम्यान यह भारी भरकम जिस्म वाला, मोटा-ताजा और अजीब शख्स आँगन के पथरीले फर्श पर अपने भारी जूतों की धमधम करती आवाज के साथ कूद रहा था और खाँसता जा रहा था मानो वायु के झोंकों की सरसराहट से ताल मिला रहा हो।

"खा, खा खा। · · ·"

कोने के पीछे कहीं से कुछ सुअर क्रोधित हो चीख-चिल्ला रहे थे मानो उसकी धमाचौकड़ी पर अपनी प्रतिक्रिया दर्शा रहे हों। कहीं कोई घोड़ा साँस ले रहा था और धम-धम कर रहा था और दूसरी मंजिल पर किसी कमरे की रोशनदान की छोटी खिड़की में से कोई लड़की दुर्बल स्वर में गा रही थी :

"काहे भये उदास प्रियतम,"

हवा पीपों में ठुँसी घास में घुस कर सरसरा रही थी। लकड़ी की एक

खपच्च बड़ी तेजी से फड़फड़ा रही थी। कबूतर खलिहान की एक ओलती में एक दूसरे से लिपटकर बैठे अपने जिस्म को गर्मा रहे थे और बड़ी दीनता से गुटर गूँ कर रहे थे ·   ।

यहाँ का वातावरण कुछ अजीब गड़बड़ सा था और उसके बीचो-बीच पसीने में शराबोर, हाँफता-काँपता यह ऊलजलूल शख्स नाच रहा था जिसकी शक्ल-सूरत का मैंने और कोई पहले कभी न देखा था।

"जान पड़ता है मैं किसी अच्छे-खासे झमेले में फँस गया हूँ!" मुझे कुछ सन्देह हुआ और मैं सोच में पड़ गया।

तहखाने की खिड़कियों पर तार की जाली लगी हुई थी और वहाँ की मेहराबदार छत में भाप और तम्बाकू के धुएँ के मिले-जुले बादल छाये हुये थे। उस स्थान का वातावरण अंधकारमय था, खिड़कियों के शीशे टूट गये थे जिनपर अन्दर से सने हुये आटे के लोंदे लगे थे · से कीचड़ थुपी हुई थी। कोनों में चीथड़ों के मकड़ी के जाल जैसे झण्डे जिन पर खाने की जूठन लिथड़ी हुई थी, पड़े थे और गंदगी का यह आलम था कि धूल की तहों में एक काली मूर्ति इतनी अट गई थी कि नजर आना मुशकिल हो गया था।

एक बहुत बड़े तंदूर में से जो नीची मेहराब का था सुनहरी लपटें निकल रही थीं। उसी के सामने बद-हवास पाइका बजारा खड़ा लम्बे हत्थे वाला बेलचा चूल्हे के पत्थर पर रगड़ रहा था। यही नानबाई उस कारखाने का दिल व दिमाग था—नाटा कद, मांगदार छोटी दाढ़ी और बला के चमकते हुए सफेद दाँत—यह थी उसकी आकृति। वह एक ढीली-ढाली बिना कमरपट्टी की रंगीन अर्ध-नलियाँ पहने हुये था। उसके खुले हुये वक्ष पर मलिन बालों के गुच्छों में हवा गुदगुदी कर रही थी। वह इस लिबास में किसी मदिरालय का नट दिखाई देता था। उसके पैरों पर चढ़े भारी, जीर्ण-शीर्ण बूट जो उसकी हरकत ढंग में ढले हुये लोहे की नाईं लग रहे थे, देख कर दुख होता था। वह

आनन्दमग्न हो चीख-चिल्ला रहा था और उसकी वे चीखें उस तहखाने के उदासीन वातावरण में गूँज रही थीं।

"सेको और उबालो!" एक ही सांस में असंख्य गालियाँ देते हुये वह चिल्लाया और अपने घुँघराले बालों वाले सुन्दर माथे से पसीने को बूँदे पोंछीं।

खिड़कियों के नीचे दीवार के सहारे लगी लम्बी मेज पर अठारह मजदूर बैठते, और 'बी' के आकार की आधी-आधी छटाक की छोटी-छोटी नमकीन नानखताइयाँ बनाते हुये दायें-बायें हिलते-डुलते रहते थे। मेज के एक किनारे दो आदमी सफेद गुँधे हुये आटे की लम्बी पट्टिया काटते थे, अपनी उँगलियों से उसके बराबर-बराबर पेडे बनाते और उन्हें मेज के दूसरे सिरे पर बैठे मजदूरों के हाथों में पहुँचा देते। ये हाथ इतने फुर्तीले होते थे कि उनकी हरकत मुश्किल से दीख पड़ती थी। आटे को नानखताई की शक्ल मे ढालने के लिये प्रत्येक व्यक्ति को उसे हथेली से थपथपाना पड़ता और यह कार्य ऐसी ताल के साथ होता कि सारा भटियारखाना हल्की-हल्की पट-पट की आवाज से गूँजने लगता था। मेज के पहले सिरे पर मैं बनी हुई रोटियों को ट्रे में रखता जाता और जब वह भर जाती तो लड़के उसे उठाकर बाइलर के पास ले जाते जो उन्हें उबलते हुये पानी की कढ़ाई में डाल देते जहा से एकाध मिनट बाद वह उन्हें ताँबे के एक करछुल से बाहर निकाल कर एक रांगा चढी हुई बड़ी ताँबे की परात में डाल देता। फिर आटे के चिकने-चिकने, गरम पेड़ों को ट्रे में रख देता, नानबाई उन्हें चूल्हे पर सुखाता फिर निकाल कर अपने फावडे पर जमाता और और बडी दक्षता के साथ उन्हें तदूर में फेंक देता जहाँ वे सिक कर कुरकुरे और कत्थई रंग के बनकर तैयार हो जाते।

जब नानखताई मेरे पास आ जातीं उस समय यदि मेरी ओर से जरा सी भी काहिली बरती जाती तो वे बिगड़ जातीं—आटे के पेडे एक दूसरे से चिपक जाते और सारा काम चौपट हो जाता। मेज पर बैठे

हुये दूसरे लोग मुझे उलाहना देने लगते और आटे के लोंदे मेरे मुँह पर फेंकने लगते।

वे सब मुझसे घृणा करते और शक की नजरों से देखते थे जैसे कि मैं कोई मक्कारी या दगाबाजी करने वाला हूँ।

मेज पर अठारह व्यक्ति तंदूर में झूमते थे। तमाम आदमियों के चेहरे कुछ समान रूप-रंग लिये नजर आते थे जो बड़ा विचित्र-सा लगता था। सबके चेहरों पर थकावट और उदासीनता के भाव अंकित थे। मेरा एक साथी आटा गूँधता और आटा मिलाने की कल का लोहे का हत्था धमाके के साथ चलाता। कोई तीन मन का ढेर आटा सख्त और लोचदार गूँधना जिसमें एक भी फटकी न हो, बड़े परिश्रम का काम है। फिर यह काम होना भी बड़ी फुर्ती से चाहिए—ज्यादा से ज्यादा आधे घन्टे में।

तंदूर में लकड़ियाँ चटखती रहतीं, कढ़ाव मे पानी सनसनाता रहता और मेज पर हाथों के थपथपाने की आवाजें आती रहतीं। ये सब आवाजें मिलकर निरंतर एक ही जैसी आने वाली और एक-सुरी गुनगुनाहट में परिणत हो जातीं। और यह गुनगुनाहट तब भंग होती जब कोई क्रोध में किसी को गालियाँ देता। फर्श पर बैठे काम करते हुये लड़कों में से ग्यारह वर्षीय पाश्का आत्युखोव की ताजा और बुलन्द आवाज सुनाई देती थी। यह चपटी नाक वाला तोतला छोटा-सा लड़का जिसके चेहरे पर कभी भय और कभी आनन्द के भाव उभर आते अपने तन्मय श्रोताओं को बड़ी रोचक व अविश्वसनीय कहानियां सुनाता कि किस प्रकार एक पादरी की पत्नी ने द्वेष से आक्रान्त हो कर अपनी लड़की पर, जिस की शादी होने वाली थी मिट्टी का तेल छिड़क कर आग लगा दी। घोड़े चराने वालों को जिन कष्टों का सामना करना पड़ता है और उन्हें किस प्रकार दण्ड दिया जाता है। भूत-प्रेत, डकैतों और मल्लाहनाओं के किस्से वगैरह। इन्हीं बातों और हँसी मजाक के कारण लोगों ने उसका नाम 'हुन हुला' रख दिया था।

मुझे पहले ही मालूम हो चुका था कि वासिली सेम्योनोव कुछ दिन पहले—कोई चार वर्ष पूर्व, खुद उस भटियारखाने में नौकर था और अपने मालिक की बूढ़ी पत्नी के साथ रहता था। बुढ़िया को उसने यह पट्टी पढ़ाई कि वह उसे कुछ खिलाकर मार डाले। और जब उसकी मुराद पूरी हो गई तो उसने सारा काम-काज अपने हाथ में ले लिया। और अब वह उसे मारता है और उसे इतना आतंकित कर रखा है कि उसका जी चाहता है वह चूहा बन कर बिल में जा छिपे और उसकी शक्ल न देखे। यह किस्सा मुझे आम घटना की तरह सीधी-सच्चा सुनाया गया। मुझे तो शुरू से आखिर तक उस खुशनसीब आदमी में कोई चीज ऐसी दीखी नहीं जो मैं उससे ईर्ष्या करता।

"पतलून क्यों नहीं पहनता वह ?"

उदास और भयावह चेहरे वाले कुजिन ने जो काना था मुझे बड़ी गम्भीरता से समझाया :

"नशे में धुत्त फिरता रहता है—अभी परसों ही तो उसने अपनी पियक्कड़ी का लम्बा दौर खत्म किया है।"

"दिमाग तो खराब नहीं है उसका ?"

अनेकों नेत्र हास्यास्पद ढंग से मुझे घूरने लगे। बंजारा बड़ी आशावादिता से बोला

"जरा ठहर जा वेद्य, अभी पता चल जाता है कि उसका दिमाग खराब है या अच्छा।"

साठ वर्षीय कुजिन से लेकर याश्का तक जो नानखताइयों को धागे में पिरो कर हार बनाता है और जिसे अक्तूबर से मार्च तक के लिये दो रूबल मिलते हैं, हर व्यक्ति अपने मालिक का जिक्र इस अंदाज में करता है जैसे उसे अपने मालिक पर गर्व हो और मानो कह रहा हो, अरे वासिली सेम्योनोव जैसा आदमी लाकर तो बताओ। वह बड़ा व्यभिचारी है, उसकी तीन रखैल हैं जिनमें से दो को तो वह नाकों चने चबवाता है और तीसरी खुद उसे ठोकती है। वह लालची है, हमें बुरा खाना

खिलाता है। छुट्टियों में तो हमें गोभी का शोरबा और गोश्त मिलता है, और वैसे रोजाना आजड़ी मिलती है। बुध और शुक्रवार के रोज चर्बी से बघारा हुआ दलिया दिया जाता है। और काम के वक्त सात सेर आटे की नानखताइयाँ उसे रोज दिये जाओ जब कि एक बार आटे में २२ मन २ सेर वजन होता है और उसकी नानखताइयाँ बनाने में लगभग ढाई घंटे लगते हैं।

"बड़ी अजीब बात है, तुम अपने मालिक की इतनी बड़ाई करते हो।" मैंने कहा।

अपनी पैनी दृष्टि से मुझे घूरते हुए एक नानबाई ने कहा

"इसमें अजीब बात क्या है?"

"ऐसा लगता है तुम सबको उस पर बड़ा गर्व है . . ?"

"हां तो उसमें ऐसी खूबियाँ हैं तभी तो करते हैं गर्व। तुम्हारी समझ में यह बात आई नहीं शायद। अब देखो ना, कल तक वह एक मामूली मजदूर था, कोई पूछता भी नहीं था उसे, और आज? पुलिस का सूबेदार भी उसे झुक कर सलाम करता है। पढ़ा-लिखा वह [illegible] है सिर्फ गिनने जानता है—फिर भी देखलो चालीस आदमियों का कारोबार चलाता है, और सारा हिसाब-किताब अपनी खोपड़ी में रखे हुए है।"

कुज़िन ने ठंडी साँस ली और आज्ञाकारी सेवक की नाईं समर्थन से कहा,

"भगवान ने उसे बड़ी तेज बुद्धि दी है।"

और पावेल ने उत्तेजित हो चीखकर कहा

"नानखताई का एक तंदूर, डबल रोटी का तंदूर, बिस्कुटों का [illegible] तंदूर भला कर तो लो इन सबका इन्तज़ाम और हिसाब-किताब [illegible]। ढाई हज़ार मन नानखताइयों तो [illegible] और [illegible] हाथ सदियों से ही देख लेता है। [illegible] है जिसमें से हर एक को ३६ सेर नानखताइयों और [illegible] देकर

पड़ते हैं—अब बोलो, क्या बोलते हो ?"

नानबाई का यह जोश व खरोश मेरे लिये असह्य हो गया, मुझे झुँझलाहट होने लगी—मैं अपने अनुभव की बिना पर मालिकों के बारे में कुछ दूसरे ढंग से सोचने लगा था और मेरा वह विचार निराधार न था।

बूढे कुजिन ने अपनी एक आँख चोरों की तरह अपनी भूरी भँवों में छिपाई और व्यग्य से कहा

"अरे भाई, वह कोई ऐसा-वैसा मामूली आदमी नहीं है।"

"अगर वकील तुम्हारे उसने बूढ़े मालिक को जहर दे दिया था, तब तो वास्तव में इसमें शक ही क्या हो सकता है। .."

नानबाई ने अपनी काली भवें चढाईं और कुछ सदिग्ध भाव से बोला।

"तो साब उसका कोई गवाह-ववाह तो है नहीं। बाज वक्त ऐसा भी होता है कि घृणा या द्वेष के कारण हत्या करने या विष देने या चोरी करने का अपराध किसी के मत्थे मढ दिया जाता है—हमारी बिरादरी में जब किसी की तकदीर चेत जाती है और वह फलने-फूलने लगता है तो लोगों की आँखों में खटकने लगता है। . "

"तुम्हारा भाई-बन्द कैसे हो गया भई वह ?"

बंजारे ने कोई जवाब न दिया और कुजिन सामने वाले कोने पर नज़र दौड़ाकर लड़कों पर गुर्राया:

"अबे शैतानों ! जरा उस मूर्ति की धूल तो झाड़ दो ! तातारी, काफ़िरों। "

बाकी सब ऐसे चुप थे जैसे हैं ही नहीं।

जब थालियों में नानखताईया रखने की मेरी बारी आई तो मेज के एक सिरे पर खड़े होकर मैं लड़कों को वह सब जो मैं जानता था और उनके लिये जरूरी समझता था बताने लगा। भटियारखाने में जो शोर हो रहा था उसे दबाने के लिये मुझे जोर-जोर से बोलना पड़ता था और जब वे लोग मेरी बातें ध्यान से सुनने लगते तो जोश में आकर मैं और

भी बुलन्द आवाज़ में बोलने लगता। इसी प्रकार का 'सुधार-कार्य' करते हुए एक बार मालिक ने मुझे ऐन मौके पर पकड़ लिया जिसके लिये मुझे सजा भी मिली और उपनाम भी।

हमारे भटियारखाने और डबल रोटी की बेकरी के दरम्यान जो मेहराबी दरवाजा है उसमें वह मेरे पीछे चुपचाप आकर खड़ा हो गया। बेकरी का फर्श हमारे भटियारखाने के फर्श से तीन सीढ़ियाँ ऊंचा था और हमारा मालिक मेहराब के चौखट में तोंद पर हाथ बाँधे खड़ा दोनों हाथों के अँगूठे एक-दूसरे के गिर्द घुमा रहा था। हमेशा की तरह वही अपना लम्बा कुर्ता जो फीते से उसकी मोटी गर्दन में बँधा हुआ था पहने हुए आटे का अचल बोरा मालूम हो रहा था।

इस ऊँची जगह पर खड़ा वह अपनी बेजोड़ आँखों से मेरा मुआयना कर रहा था। उसकी मँजरी आँख की पुतली बिल्कुल गोल थी, बिल्ली की पुतलियों की तरह कभी चमकने लगती, कभी सिकुड़ जाती। और दूसरी भूरे रंग की बेजवी आँख मुर्दे की आँख की तरह पथराई हुई और चिकनी-चिकनी मालूम हो रही थी।

मैं भी बोलता ही गया, यहाँ तक कि महसूस हुआ कि भटियारखाने में असाधारण निस्तब्धता छा गई है। पर काम पहले से अधिक फुर्ती से होने लगा था। मेरी पीठ के पीछे से किसी की उपहासपूर्ण आवाज़ आई.

"क्या बकवास लगा रखी है बे बदबख्ते ?"

मैंने जो पीछे मुड़कर देखा तो मैं घबड़ा गया और मेरी घिग्घी बँध गई। अपनी मँजरी आँख से मुझे एड़ी से चोटी तक घूरते हुए वह मेरे पास से गुजरा और जाकर नानबाई से पूछा:

"कैसा काम करता है यह ?"

पाशा ने सन्तोष प्रकट करते हुए कहा:

"बिल्कुल ठीक है। बड़ा अच्छा काम करता है .

और दरवाजे की सीढ़ियों पर चढ़कर उसने नर्म और थके स्वर में पुकारे
[। । ।
"हफ्ते भर इसे आटा गूँधने पर लगाए रखो जरा .. "
यह कहकर वह दरवाजे में से अदृश्य हो गया और साथ ही कुहरे का एक सफेद बादल भटियारखाने में घुस आया।
दुर्बल लँगड़े वानुक उलानोव ने जिसके चेहरे से ढिठाई टपकती थी बड़े ही भोंडे हाव-भाव और बेढंगी बोली में कहा, "मैं तो सारी उमर भी न करूँ !"
किसी ने सीटी बजाकर उसका उपहास किया। नानबाई ने चारों ओर प्रकोपपूर्ण दृष्टि दौड़ाई और ये बड़ी गाली देते हुए कहा
"चलो वे काम करते नजर आओ।"
कोने में से जहाँ फर्श पर बैठे लड़के काम कर रहे थे तोतले याश्का की क्रोधित और झिड़की भरी आवाज आई :
"अरे बड़े कमाल के लोग हो तुम। मजे में बैठे हो तुम मेज पर। जब तुमने मालिक को आते देखा था तो उस बेचारे को इशारा करते क्या तुम्हारी नानी मरती थी?
"हाँ और क्या। उसके भाई सोलह वर्षीय आर्तेम की आवाज आई। वह ऐसा हक्का बक्का दिखाई दे रहा था जैसे लड़ाई के बाद कोई मुर्गा। एक हफ्ते लगातार आटा गूँधना हँसी-ठट्ठा नहीं है—हालत पतली हो जायेगी बेचारे की।"
मेज के परले सिरे पर बूढ़ा कुजिन और भूतपूर्व सैनिक मिलोव बैठे थे। मिलोव बड़ा खुशमिजाज आदमी था पर बेचारा आतशक का मरीज था। कुजिन ने अपनी निगाहें नीची करलीं पर कहा कुछ नहीं। बूढ़ा सैनिक, अपराधी की नाईं भुनभुनाया
"और, मुझे तो इसका ध्यान ही नहीं आया .. "
नानबाई ने दाँत निकालकर हँसते हुए कहा
"अब तेरा नाम बड़बढ़िया हो गया।"

दो-तीन आदमियों ने अनमने से कह कहा लगाया और उसके बाद एक भद्दा, कष्टकर सन्नाटा छा गया। सब लोग मुझसे नजरें चुराने लगे।

सत्य की गहराई मे तो सबसे पहले योश्का ही पहुँचता है. सहसा ओसिप शातुनाव को दबंग आवाज आई। वह एक भद्दे, चपटे चेहरे और तिरछी छोटी-छोटी आँखो वाला एक बेडौल-सा आदमी था।

"यह यारका दुनिया में ज्यादा नहीं जियेगा।"

"तुम जाओ जहन्नुम में। लड़के की बारीक और तेज आवाज गूँजी।

"इसकी तो जबान काट ली जानी चाहिये," कुजन ने सलाह दी। घार्तेम ने झल्लाकर जवाब दिया "अबे तेरी ही जीभ न कट जाय डंक समेत। नीच कहीं के।"

"चुप हो जाओ बे।" तंदूर के पास से एक रोबदार आवाज आई। आर्तेम उठा और मरियल चाल से बरामदे के दरवाजे की ओर जाने लगा। पीछे से उसके छोटे भाई की डाँट सुनाई दी

"नंगे पैर कहाँ चले। जूते पहन कर जाओ—कहीं सर्दी लग गई तो लेने के देने पड़ जायेंगे।"

जाहिर है हर शख्स इस प्रकार की उक्तियों का आदी था—और वे सब खामोशी से उन्हें टाल दिया करते थे। आर्तेम ने स्नेहपूर्ण और मुस्कान भरी दृष्टि से अपने भाई की ओर देखा और उसे आँख मारकर अपने फटे-पुराने बूट पहन लिये।

मुझे बड़ा रंज हुआ। उन लोगो मे अपनी तनहाई और अजनबियत के एहसास से मेरा दिल दुखने लगा। बर्फानी तूफान बाहर खिड़कियों को पीट रहा था—शहर [illegible] रही थी। इस किस्म के लोगों को मैंने देखा था और उनके स्वभाव को भी मैं कुछ-कुछ समझने लगा था।

मैं जानता था कि इनमें से लगभग प्रत्येक की [illegible] अलग कहानी [illegible]। रात गुजर रही थी—[illegible] और [illegible] निस्तब्ध वातावरण में [illegible] हुई [illegible] [illegible] रहा था, और [illegible]

कोमल व लचकदार जौहर को सैंकड़ों हथौड़ियों से पीट-पीट कर शहर अपनी तर्ज़ मे ढाल रहा था--कुछ को विस्तृत कर रहा था और बाकियों को संकुचित।

नगर की क्रूर और निमम कारस्तानी विशेषतया उस समय अधिक स्पष्ट दीखने लगती थी जबकि ये सादगी पसंद लोग देहाती गीत गाने लगते और उन गीतों व सगीत मे अपनी आत्माओं की दर्दनाक हैरानी और मूक वेदना समो देते थे।

दुख की मारी गरीब एक गोरी

अचानक उलानोव ने ऊँची और लगभग स्त्री की-सी आवाज़ में गाना शुरू किया। फिर कोई और अनायास ही गाने मे शामिल हो गया .

रात को खेत में चली आई

चूंकि शब्द 'खेत' कुछ मंद सुर मे गाया गया था इसलिये दो-तीन और गाने में शामिल होगये। अपने सिरों को और भी नीचे झुकाकर, अपने चेहरे छिपाते हुये वे अपने स्मृति-सागर में डूबने- उतारने लगते :

खेत में छिटकी हुई थी चाँदनी
और हवायें गारही थीं रागनी .. ..

अभी गीत की अतिम पक्ति नहीं गाई गई थी कि वानुक ने सिसकी भरे स्वर में उन्हें शुरू से दुहराना शुरू कर दिया .

दुख की मारी गरीब एक गोरी

गीत और भी अधिक सबल और बुलंद हो गया :

सर्द झोंको से कहा गोरी ने यह
ऐ सहेली, ऐ मेरा प्यारा हवा
मेरे दिल की धड़कनों को रोकदे
मुझ से मेरा आत्मा का छीनले

और जब वे यह गीत गारहे होते तो ऐसा लगता कि खेतों से

चलकर शीतल व मंद वायु का झोंका भटियारखाने में घुस आया है। और सुखद विचार मस्तिष्क पर छाए जाते हैं—वे विचार जो मनुष्य को उन्नत व उसके हृदय को दयालु बनाते हैं। फिर सहसा जैसे कोमल शब्दों की उदासी पर लज्जित हो कोई बुदबुदाता .

"आहा, वह तो बेचारी थक गई "

उलानोव और भी ऊँचे और उदास सुर में गाया, उसकी गर्दन की नसें उभड़ आईं और चेहरा सुर्ख अंगारा हो गया

दुख की मारी गरीब एक गोरी

आत्मा को झकझोरने वाली आवाजें उठती और गीत उदासी के अथाह सागर में डूब जाता

उसने रोकर सर्द झोंकों से कहा
ऐ सहेली ऐ मेरी प्यारी हवा
तू मेरा मायूस दिल ले जा वहाँ
दूर जंगल में अँधेरा हो जहाँ

"और मैं शर्त लगाता हूँ कि वह—"गाने के दौरान में ही नवसी ने एक अश्लील और गंदा व्यंग्य कस दिया। अंधियारे तहखाने और गंदे आँगन की दुर्गंध खेतों की सुगंधित वायु को दूषित कर देती है।"

"अरे लानत है इस सब पर!" किसी ने ठण्डी सांस भर कर कहा।

वानुक और मधुरतम वाणी वाले अन्य गायक जोर की तान लगाते मानो वे विषाक्त नीली लपटों और दुर्गंधमय शब्दों को ठण्डा करना चाहते हों, किन्तु अन्य लोग प्रेम की दुखद गाथा पर और अधिक लज्जित होने लगते—वे जानते थे कि शहर में प्रेम दस कोपेक में खरीदा जा सकता है, वे उसे भी खरीदते हैं और उसके साथ ही शारीरिक रोग और भयानक कलंक भी—और उसके सम्बन्ध में उनका दृष्टिकोण दृढ़ हो चुका था।

दुख की मारी गरीब एक गोरी
प्रेम करता नहीं है उससे कोई

"अरे इतनी शालिन न बनो—नहीं तो एक-दो नहीं दस पड़ जायेंगे पीछे "

"उन्हें, उन चंचल छोकरियों को तो बस यह आता है कि विवाह करलें और हम पुरुषों की गर्दनों पर सवार हो जायें। "

"यह भी बिलकुल सच है। "

उलानोव आँखें मींच कर सुनगुनाता और उस समय उसके दुराचारी, वृद्ध चेहरे पर बड़ी सुन्दर झुर्रियाँ पड़ जातीं और वह एक शर्मीली मुस्कान से दमकने लगता।

लेकिन अक्सर बेसुरे लोग गीत को इस प्रकार बिगाड़ देते हैं जिस प्रकार स्वच्छ वस्त्रों को कीचड़ की छींटें। और वानुक को अपने तईं यह मानना पड़ता है कि उसकी वह दर्दभरी आवाज अब खत्म हो चुकी है। अब वह अपनी चुंधी आँखें खोलता और उसका मुंभाया हुआ चेहरा धृष्टतापूर्ण मुस्कान से विकृत हो जाता और उसके पतले होंठों पर कुछ अपशब्द रेंगने लगते। एक श्रेष्ठ गायक की हैसियत से वह अपनी कीर्ति कायम रखने का इच्छुक था। और उस जैसे आलसी और अपने साथियों में अप्रिय व्यक्ति का वह यश ही तो था जिसके कारण वह भटियारखाने में अब तक टिका हुआ था।

अपने पतले और लाल बालों वाले सिर को झटका देकर वह बड़ी बारीक आवाज में चीखता :

क्या मजा आया हमें प्रसोग्नो बाजार में
एक विद्यार्थी नशे में धुत्त था लेटा वहाँ

दुर्भावना भरे आनन्द में मग्न यह अशिष्ट गीत गाते हुए सबके सब झूमने, हू-हू करने और सीटियाँ बजाने लगते और सारा भटियारखाना एक आवाज़ में चीख उठता

लेटकर वह छल-कपट में मुस्कराता था वहाँ

ऐसा प्रतीत होता था मानो सुअरों का एक समूह किसी सुन्दर वाटिका में घुस कर फूलों को रौंद रहा हो। उलानोव घिनौना और नीच था।

उत्तेजना से वह उन्मत्त हो गया, उसके उर में ज्वाला भड़क उठी, उसके चेहरे पर चकत्ते पड़ गए थे उसकी आँखों की पुतलियाँ उबली पड़ रही थीं, अपने शरीर को बड़े निर्लज्ज और अश्लील ढंग से बल दे कर वह बड़ी शर्मनाक हरकतें कर रहा था और उसकी कर्कश आवाज अचानक और भी सख्त हो जाती थी और विषय-वासनाएँ हृदय को बरमाने लगती थीं ।

आओ सुन्दरियो आओ आओ नारियो ।

वह हाथों को लहरा कर गाता और बाकी सब भी उस उत्तेजक कोलाहल में शामिल हो जाते ।

जल्दी आओ हैया हो ।
आओ आओ ।
आओ आओ ।

गाढ़ी, चिकनी चिपचपी कीचड़ उबल रही थी और उसमें कराहती हुई सिसकियाँ, मरती हुई मानवीय आत्माओं को पकाया जा रहा रहा था । वह पागलपन असह्य हो गया था, उसका दृश्य-मात्र ही ऐसी उन्मत्तता उत्पन्न करता था कि जी चाहता दीवार से सिर फोड़ लें । लेकिन इसके बजाय होता यह कि आप अपनी आँखें बन्द कर लेते और खुद भी वह अश्लील गीत गाने लगते—शायद दूसरों से भी ज्यादा जोर से । अपने साथियों पर आपको तरस आने लगता और यह विनाशकारी भावना आपको परास्त कर देती । इसके अतिरिक्त किसी को अपनी श्रेष्ठता अनुभव करने का अवसर बार-बार तो हाथ आता नहीं है ।

कभी-कभी हमारा मालिक दबे पाँव आ धमकता या लाल बुझक्कड़ दाढ़ी वाला क्लर्क सारवा दौड़ा-दौड़ा आ जाता ।

'मजे मार रहे हो ना पट्ठो ?' हेम्पोलोव विदेली किन्तु ... आवाज में पूछता पर सारवा तो यों ही चीख पड़ता

"अबे इतना हो-हल्ला नही, हरामियो।"

और भड़कते हुए शोले फौरन ठण्डे पड जाते। ये लोग जिस खुशी और उत्साह से यह नादिरशाही हुक्म मान लेते थे उससे तो आत्मा पर और भी अधिक गहरा और बोझिल अन्धकार छा जाता था।

एक दिन मैंने पूछा

"भाइयो! तुम लोग अच्छे-अच्छे गीतो की मिट्टी पलीद क्यो करते हो?"

उलानोव ने चकित दृष्टि से मेरी ओर देखा।

"क्यो, क्या हम लोग खराब गाते हैं?"

और ओसिप शातुनोव ने अपनी भारी आवाज़ में, जो बहुधा निरुत्साह-सी लगती थी, कहा—

"गीत को तो हम चाहे तो भी नही बिगाड सकते। वह तो आत्मा की भाँति होता है जो अमर होती है। हम सबका भौतिक शरीर समाप्त हो जायगा परन्तु गीत सदैव जीवित रहेगा वह सदैव अजर-अमर रहेगा।"

जब ओसिप बोलता था तो मठ के लिये चन्दा एकत्र करने वाली भिक्षुणी की नाई नजरें नीची कर लेता था। और जब वह खामोश होता था तो उसके चौडे चपटे मुंह की कपोल—पलकें निरन्तर हिलती रहती थी मानो यह भीमकाय व्यक्ति कोई चीज हमेशा चबाता ही रहता हो।

लकडी की खपच्चो को जोड-जाड कर मैने एक बुक-स्टैंड सा बना लिया था और जब मैं आटा गूध चुकने के बाद नानखताइयाँ चुनने के लिए अपनी मेज पर आता तो उस स्टैंड पर मैं अपनी किताब खोलकर रख लेता था और जोर-जोर से पढकर सबको सुनाता था। मेरे दोनो हाथ तो बराबर काम मे लगे रहते थे इसलिए पन्ने उलटने का काम मिलोव के सुपुर्द था—वह इस काम को बडी श्रद्धा से करता, हर बार

बनावटी अन्दाज में जोर लगाता और उँगलियो में काफी थूक लगा कर पन्ना उलटता । यह काम भी उसी के सुपुर्द था कि यदि मालिक सहसा आन धमके तो वह मेज के नीचे लात चलाकर मुझे इशारा करदे ।

लेकिन भूतपूर्व सैनिक कुछ खोया-खोया-सा रहता था । और एक दिन जब मै टाल्स्टाय की "तीन भाइयो की कहानी" पढ रहा था तो मुझे अपने कन्धे के ऊपर से सेम्योनोव की घोडे की-सी हिनहिनाहट सुनाई दी । उनका छोटा-सा गोल-मटोल हाथ अचानक बाहर निकला और उसने किताब झपट ली और पूर्व इसके कि मैं सम्हलूं मैंने देखा वह किताब हाथ में झुलाता हुआ तंदूर की ओर जा रहा है और कह रहा है

'वाह ! यह बात मुझे बहुत पसन्द है क्यो ? बडा चालाक है "

मैंने लपककर उसे पकडा और बाजू दबोच कर कहा

"किताब नही जला सकते तुम !"

"कौन कहता है ?"

"नही जला सकते ! मैंने कह दिया ।"

भटियारखाने मे सन्नाटा छा गया । मुझे नानबाई की चढी हुई त्योरियां और मुस्कराते हुए दात नजर आये और मुझे लगा वह [illegible] ही वाला है

'टूट पडो इस पर ।"

मेरी आखो के आगे अन्धेरा छा गया । हरे-हरे चक्कर नजरो मे घूमने लगे और मेरी टागे लरजने लगी । सब लोग [illegible] से [illegible] हुए थे मानो उन्हे आशा हो कि एक [illegible] शुरू कर देना है ।

"नही जला सकता ?" मालिक ने मेरी ओर [illegible]

[illegible] स्वर मे पूछा । उसका [illegible] और [illegible]

[illegible] हो ।

लाओ, इधर लाओ ।"

"अच्छा लेनो ।"

मैंने मसली-मम्लाई किताब लेली और मालिक का दराज़ छोड कर वापस अपनी जगह पर आ बैठा । वह भी सर भुकाये हमेशा की तरह चुपचाप बाहर आँगन मे चला गया । भटियारखाने मे बडी देर तक निस्तब्धता छाई रही । फिर नानबाई ने बड भद्द अन्दाज मे अपने चेहरे का पसीना पोछा और जमीन पर पांव फटकारते हुए बोला

'आयहाय, कम्बख्तो ! क्या दिन दिखाये हैं ! मुझे तो पूरा यकीन था कि वह तुम सब पर टूट पडेगा ।"

"और मुझे भी ।" मिलोव ने खुशी-खुशी हाँ मे हाँ मिलाई ।

"अरे साहब लडाई होते-होते रह गई ।" वजारे ने खेद-पूर्ण स्वर मे कहा ।

"अच्छा तो बडबडिय ! अब जरा चौकन्ना रहना । अबके ता छोड दिया उसने पर आइन्दा बदला लेलेगा ।"

कुजिन ने अपना सिर हिला कर बडबडाते हुए कहा

"यह जगह तेरे लिए ठीक नही, समझा भाई ! हम झगडा-टण्टा नही चाहते । मालिक को गुस्सा तू दिलायेगा भुगतना पडेगा हम सबको ।"

यारका आर्त्युखोव न सैनिक को दबी आवाज मे गालियाँ देते हुए कहा

"क्या उसे आते हुए नही देखा था तूने, क्यो वे बौडम ?"

'हाँ ऐसा ही लगता है ।"

"तो क्या तुझसे कहा नही था कि जरा देखता रहना ।"

"हाँ पर चूक गया इस बार क्या करें ... ।"

भटियारखाने के अधिकतर मजदूर उदासीन थे और चुप साधे हुए थे । और बैठे हुए बाकी लोगो का गुर्राना सुन रहे थे । मैं भाँप ही न

सका कि वे मेरे बारे में क्या सोच रहे हैं । मैं कुछ उद्विग्न-सा था और चुनांचे मैंने फैसला किया कि यहाँ से चला जाना ही बेहतर है । ऐसा लगा जैसे बजारे ने मेरे इरादे का अनुमान लगा लिया हो क्योंकि वह क्रोधित हो बोला

"देख बे बड़बड़िये ! ऐसा कर अपना हिसाब साफ करले । वरना देखना नाक में दम हो जायगा तेरा । येगोर को तेरे पीछे लगा देगा वह और बस समझ कि हुआ काम तमाम ।"

उसी वक्त याश्का फर्श पर से उठ खड़ा हुआ जहाँ अभी तक वह दर्जियों की तरह आलती-पालती मारे चटाई पर बैठा था । उठ कर जब वह खड़ा हुआ तो कमानदार, बल खाई हुई टाँगों के ऊपर उसका पेट बाहर को निकल पड़ा । उसकी दूधिया नीली आँखों में भयानक चमक पैदा हो गई और वह मुक्का तान कर बोला

"क्या ? काम छोड़ कर चला जाये ? अरे मार मुक्का इसके [illegible] पर ! अगर यह तुमने लड़ेदा तो मैं तुम्हारा नाप दूँदा ।"

क्षण भर के लिए तो सन्नाटा छाया रहा और फिर सहसा कहकहों का बादल फट पड़ा—ताजगी भरे और सबल कहकहे जो गर्मियों में बारिश के जोरदार छींटे की तरह मनुष्य की आत्मा के सारे विकार और सुर्खाहट धोकर उसे पवित्र और निर्मल कर देता है । इन्सानों को एक ठोस चट्टान बना कर एकजान कर देता है और जो परस्पर मैत्री और सहानुभूति के सम्बन्धों से और भी दृढ़ हो जाता है ।

तमाम आदमियों ने अपना काम छोड़ दिया और हँसी के मारे पेट पकड़-पकड़ के फिरने लगे आँखें लोट-पोट हो गईं और आँसू [illegible] के गालों पर बहने लगे । याश्का भी कुछ भौचक्का हो [illegible] रहा था और अपनी कमीज़ झटक रहा था ।

'क्यों नहीं ? मैं पछाड़ूँगा इसे मज़ा ! [illegible] —उठाकर दे मारूँगा

कोई बुदबुदाया

"हाय ! अस्पताल मे ही किसी ने उसका काम तमाम न कर दिया ।"

फिर नीरवता और उदासी छा गई । एक मिनट बाद नानबाई न फिर सुझाया

"सेम्योनोव को परेड करते देखना चाहते हो ?"

बरामदे में खडा मैं दीवार की दरार में से झाक कर बाहर आँगन मे देख रहा था । आँगन के बाच में हमारा मालिक एक खाली बक्स पर बैठा था । उसकी टाँगें नगी थी कुर्ते के दामन मे कोई दो-तीन दर्जन पाव रोटियाँ थी । चार बडे-बडे नसली सुअर उसके घुटनो से अपनी थूथनियाँ रगड-रगड कर जोर-जोर से खरखरा रहे थे और वह उनके लाल जबडो में पाव रोटियाँ ठूँसता जाता और सुअरो के पेट थपथपा-थपथपा कर बडी नर्म, धीमी और अनजानी आवाज में बड-बडा रहा था ।

"हूँ हूँ, खाओगे ? पाव रोटी खाओगे ? लो, लो खाओ ।"

उसका भरा हुआ चेहरा, हल्की, स्वप्निल मुस्कान से खिला हुआ था । उसकी फुल्ली आख मे जान पड गई थी और वह गहरा लगाव प्रकट कर रही थी । कहना चाहिए कि उसके इर्द-गिर्द की हरेक चीज मे कुछ विलक्षण अजनबियत पैदा हो गई थी । उसकी पुश्त पर एक चौडा-चकला, चेचक मुँह दाग, मुछैल सफाचट नीली ठोडी वाला कोई व्यक्ति खडा था जिसके बाये कान मे चादी की बाली पडी थी । सिर पर टोपी गद्दी की तरफ तिरछी किए उसन बटन जैसी गोल-गोल धुंधली आंखो से सुअरो की ओर देखा जो उसके मालिक के साथ खेल रहे थे । उसके दोनो हाथ जेबो मे ठुंसे अन्दर–ही–अन्दर जल खा रहे थे ।

अब समय आ गया है इन्हे बेचने का, ' उसने [illegible]

सबसे पहले शातुनोव की हँसी रुकी। हथेली से मुंह पोंछते हुए और किसी की ओर देखे बिना उसने कहा

"अबके भी याश्का ही ने हिम्मत की, लौण्डा ठीक कहता है! बेकार बेचारे को डरा रहे हो। वह तो तुम्हारे भले की बात करता है और तुम उसे निकाल बाहर करने पर तुले हुए हो ।"

"अरे पर सावधान कर देने में तो कोई हर्ज नही है!" याश्का अपनी हँसी पर काबू पाने के बाद बोला। "हम कुत्ते तो हैं नहीं, क्यों है ना ?"

और सब-के-सब बडी दिलचस्पी ले लेकर यह उपाय ढूंढने लगे कि मुझे येगोर के पजे से किस तरह बचाया जाए ।

"किसी को मार डाले या अपाहज कर दे—उसके लिए सब समान है। फर्क ही क्या पडता है, कुछ भी नही ।"

बचाव के और हमले के निरर्थक और मूर्खतापूर्ण मन्सूबे बनाने में याश्का सबसे बाज़ी ले गया। उधर बूढा कुज़िन एक कोने में आँखें गाड कर गुर्राया

"क्यो रे तुम लोगो को कितनी बार कहना पडेगा कि मूर्ति झाड-पोंछ कर साफ कर दो ?"

बजारा अपना बेलचा अँगीठी में चला रहा था और जैसे अपने आप ही से तर्क-वितर्क कर रहा था

"मुसीबत के लिए हरेक को तैयार रहना चाहिए यहाँ तो अब दिन–रात झगडा-टण्टा होने लगा है—।"

आँगन में कोई भारी कदमो से चलता हुआ आया और खिडकी के पास से गुज़र गया और बूझ-बुझक्कड याश्का ने ज़ोरदार लहजे में कहा

"येगोर है सुअरो को एक नजर देख कर आया होगा अब फाटक बन्द करने गया है ।"

सबसे पहले शातुनोव की हँसी रुकी। हथेली से मुंह पोछते हुए और किसी की ओर देखे बिना उसने कहा

"अबके भी याश्का ही ने हिम्मत की, लौण्डा ठीक कहता है। बेकार बेचारे को डरा रहे हो। वह तो तुम्हारे भले की बात करता है और तुम उसे निकाल बाहर करने पर तुले हुए हो।"

"अरे पर सावधान कर देने में तो कोई हर्ज नही है!" याश्का अपनी हँसी पर काबू पाने के बाद बोला। "हम कुत्ते तो है नहीं, क्यो है ना?"

और सब-के-सब बडी दिलचस्पी ले लेकर यह उपाय ढूंढने लगे कि मुझे येगोर के पजे से किस तरह बचाया जाए।

"किसी को मार डाले या अपाहज कर दे—उसके लिए सब समान है। फर्क ही क्या पडता है, कुछ भी नही।"

बचाव के और हमले के निरर्थक और मूर्खतापूर्ण मन्सूबे बनाने में याश्का सबसे बाजी ले गया। उधर बूढा कुज़िन एक कोने में आंखें गाड कर गुर्राया

"क्यों रे तुम लोगो को कितनी बार कहना पडेगा कि मूर्ति झाड-पोछ कर साफ कर दो?"

बजारा अपना बेलचा अगीठी में चला रहा था और जैसे अपने आप ही से तर्क-वितर्क कर रहा था

"मुसीबत के लिए हरेक को तैयार रहना चाहिए यहा तो अब दिन–रात झगडा-टण्टा होने लगा है—।"

आंगन में कोई भारी कदमो से चलता हुआ आया और खिडकी के पास से गुज़र गया और बूझ-बुझक्कड याश्का ने ज़ोरदार लहजे में कहा

"येगोर है सुअरो को एक नजर देख कर आया होगा अब फाटक बन्द करने गया है।"

कोई बुदबुदाया

"हाय ! अस्पताल मे ही किसी ने उसका काम तमाम न कर दिया ।"

फिर नीरवता और उदासी छा गई । एक मिनट बाद नानबाई ने फिर सुझाया

"सेम्योनोव को परेड करते देखना चाहते हो ?"

बरामदे में खडा मै दीवार की दरार में से झांक कर बाहर आँगन मे देख रहा था । आँगन के बीच में हमारा मालिक एक खाली बक्स पर बैठा था । उसकी टाँगे नंगी थी कुर्ते के दामन में कोई दो-तीन दर्जन पाव रोटियाँ थी । चार बडे-बडे नसली सुअर उसके घुटनों से अपनी थूथनियाँ रगड-रगड कर जोर-जोर से खरखरा रहे थे और वह उनके लाल जबडो मे पाव रोटिया ठूंसता जाता और सुअरो के पेट थपथपा-थपथपा कर बडी नर्म, धीमी और अनजानी आवाज मे बड-बडा रहा था ।

"हूँ हूँ, खाओगे ? पाव रोटी खाओगे ? लो, लो खाओ ।"

उसका भरा हुआ चेहरा, हल्की, स्वप्निल मुस्कान से खिला हुआ था । उसकी फुल्ली आंख में जान पड गई थी और वह गहरा लगाव प्रकट कर रही थी । कहना चाहिए कि उसके इर्द-गिर्द की हरेक चीज मे कुछ विलक्षण अजनबियत पैदा हो गई थी । उसकी पुश्त पर एक चौडा-चकला, चेचक मुँह दाग, मुछैल सफाचट नीली टोपी वाला कोई व्यक्ति खडा था जिसके बाये कान मे चादी की बाली पडी थी । सिर पर टोपी गद्दी की तरफ तिरछी किए उसने बटन जैसी गोल-गोल धुंधली आखो से सुअरो की ओर देखा जो उसके मालिक के साथ खेल रहे थे । उसके दोनो हाथ जेबो मे ठुंसे अन्दर-ही-अन्दर कुछ खा रहे थे ।

अब समय आ गया है इन्हे बेचने का, ' उसने नरम आवाज में

कहा। उसके उस चेहरे पर कोई शिकन तक नही पडी।

"वडा वक्त पडा है," मानिक ने तडख कर जवाव दिया। 'ऐमे जानवर फिर कव मिलेंगे—?"

एक मुअर ने उसकी पसलियो मे अपनी थूथनी रगडनी शुरू कर दी। सेम्योनोव सन्दूक पर वैठे–ही–वैठे झूम गया और अपना वेडौल शरीर फुदकाते हुए उसने इस प्रकार दाँत निकाले कि चेहरे की मोटी-मोटी शिकनो में उसकी वेजोड आखे गायव हो गई।

"रोगी-पोगी साधु!" उसने ठहाका मार कर चिघाडते हुए कहा। 'अंधेरे में रहते है वेचारे अंधेरे में! हाय हाय, देखो तो चू चू! ओहो, देखो तो! अरे मेरे नन्हे-मुन्ने साधु, मीधे मादे "

सुअर सब–के–सब उक्ता देने की हद तक समान थे। और मालूम होता था जैसे एक ही पशु सारे आँगन में दौडता फिर रहा हो। हास्यास्पद और भद्दी समानता, छोटे-छोटे उनके सिर, उनकी छोटी-छोटी टांगे और उनकी नगी-नगी तोदें जमीन से लगती हुई और वे अपनी वेकार छोटी-छोटी आँखो की सफेद पलको को जोर-जोर से झपकाकर उस आदमी से टकराते फिर रहे थे। और मैं खडा उनको यो देख रहा था जैसे कोई भयानक सपना देख रहा हूँ।

गुर्राते, हिनहिनाते और दांत कटकटाते ये सुअर अपनी ललचाती थूथनिया मानिक के घुटनो में ठूंस रहे थे। उसकी टागो और पसलियो मे रगड रहे थे। और वह खुद भी चिघाडे मार रहा था। एक हाथ से उनको धक्का देकर भगा देता और दूसरे से, जिसमे वह रोटी के टुकडे लिए हुए था, उनको सताता जाता। कभी तो रोटी वाला हाथ उनके एकदम समीप ले जाता और फिर एकदम हटा लेता। दनादना कहकहा उसके पूरे जिस्म को थलथल हिला देता। इस हाल मे खुद भी वह सुअरो जैसा मालूम होरहा था। फर्क अगर कुछ था तो सिर्फ यह कि वह उनसे भी अधिक डरावना घृणित, और विलक्षण था।

आहिस्ता-आहिस्ता अपने सिर को ऊपर उठाकर येगोर वडी देर तक आकाश को तकता रहा जो इतना ही धुंधला और सर्द थ। जितनी खुद उसकी आँखें—चमकती हुई वालियां उसके कन्धो पर थिरक रही थी ।

कुछ अस्वाभाविक ऊंची आवाज में उसने कहा, "अस्पताल मे उनने मुझे राजदराना तौर पर बताया था कि कयामत कभी आयेगी ही नही ।"

सेम्योनोव ने जो एक सुअर के कान पकडने की कोशिश कर रहा था पूछा

"अच्छा नही आयेगी ?"

"नही ।"

"शायद वह झूठी, मक्कार है ।"

"हाँ होगी ।"

मालिक उन चुलवुले, साफ और चिकने शरीर वाले सुअरो से खेलता रहा । लेकिन अब उसके हाथो की हरकत में सुस्ती पैदा हो गई थी । मालूम होता था कि वह थक गया है ।

"उसका वक्ष वडा सुन्दर है और नयन मद भरे ।" येगोर ने नर्स दिन याद करके ठण्डी सास भरते हुए कहा ।

"कौन, नर्स ?"

"और नही तो क्या ! कयामत तो वह कहती थी कभी आयेगी ही नही पर अगस्त मे सूर्य-ग्रहण पूरा हो जायगा । "

सेम्योनोव ने फिर उसी अविश्वास से पूछा—

'बिल्कुल पूरा ? सच बताना ।"

"हा हा, पूरा । लेकिन वह कहती है कि ज्यादा देर तक नही रहेगा । बस एक परछाई आयेगी और चली जायगी ।"

"परछाई कहा से आती है ?"

"मुझे क्या मालूम शायद भगवान के पास से।"

मालिक उठ खड़ा हुआ और कठोर व कर्कश स्वर में बोला.

"मूर्ख है वह। सूर्य के सामने कोई परछाई नहीं टिक सकती। उसकी किरणें उसे भी चीर कर निकल जायेगी। यह तो हुई एक बात। दूसरी यह कि लोग कहते हैं भगवान स्वयं जाज्वल्यमान है। तो फिर भला उसकी छाया कहाँ से आई? फिर आकाश में शून्य के सिवाय कुछ भी नहीं है। कभी तुमने ऐसी चीज की परछाई देखी है जो कुछ भी न हो? वह निरी बुद्धू है बिल्कुल बेवकूफ।"

"बेशक,बेशक। हर औरत की तरह।"

"यही तो बात है अच्छा तो इन बच्चों को सुअरखाने में बन्द कर दो।"

"मैं किसी लड़के को बुलाता हूँ।"

"अच्छा बुलाओ! लेकिन हाँ देखो वे उन्हें मारे नहीं। और अगर उन्होंने मारा तो मुझे बताना। मैं उनकी खबर लूंगा।"

"मुझे मालूम है।"

मालिक आँगन में से गुजरता हुआ चला गया और सुअर उसके पीछे-पीछे दौड़े जैसे सुअरनी के पीछे दौड़ते हैं।

दूसरे दिन सुबह सवेरे मालिक ने बरामदे की ओर से हमारे भटि-यारखाने का दरवाजा धक्का देकर खोला और चौखट के सहारे खड़ा होकर विचित्र मधुरता से कहा

"मि० बडबडिये, जरा जाओ तो आँगन में से आटे के बोरे लाकर बरामदे में तो रख दो।"

खुले हुए दरवाजे मे से सर्द हवा के सफेद बादल अन्दर घुस आये और उबालने वाले निकिता के गिर्द छा गए। उसने मुडकर मालिक का देखा और निवेदन किया

'जरा दरवाजा बन्द कर दीजिए वासिली सेम्योनोविच ! वडी तज आँधी चल रही है।"

'क्या ? आँधी ?" सेम्योनोव गुर्राया और अपनी छोटी-सी मुट्ठी से उसकी टाट पर ठोंग मार कर दरवाजा योंही खुला छोड चला गया। निकिता की आयु कोई तीस वर्ष की थी लेकिन देखने मे वह लडका ही मालूम होता था—बुजदिल—सा नाटे कद का आदमी जिसके पीले चेहरे पर बेरंग बालो के गुच्छे-से थे। बडी बडी-आखें जो हमेशा खुली रहती थी और कसक व वेदना तथा भय के कारण घबराई हुई सी नजर आती थी। विगत छ वर्षो से दिनचर्या यह थी कि सुबह ८ बजे से रात के ८ बजे तक वह उबलते हुए पानी के कढाव के सामने खडा होकर उसमें निरंतर हाथ डुबोता रहता था। सामने से तो दह-कती हुई आग के शोले उसका जिस्म झुलसाते रहते थे और पीछे से दिन में सैकडो बार दरवाजा खुलता और ठण्डी हवा के झोंके अन्दर उसकी पीठ सुन्न कर देते। गठिया की बीमारी के कारण उसकी उँग-लिया ऐंठ गई थीं, फेफडो पर सूजन आ गई थी और टांगो मे नीली-नीली नसो की गांठें उभर आई थी।

एक खाली बोरा पीठ पर सँभालकर मैं बाहर आगन में चला गया। ज्योंही मैं निकिता के पास आया उसने दात पीसते हुए बडबडा कर कहा

"सब तेरा कसूर है, गारत हो जाए तू।"

गदले पसीने की तरह आसू उसकी बडी-बडी आखों से बहने लगे

मैं निढाल हो बाहर आया और सोचने लगा

"मुझे यहाँ से जाना ही पडेगा ।"

एक जनाना समूर का कोट पहने मालिक आटे के बोरे के ढेर के पास खडा था—कोई डेढ सौ बोरे होंगे और उनके एक तिहाई भी बरा-मदे मे नही आ सकते थे। यही मैंने मालिक से भी कहा और उसने मुँह बना कर जवाब दिया

"अगर नही आये तो मैं तुम्ही से उन्हे फिर बाहर निकलवाऊगा। तुम काफी बलशाली हो. ।"

मैंने कधे पर से बोरा घसीट कर फेक दिया और सेम्योनोव से कह दिया कि मैं इस बकवास को बर्दाश्त नही कर सकता। मेरा हिसाब साफ कर दो ।

"चलो चलो, काम करो ।" उसने व्यग्य किया, "सर्दी का मौसम है कहा जाओगे ? भूखो मर जाओगे ।"

"मेरा तो तुम हिसाब साफ कर दो ।"

उसकी फूली आख सुर्ख अगारा हो गई और मजरी आँख की पुतली दुष्टता मे घूमने लगी। मुक्का तान कर और सिसकियाँ लेते हुए उसने कहा

घूसा खाना चाहते हो ?"

मारे गुस्से मे मेरे तनबदन म आग लग गई। उसके तने हुए हाथ पर मैंने हाथ मार कर गिरा दिया और उसका कान पकड कर चुपचाप मलना और खीचना शुरू कर दिया । इतने ही म उसका बाया हाथ मेरे सीने पर पहुच गया और उसने बौखलाई हुई और दबी–दबी आवाज म चीखना शुरू कर दिया।

'ठहरो, ठहरो ! क्या कर रहे हो ? तुम्हारा मालिक हू । छोडो भी कमबख्त ।"

फिर बारी–बारी अपने चोट खाये हुए दाहिने हाथ का बाये हाथ

से दवाते हुए अपने सुर्ख कान को हिलाते हुए उसने मुझे अपने लाल-लाल दीदे निकाल कर घ्रा और बडबडा कर कहने लगा

"अपने आका के साथ यह हरकत ? क्यो बे ! अब तू है कौन ? अरे मै मैं पुलिस को बुलाऊगा ! मै अभी

और अचानक अपने होठो को भीचते हुए जैसे कि उसे बडी तक-लीफ हो रही हो उसने लम्बी-सी दर्द भरी सीटी बजाई और अपनी दाहिनी आख को झपकाते हुए मुड गया ।

मेरा गुस्सा मुट्ठी भर सूखी घास की तरह भडक कर एकदम ठण्डा हो गया । धीरे-धीरे एक कोने की तरफ भारी कदमो से जाते हुए उसने बहुत ही भद्दी-सी आकृति बनाई । छोटे-से समूर के कोट म से निकलते हुए उसके मोटे-मोटे पुट्ठे चोट खाए हुए-से थिरक रहे थे ।

मै ठण्ड मे बिल्कुल अकड गया था और चूकि वापस भटियारखाने में जाने की इच्छा नही थी इसलिए बोरो को ढोकर बरामदे में ले जाकर अपने आपको गर्म करने का फैसला किया । जब मै पहला बोरा लेकर दौडता हुआ अन्दर गया तो शातुनोव नजर पडा । वह जमीन पे ऊकडू बैठा दीवार की दरार मे से झाक रहा था और देखने मे बिल्कुल उल्लू मालूम हो रहा था । उसके सन जैसे बाल दरख्त की छाल की एक लम्बी-सी पट्टी से बधे हुए थे जिसके दोनो सिरे उसकी पेशानी पर पडे भवो के साथ-साथ हिल रहे थे ।

मैने देख लिया है," उसने सन्तोष से कहा । दाना चबाते उसके कल्ले जोर-जोर से हरकत कर रहे थे ।

' अच्छा तो फिर क्या हुआ ?

उसकी छोटी-छोटी मगोलियन आख रहस्यमय ढग से फैल गई, उन से कुछ व्यग्रता भी प्रकट हो रही थी ।

' देखो !" उसने खडे होकर और करीब आकर कहा इसके बारे मे मै किसी से भी जिक्र नही करूँगा और न ही तुम करना ।"

'मेरा तो इरादा ही न था।"

"बिल्कुल ठीक। कुछ भी हो वह है तो हमारा मालिक। क्यों है ना?"

"हाँ तो फिर?"

'हमें किसी-न-किसी का तो हुक्म मानना ही होगा। वरना आपस में धींगा-मुश्ती शुरू न हो जायगी?"

वह अत्यंत गंभीरता और आहिस्तगी से बल्कि खुसर-पुसर के अन्दाज में बोल रहा था

'कुछ आदर-सम्मान भी होना चाहिए, समझे!"

मेरी समझ में नहीं आया कि उसका मतलब क्या है और मुझे गुस्सा आ गया।

'जहन्नम में जाओ तुम!"

शानुनोव ने मेरा हाथ पकड़ लिया और बड़े रहस्यमय ढंग से मंद स्वर में कहा

'येगोर से डरने की कोई बात नहीं। भयावने सपनों को रोकने का कोई मन्त्र जानता है तुम्हें? येगोर को रात के समय बड़े डरावने ख्वाब आते हैं। उसे मृत्यु से बड़ा डर लगता है। उसने बड़ा पाप किया है और उसकी आत्मा उसी के भय से दुखित रहती है। एक बार रात को संयोगवश मैं अस्तबल के पास से गुजरा तो देखता क्या हूँ कि वह वहाँ मौजूद है और घुटनों के बल बड़ा गिड़गिड़ा रहा है, 'हे परमपिता परमेश्वर मुझे अचानक मृत्यु से बचाना!' समझे तुम?"

'नहीं मैं नहीं समझा!'

इस तरह उसको अपने वश में करो!'

किस तरह?"

डर से। ताकत [illegible] हवा न [illegible] रहना। वह तुम्हारे पास [illegible] अधिक [illegible] है।

मुझे अनुभव हुआ कि यह व्यक्ति मेरी भलाई चाहता है। इसलिए मैंने उसे धन्यवाद दिया और हाथ मिलाने के लिए अपना हाथ बढाया। कुछ सकोच के बाद उसने भी अपना हाथ आगे किया । और जब मैंने उसकी गठीली हथेली गर्मजोशी से दबाई तो उसको शायद कुछ अफसोस हुआ और वह अपने होठ चबाते हुए आखे नीची करके कुछ बडबडाया जो मेरी समझ में न आया।

"क्या कहा था तुमने ?"

"जाने दो, अब कुछ नही कहता।" उसने झुझलाहट दर्शाते हुए कहा और भटियारखाने के अन्दर चला गया । मैंने बोरे ढोने शुरू कर दिये। मेरे मस्तिष्क पर कुछ मिनट पहले की घटना बादल की नाई छाई हुई थी।

मैंने रूसी जनता के बारे में पढा था—उसकी मैत्रीपूर्ण भावना और समाज प्रेम भलाई की ओर उसका झुकाव । लेकिन लोगो को मैं अपने व्यक्तिगत अनुभवो के आधार पर और भी ज्यादा निकट से जानता था क्योकि दस वर्ष की आयु से ही मुझे अपनी जीविका आप कमानी पडी थी । घर और स्कूल के प्रभाव से मैं बिल्कुल स्वतन्त्र हो चुका था ।

जो कुछ भी मैंने पढा था मेरे व्यक्तिगत अनुभव स्वय उनकी पुष्टि कर रहे थे। यह सच है कि लोग हर अच्छी चीज में कुछ आकर्षण अनुभव करते हैं, उसे सराहते हैं उसे प्राप्त करने की चेष्टा करते हैं और इस अनगढ, निराश जीवन को सुखमय और आशावान जीवन मे परिणत करने की प्रतीक्षा करते हैं कि अच्छी चीजे किसी तरह उनके पास आजाये।

लेकिन मैं बहुधा सोचा करता हूं कि अच्छी चीजों से [illegible] इस प्रकार प्रेम करते हैं जिस प्रकार बच्चे परियों की [illegible]। उनकी सुन्दरता और अप्राप्यता पर आश्चर्य [illegible] करते हैं। उनके [illegible]

करते हैं जिस तरह किसी त्योहार की । लेकिन अक्सर लोगों को उसकी शक्ति में विश्वास नहीं होता । और ऐसे तो बहुत ही कम होते हैं जो उसका संरक्षण और उसके विकास की देखभाल करते हों । उन का उदाहरण तो ऐसी बिनजुती धरती का-सा है जिस पर ढेरों घास उग आई हो और जहां अगर कहीं हवा के झोंके के साथ गेहूं का कोई दाना आजाय तो उसकी नर्म व नाजुक कोपलें पनपने ही नहीं पातीं बल्कि यों ही ठिठुर कर रह जाती हैं ।

शातुनोव से मुझे दिलचस्पी पैदा हो गई थी—यह व्यक्ति मुझे कुछ असाधारण-सा प्रतीत होता था ।

कोई एक सप्ताह तक मालिक भटियारखाने में आया ही नहीं और न ही उसने मुझे नौकरी से अलग किया । उधर मैंने भी कोई जोर नहीं दिया । मेरा कोई ठौर-ठिकाना था नहीं और फिर जिन्दगी यहां दिनों-दिन ज्यादा दिलचस्प होती जा रही थी ।

शातुनोव जानबूझ कर मुझसे कतराता था । मैं उससे घुलमिल कर बातें करने का मौका ढूंढता रहा, लेकिन सफल न हो सका । मेरे प्रश्नों का गोलमोल उत्तर ज्यादा से ज्यादा यह होता था वह नजरें नीची किये हुए और आनाकानी करते हुए देता ।

हां, काश कोई सही शब्द जानता ! लेकिन फिर भी प्रत्येक व्यक्ति अपने मस्तिष्क का आप मालिक होता है ।

उसका व्यक्तित्व कुछ विलक्षण, गहन अन्धकार में छिपा हुआ था—

सन्यासी का-सा व्यक्तित्व, स्वभावतया वह अल्पभाषी था । बाजारी भाषा का कभी प्रयोग न करता था । परन्तु आराधना वह न तो सुबह उठकर करता था और न सोते समय । हां जब खाना खाने बैठता तो अपनी गहरी छाती पर क्रास का चिन्ह जरूर बना लेता था । अवकाश का उसे यदि एक भी क्षण मिलता तो वह अन्धियारे से अन्धियारा कोना देखकर वहां जा बैठता । और या तो अपने फटे कपडे सीने लग जाता या फिर अंधेरे में बैठा जुएँ मारा करता । और हमेशा वह बहुत ही नीचे सुरों में करीब-करीब फटी हुई आवाज में यह गीत गुनगुनाता

हाय कैसा दुखों ने घेरा है ?
आज क्यों हर तरफ अन्धेरा है ?

कोई व्यंग्य से उससे पूछता

'सिर्फ आज ? कल क्या तुम बहुत खुश थे ?'

जवाब दिये बिना और नजरें झुकाए ही वह गुनगुनाता रहता

घर की खिंची शराब है मैं चाहता नहीं

'खैर तुम्हारे पास तो है ही नहीं । मेरा मतलब है घर की खिंची हुई शराब ।"

उसने अपनी भवें तक न हिलाईं मानो वह बहरा हो । और दुखित लय में गाता रहा

अपनी महबूब से मिल् जाकर
पांव इन्कार कर रहे हैं मगर
पांव चलने की खो चुके ताकत
और दिल में भी कुछ नहीं हसरत

बजारे याश्का को उदासीपूर्ण गीत नहीं भाते थे ।

ओ बे भेडिये !" वह नाराज होकर चीखा और उसकी बत्तीसी दिखाई देने लगी । वह फिर हुंकारने लगा ।

अन्धकारमय कोने से मातमी गीत के शब्द धीरे-धीरे सुनाई देने लगे

दिल पे रजोअलम का साया है
हाय गम ने मुझे सताया है
गम से बोझिल है इस कदर छाती
रात को नींद तक नही आती

"बालक।" नानबाई ने हुक्म दिया। "मुह बन्द करो। यह तो हम सबको कुएं में घोट कर मार देगा! आओ हम कोई और गीत गाये।"

सभी ने नृत्य का एक अश्लील गीत आरम्भ कर दिया। शातुनोव गहरी और भर्राई हुई आवाज निकाल रहा था और उसके अंदाज में कुछ उदासीनता थी। गीत के असाधारणतया अश्लील शब्दो के मुकाबले मे यह उदासीनता श्लीलता की एक निराली अदा मालूम होती थी। कभी-कभी गीत उसकी आवाज मे दब कर लुप्त हो जाता था।

बजाहिर नानबाई और आर्तेम मुझ पर कुछ मेहरबान मालूम होते थे—यह एक नई किस्म का रवैया है जिसे शब्दो में व्यक्त करना असम्भव है। लेकिन उसको मैं महसूस जरूर कर सकता हूं। रहा याश्का 'झुनझुना' तो मालिक से मेरी झड़प के बाद पहली ही रात को वह घास से भरा हुआ एक बोरा उस कोने में घसीट लाया जहां मैं सोया करता था और एलान कर दिया

"हां तो अब मैं तुम्हारे पास सोया करूंगा।"

"अच्छा।"

"मैं कहता हूं हम तुम दोस्त बन जाये।"

"अच्छा बन जाते हैं।"

वह फौरन फुदकता हुआ मेरे पास आ पहुंचा और बहुत ही राज-दाराना अन्दाज में अपनी नाटी जबान तालू में चलाते हुए उसने मुझे अपना राजदार बनाया।

"इतने मैंने एक बड़ा सा चीदड़ न वाले तरन देखा था। सच कहता हूं मैंने देखा था। एक दफा रात को मेरी आंख खुल गई। चांदनी रात

पी मैंने देखा कि मेरे पास ही एक चूहा नानखताई कतर-कतर कर खा रहा है । मैं चुपचाप देखता हुआ उसके पास आया । उसी वक्त एक चींटा वहाँ आ गया । फिर दो और आये और चूहे ने नानखताई खाना छोड दिया और अपनी भूरी मूछें हिलाने लगा । हमारे गूंगे निनान्दर की तरह वे एक दूसरे से बातें कर रहे थे। ना जाने क्या बातें कर रहे होंगे । कुछ बडे मजे की बात होगी, हैना ! सो गये क्या ?"

'नही तो । फिर क्या हुआ ?"

"ऐसा मालूम होता था जैसे वह चींटों से पूछ रहा हो—तुम कहा से आए हो ? और उन्होंने कहा— गाँव से ! तुम्हें मालूम है जब गाव में अकाल पडता है या जब आग लग जाती है तो गाव से ये शहर में जमा हो जाते हैं उन्हें मालूम रहता है कि आग कब लगेगी। बुड्ढा बाबा कहता है उनसे, भाग जाओ तुम सब ।' और वे उ[illegible] तर भाग जाते हैं । तुमने कभी देखा है ?"

"अभी तक तो नही ।"

मैंने देखा है ।"

और यह कहते ही उसने अचानक बडे जोर से खर्राटा लिया [illegible] उसका दम घुट रहा हो और फिर सुबह तक 'कुन-कुने' की [illegible] सुनाई दी ।

अब मालिक ने अपना कायदा बना लिया था कि [illegible] रोजाना ही हमारे भटियारखाने में आये । और वह भी [illegible] समय आता था कि जबकि मैं कोई किस्सा कह रहा हूँ, अपने साथियों को किताब पढकर सुना रहा हूँ । दबे पाव अंदर आकर वह मेरे बाईं तरफ खिडकी के पास लकडी के एक खाली डिब्बे पर बैठ जाता और अगर मैं उसे देख कर रुक जाता तो वह बडे पैने [illegible] स्वर में कहता

बडबडाए जाओ प्रोफेसर साहब । चलो [illegible]

डरो नहीं।"

और वह बड़ी देर तक बैठा रहता। खामोशी में गाल फुला-फुला कर अपनी चंदिया के छिदरे बालों के नीचे अपने छोटे-छोटे कान हिलाता रहता। बाल उसके इतने बारीक कटे हुए थे कि खोपड़ी पर चिपके हुए मुश्किल से नजर आते थे। कभी-कभी वह फटी हुई आवाज में पूछता

"क्या, क्या?"

और एक दिन जब मैं भूमण्डल के बारे में बता रहा था तो वह बारीक और तेज आवाज में चीखा

"ठहरो! और खुदा कहाँ से आ गया?"

"वह यहीं है।"

"झूठ! कहाँ है?"

"अपनी बाइबिल भी नहीं जानते?"

"अच्छा अब मुझे बनाओ नहीं—कहाँ है वह?"

"और पृथ्वी का कोई आकार नहीं था। गहरी कंदराओं में चार अन्धकार छाया हुआ था। और समुद्रों की सतह पर परमेश्वर की आत्मा उड़ रही थी।"

"समुद्र!" उसने खिलौना की नाईं चीख कर कहा, "और तुम तो यह सिद्ध करने की चेष्टा कर रहे थे कि पृथ्वी आग का गोला थी। ठहरो, मैं पादरी साहब से पूछूँगा कि किताबों में क्या आया है।"

वह उठ खड़ा हुआ और गमगीन लहजे में यह कहता चला गया

"तुम बहुत कुछ जानते हो मास्टर जी!—क्या ख्याल है? तुम्हारे लिए यह अच्छा है क्या?"

मास्टर ने अपना सिर हिलाते हुए चिंतित स्वर में कहा

"तुम्हें थामने के लिए वह जरूर कोई चाल चलेगा!"

इसके दो रोज बाद मुन्शी मास्टर दौड़ता हुआ हमारे बावर्ची खाने में आया और हुक्म देते हुए चीख कर बोला।

' मालिक बुला रहा है तुम्हें !'

'झुनझुने' ने चपटी नाक वाला अपना दागदार मुंह उठाकर गम्भीरता से सलाह दी

"दुसेरी अपने साथ लेते जाना।"

मैं उठकर बाहर चला गया। बाकी सब हंसी रोकने की असफल चेष्टा कर रहे थे। तहखाने का कमरा सामान से खचाखच भरा हुआ था। चाय के समावार के करीब मेज के सामने हमारे मालिक के अलावा दो और मजदूर दोनोव और कुवशीनोव बैठे थे। मैं दरवाजे में आकर रुक गया। मेरे मालिक ने बडी ही नम्र आवाज में जिसमें कुछ दुर्भावना निहित थी, हुक्म दिया

'अच्छा प्रोफेसर बडबडिए ! अब जरा मेहरबानी करके सूर्य और तारों का किस्सा सुना दीजिए कि ये सब कहां से और कैसे आए ?'

उसका चेहरा तमतमाया हुआ था। फूली आंखें सिकुडी हुई थीं और मेंजरी में एक नटखट चमक थी। दो और मुस्काते हुए [illegible] थे—एक सुर्ख अंगारे जैसा खरखरी वालों के चौखटे में [illegible] हुआ और दूसरा मटियाला फफूंद खाया हुआ-सा नक्शा। समावार धीरे-धीरे सनसना रहा था। और ये अद्भुत लगने वाले सिर भाप के छल्लों में छिपे जा रहे थे। दीवार के सहारे लगे हुए पलंग पर बैठी हुई [illegible] सफेद चिमगादड मालूम होती थी। मसले हुए मोने के कपडों में से [illegible] के बाजू निकले हुए थे। निचला होंठ लटका हुआ था और वह [illegible] कर मरीजों की तरह सांस रही थी। कोने में पवित्र मूर्ति के पास [illegible] हुए दिए की मंद लौ भडक रही थी मानो सर्दी के मारे कांप रही हो। खिडकियों के दरम्यान दीवार पर एक तस्वीर लटक रही थी जिसमें [illegible] स्त्री कमर तक नग्न अपनी गोद में एक बिल्ली लिये बैठी थी। [illegible] उसी तरह उल्लेखनीय रूप से मोटी थी। कमरे में वोद्का अचार [illegible] भुनी हुई मछली की मिली-जुली [illegible] फैली हुई थी। [illegible]

ी परछाइयां खिडकी मे से यो दिखाई देती जैसे कोई बडा-
न कुछ काट रहा हो ।

मैं आगे बढा और मेरा आका मेज पर से दस्ती काटा उठाकर
खडा हो गया । और उनको मेज के किनारे पर बजाते हुए मुझसे
कहा

नहीं तुम यहीं पड रहो । पहले हमे कहानी सुनाओ और फिर
मैं तुम्हारी आवभगत करूंगा ।'

मैंने सोचा कि बाद मे मैं भी उसकी खातिर करूंगा और यह निश्चय
करके मैंने बातचीत शुरू कर दी ।

और मेरे मालिक ने अपने मुँह की चोच बनाकर आहिस्ता-आस्हिता सीटी बजानी शुरू कर दी थी और उसकी मॅजरी आख मेरे चेहरे पर तेजी के साथ दौड रही थी और एक अद्‌भुद ढग से मेरा परीक्षण कर रही थी। मैंने दोनोव को भर्राई हुई थकावट भरी आवाज मे कहते सुना

'कमबख्त बडा ही बातूनी है ।"

और कुवशीनोव ने झुँझलाकर कहा

'मुझसे पूछो तो यह शख्स हे बडा चालाक ।"

लेकिन इसके बावजूद मै बिल्कुल भी नही घबराया । मै उनको अपनी बातें सुनने पर मजबूर करना चाहता था । और ऐसा मालूम होता था कि मेरी बातचीत का जादू उन पर चढता जा रहा था।

अचानक मेरे मालिक ने मूर्ति की नाई बैठे-बैठे आहिस्ता से अन-नासिक आवाज में कहा

"अच्छा, बस काफी है बडबडिए ! बहुत-बहुत शुक्रिया । बडा मजा आया ! तुमने तमाम सितारो को अपनी-अपनी जगह जमा दिया है। अब जाओ और जाकर मेरे नन्हे-मुन्ने सुअरो को खाना खिलाओ।'

अब जब मैं वह जमाना याद करता हूँ तो बडा आनन्द आता है।' लेकिन उस समय मजे का तो खैर सवाल ही क्या उल्टा [illegible] आया कि अब याद भी नहीं आता मैंने अपने आपको सँभाला [illegible]

इतना याद है कि जब मै बेतहाशा भागता हुआ [illegible] मे आया तो शातुनोव और आर्तेम ने मुझे सभाला [illegible] में ले गये और पानी का एक ग्लास पिला कर मेरे होश [illegible] किये। याश्का झुनझुने' न बडे विश्वास से कहा

'क्यो मै न कहता था ? हाय, तुमने मेरी बात न मानी न। '

और बजारे ने तुरंत, बडबडाते हुए मेरी पीठ थपथपाई।

मै भला क्या करूँगा ? मेरा इसमे क्या बस चले [illegible] भूत सवार होता है तो वह किसी की नहीं सुनता चाहे [illegible]

की परछाइयाँ खिडकी मे से यो दिखाई देती जैसे कोई बडी-बडी कैंचियो से कुछ काट रहा हो ।

मैं आगे बढा और मेरा आका मेज पर से दस्ती काटा उठाकर खडा हो गया । और उसको मेज के किनारे पर बजाते हुए मुझसे कहा

"नही, तुम वहीं खडे रहो । पहले हमे कहानी सुनाओ और फिर मैं तुम्हारी आवभगत करूंगा ।"

मैंने सोचा कि बाद मे मैं भी उसकी खातिर करूंगा और यह निश्चय करके मैंने बातचीत शुरू कर दी ।

पृथ्वी पर जो जीवन था उसमें कोई आनन्द नहीं था, सुख नहीं था और यही कारण था कि मुझे आकाश इतना प्यारा लगता था । अक्सर गर्मियो के मौसम मे रात के समय मैं खेतो मे निकल जाता । धरती पर चित लेट कर आस्मान की ओर देखता तो मुझे ऐसा मालूम होता कि हर एक सितारा अपनी सुनहरी किरण मेरे पास भेज रहा है, मेरे दिल में उतार रहा है । करोडो की सख्या मे वे एक ही व्यवस्था में लगे हुए थे । और मैं भी जमीन के साथ उनके दरम्यान शून्य मे तैर रहा था जैसे किसी बहुत बडी वीणा के तारो ने रात के समय जमीन की जिन्दगी का खामोश राग मुझे जीवन के अनन्त सुख का गीत सुनाने लगता । ब्रह्माड से आध्यात्मिक मिलन की ये भरपूर साअते दिन भर के चिन्ताजनक प्रभावो की कटुता हृदय पर से इस प्रकार साफ कर देती जैसे किसी ने जादू कर दिया हो ।

और यहाँ इस गन्दे छोटे से कमरे मे तीन आकाओ और एक शराबी बुढिया खूसट के सामने जो मुझे मदहोश, बेरग निगाहो से घूर रही थी, मैंने अपने आस-पास की हर घृणा करने वाली चीज की उपस्थिति भुला कर अपने विचारो की रौ मे बहना शुरू कर दिया । मैंने देखा कि दो कुरूप चेहरे अपमानजनक अन्दाज मे दात निकाल रहे थे

और मेरे मालिक ने अपने मुँह की चोंच बनाकर आहिस्ता-आस्हिता सीटी बजानी शुरू कर दी थी और उसकी मंजरी आंख मेरे चेहरे पर तेजी के साथ दौड रही थी और एक अद्भुद ढग से मेरा परीक्षण कर रही थी। मैंने दोनोव को भर्राई हुई थकावट भरी आवाज में कहते सुना

'कमबख्त बडा ही बातूनी है ।"

और कुवशीनोव ने झुँझलाकर कहा

'मुझसे पूछो तो यह शख्स है बडा चालाक ।"

लेकिन इनके बावजूद मैं बिल्कुल भी नही घबराया । मैं उनको अपनी बाते सुनने पर मजबूर करना चाहता था । और ऐसा मालूम होता था कि मेरी बातचीत का जादू उन पर चढता जा रहा था।

अचानक मेरे मालिक ने मूर्ति की नाई बैठे-बैठे आहिस्ता से अनुनासिक आवाज मे कहा

'अच्छा, बस काफी ह बडबडिए ! बहुत-बहुत शुक्रिया । बडा मजा आया ! तुमने तमाम सितारो को अपनी-अपनी जगह जमा दिया है। अब जाओ और जाकर मेरे नन्हे-मुन्ने सुअरो को खाना खिलाओ ।'

अब जब मैं वह जमाना याद करता हूँ तो बडा आनन्द आता है।' लेकिन उस समय मजे का तो खैर सवाल ही क्या उल्टा इतना-गुस्सा आया कि अब याद भी नहीं आता मैंने अपने आपको सँभाला क्योकर !

इतना याद ह कि जब मैं बेतहाशा भागता हुआ भटियारखाने मे आया तो शातुनोव और आर्तेम ने मुझे सँभाला, सहारा देकर दालान में ले गये और पानी का एक ग्लास पिला कर मेरे होश व हवास ठीक किये । याश्का 'झुनझुने' ने बडे विश्वास से कहा

"क्यो मैं न कहता था ? हाय, तुमने मेरी बात न मानी ना !'

और बजारे ने गुर्राते, बडबडाते हुए मेरी पीठ थपथपाई।

"मैं भला क्या करूँगा ? मेरा इसमें क्या बस चले जब उस पर भूत सवार होता है तो वह किसी की नही सुनता चाहे लाट पादरी ही

क्यों न आजाय ।"

सुअरों को खिलाना बड़ा ही नीच काम और अत्यन्त कठोर दण्ड समझा जाता था। और जब बाल्टियों भर के उनका खाना आता तो वे लाने वाले पर इस बुरी तरह झपटते कि उसका सम्भलना मुश्किल हो जाता, अपनी मोटी-मोटी थूथनियाँ उसकी टाँगों में दे देते और अगर कोई फिसलकर कीचड़ में लथपथ न हो जाता तो वह बड़ा ही भाग्यशाली होता था।

सुअरों के अहाते में दाखिल होते ही फौरन दीवार का सहारा ढूँढना पड़ता था। सुअरों को लातें मार-मार के भगा कर बर्तन में उनका खाना उलट कर फौरन ही वहाँ से भाग आना पड़ता था क्योंकि जब उन सुअरों को लातें पड़ती तो गुस्से में आकर वे काटने दौड़ते थे। उस समय और भी बुरा मालूम हुआ जब बेगार ने भटियारखाने का दरवाजा खोलकर भयानक आवाज में एलान किया

"ऐ ओ कात्सापो* । चल सुअरों को अन्दर ला।"

इसका अर्थ यह था कि बेकाबू जानवर आँगन में छुपे हुए थे और डरबे में जाना नहीं चाहते थे। ऐसी सूरत में पाँच-छः आदमी आँगन में दौड़ जाते। इस तरह छीन-छान, गाली गलौच और भाग-दौड़ शुरू हो जाती। और मालिक इस तूफानबदतमीजी से बड़ा आनन्द लेता। पहले-पहल तो ये लोग इस दीवानेपन में खुद भी मजा लेते क्योंकि इस तरह किसी हद तक उनकी काम की समानता का जादू टूटता था। लेकिन जल्द ही वे थक कर चूर हो जाते। और उनका दम फूल जाता। जिद्दी सुअर आँगन में इधर-उधर लुढकते-फिरते और पीछा करने वाले आदमियों को धक्के देकर गिरा देते और मालिक खड़ा तमाशा देखता रहता। इस भागम-दौड़ का नशा उस पर भी छा जाता और वह अपनी जगह ही खड़े-खड़े उछलता, कूदता, सीटियाँ बजाता और नारे बुलन्द करता।

---

* प्राचीन काल में रूसियों के उपहास के लिए यूक्रेनी उन्हें इसी अपमानजनक विशेषण से पुकारते थे——अनु०

"शावाश छोडना नही ! खाल खेच लेना इनकी ।"

जब कोई आदमी उलझ कर जमीन पर गिर पडता तो मालिक बडा ही खुश होता और फिर जोर-जोर से चीख कर अपनी मोटी-मोटी औरतो जैसी जांघो को पीटता और मारे हसी के लोट-पोट हो जाता ।

गुलावी-गुलावी थूथनियाँ पूरे आगन को चीरती हुई फिर रही होती और उनके पीछे दौडते-दहाडते हुए चद मरियल सूखे इन्सान जिनके जिस्म आटे मे लिथडे हुए होते, वदन पर गदे चिथडे और नगे पैरो मे फटे जूते—ये लोग दौडते और गिरते और सुअर की पिछली दोनो टाँगे पकडे पूरे आगन में घसिटते फिरते । यह दृश्य भी वास्तव में बडा ही विलक्षण और हास्यास्पद होता था ।

एक दिन एक सुअर सहन में से भाग कर सडक पर जा निकला और हम छ लडके दो घण्टे तक उसका पीछा करते बाजारो मे दौडते फिरे यहाँ तक कि एक राह पर तातारी ने सुअर की अगली दोनो टागें डण्डा मार कर जख्मी कर दी और उसके बाद हम सुअर को चटाई पर रख कर घर वापस ले आये । और हमारे पडोसियो को यह तमाशा देख कर बडा मजा आया । तातारी देख कर अपने सर हिलाते और घृणा से थूकते लेकिन रूसियो ने एक छोटा-सा जुलूस बना लिया और हमारे साथ-साथ चलने लगे । एक सॅवलाए हुए तेज तर्रार विद्यार्थी ने अपनी टोपी उतार कर मचलते हुए जानवर की तरफ इशारा किया और सहानुभूति भरे स्वर में आर्तेम से पूछा

'कौन है, मा या वहन ?"

"मालिक !" थके-मादे और झुझलाए हुए आर्तेम ने झिडक कर उत्तर दिया ।

हमें सुअरा से नफरत थी । ये हमसे अच्छी तरह रहते थे और सिवाय मालिक के सबके लिए कष्टकर और अपमानजनक थे । फिर हमें उनकी सेहत और तन्दुरुस्ती की खबरगीरी करनी पडती थी ना

बड़ी ही कष्टकर थी।

जब भटियारखानेवालों को मालूम हुआ कि मुझे एक हफ्ते तक सुअरों की देखभाल करनी होगी तो कुछ लोगों ने मुझसे इस खास रूसी उत्साह से सहानुभूति प्रकट की जो वैसे बहुत असह्य होता है और दिल पर गोंद की तरह चिपकता है। और उसकी सारी शक्ति छीन लेता है। अक्सर लोगों ने उदासीनतापूर्ण चुप साध ली लेकिन कुजिन ने उपदेश देते हुए भुनभुनाते हुए कहा

"कोई परवाह नहीं! मालिक हुक्म देता है अब वह हुक्म बजा लेना तुम्हारा काम है! आखिर हम किसकी रोटी खाते है ?"

आर्तेम चीख कर बोला

"ओ बुड्ढे खूसट! काणे चुगलखोर ।"

"अच्छा, और नहीं तो क्या ?" बूढे ने कहा ।

'आज, आज भी जाकर कह दे। कह देना जाकर मालिक से ।"

कुजिन ने बात काटते हुए बड़े सन्तोष से उत्तर दिया

"सो तो कहूँगा ही! मेरे यार मैं तो सब कुछ ही कह दूंगा। मैं तो जीता ही सच बोल कर हूँ ।"

बजारे ने एक मोटी-सी गाली दी और फिर हमेशा के विपरीत मुँह फुलाकर खामोश बैठ गया।

रात के इस सवेदनाशील क्षण मे जबकि मैं अपने कोने मे लेटा भय व आतंक के कारण पत्थर बना थके-हारे आदमियो के जोर-जोर के खर्राटे सुन रहा था और पड़े-पड़े अपने दिमाग मे जिन्दगी, इन्सान, सच्चाई और आत्मा जैसे गूगे और समझ मे न आने वाले शब्द बार-बार व्यवस्थित ढग से जमा रहा था तो नानबाई चुपके-चुपके रेंगता हुआ मेरे पास आया और करीब ही लेट गया ।

"सो तो नहीं रहे ?"

"नहीं !"

"बड़ी मुसीबतें आ रही हैं भाई ?

उसने अपने लिए एक सिगरेट बनाया और सुलगाया। छोटी-सी सुलगी में उसकी दाढ़ी के रेशमी तार और उसकी नाक की चोंच रोशनी के हाले में आ गई। जली हुई राख फूंक मार कर उड़ाते हुए उसने मेरे कान में कहा

'देखो, मुजरा को जहर दे दो। बड़ी आसान बात है। बस यह करना कि गर्म पानी में थोड़ा-सा नमक मिलाकर उन्हें दे देना। जान-वरों के हलक में सूजन आजाएगी और दम घुट कर मर जायेंगे।"

'लेकिन इससे फायदा क्या ?"

पहले तो यह कि हम सबकी मुश्किलें आसान हो जायेंगी और मालिक को एक नुकसान पहुंच जायेगा। मैं तुम को सलाह दूंगा कि तुम यहां से चले जाओ। मैं साश्का से कहकर तुम्हारा पहिचानपत्रक आका के पास से चोरी करा दूंगा—भगवान ने चाहा तो जरूर ! क्यों क्या कहते हो ?"

"नहीं मैं नहीं जाऊँगा !"

'तुम्हारी मर्जी ! बहरहाल तुम यहाँ ज्यादा टिक नहीं सकते। तुम्हारी कमर वह जल्दी ही तोड़ देगा।" अपने दोनों घुटने सिकोड़ कर सीने से लगा कर और नींद की सी हालत में झूमते हुए उसने बहुत धीरे से कहा

'मैं तो तुम्हारी भलाई चाहता हूँ, भगवान की कसम दिल से चाहता हूं। सचमुच तुम चले जाओ। जब से तुम यहां आये हो हमारी हालत बदतर हो गई है। मालूम होता है तुम उसे छेड़ते हो और वह बरसता है हम सब पर। समझ लो सब लोग तुमसे आजिज़ आ गये हैं। बहुत मुमकिन है कि वे तुम्हारे साथ बुरी तरह पेश आयें।"

"और तुम ?'

"मैं ?"

"क्या तुम भी आजिज़ आ गये हो मुझसे ?'

जवाब देने से पहले वह अपनी सिगरेट की पीली चमक को खामोशी के साथ घूरता रहा। फिर बेदिली से बोला–

"मुझसे अगर पूछते हो तो सुनो—मटर के पौधे दलदल में नहीं लगाये जाते।"

"लेकिन जो कुछ मैं कहता हूं क्या वह सच नहीं ?"

"सच तो है, ठीक है लेकिन इससे फायदा क्या ? एक चना तो भाड नही फोड सकता। तुम कहो या न कहो इसमे फर्क ही क्या पडता है ? तुम दूसरो पर हद से ज्यादा एतबार कर लेते हो। भैया ! खबर-दार ! लोगो पर एतबार करना खतरनाक होता ह ।"

"तुम पर भी ?"

'हाँ हाँ मुझ पर भी ! मैं कौन हू ? क्या मुझ पर भरोसा किया जा सकता है ? आज मैं कुछ हूँ, कल कुछ और ! और बाकी सब भी ।"

मौसम सर्द था और खमीरी आटे की तेज बू नथुनो को चीरती हुइ घुस रही थी। चारो तरफ लोग मिट्टी के ढेर की तरह पडे जोर-जोर से साँस ले रहे थे। एक आदमी सोते-सोते बडबडा रहा था

"नताशा नता हा ।"

कोई कराह रहा था और बुरी तरह सिसकिया भर रहा था। शायद वह ख्वाब देख रहा होगा कि कोई उसे मार रहा ह। तीन अँधियारी खिडकियाँ गदी दीवार में से रात को घ्र रही थी—गहरी सुरगो के मोखो की तरह। खिडकियो के छज्जो से पानी की बूंदे टपक रही थी। बेकरी से तमाचे मारने और थपथप की धीमी आवाज आ रही थी। नानबाई का सहायक गगा और बहरा निकादर आटा गूंध रहा था।

ग्जार ने सोच-विचार करते हुए बहुत नर्मी और आहिस्तगी से कहा।

'तुम्हे चाहिये की देहात मे चले जाओ और स्कूल मास्टर बन जाओ। तुम्हारे लिए सबसे ज्यादा मनासिब काम यही है। विश्वास करो बडी मजेदार जिंदगी होती है। और बिल्कुल सीधी-सादी! निश्चित और आत्मा को सुखी रखने वाली। यदि मैं शिक्षित होता तो शुरू ही से स्कूल मास्टर बन जाता। मुझे छोटे-छोटे बच्चो पर बडा ही प्यार आता है और औरतो पर भी। ये औरते तो मेरे दुर्भाग्य का कारण हैं। ज्योही कोई मामूली-सी लडकी मेरी नजर पडी और बस मैं गया काम से। मुझे ऐसा मालूम होता है जैसे कि वह मुझे घसीटे लिए जा रही हो। अगर मेरी खसलत ऐसी न होती और अगर मुझे खेती पसन्द आ जाती तो शायद मैंने किसी अच्छी औरत से शादी करने का फैसला कर लिया होता हम मैं और वह मिलकर बच्चो का लालन-पालन करते—कम से कम एक दजन तो होते साले। और यहाँ—एक अच्छी सूरत वाली औरत है और दूसरी भी इतनी ही हसीन और सब-की-सब सहज ही प्राप्य है और इसी तरह लश्टम-पश्टम गुजर होती रहती है। भगवान जाने क्यो? बिल्कुल ऐसी बात हुई जैसे कोई जगली बेर तोड कर इकट्ठे किये जाता हो। लालच इतना हो जाता है कि हालाकि देख रहे है कि टोकरी भर चुकी है लेकिन नही जी यही चाहता है कि अभी दो चार और तोड लो।"

उसने अंगडाई लेते हुए दोनो हाथ उसी तरह फैला दिये जैसे किसी से बगलगीर होने वाला हो। लेकिन फिर अचानक गभीर और दो टूक फैसला करने के स्वर मे बोला-

"अच्छा तो फिर सुअरो के बारे में क्या ख्याल है?"

"नही, मैं ऐसा नही करूँगा।"

"बडे अफसोस की बात है। तुम्हारा क्या जाता है?"

याश्का की तो समझो गर्दन मोड़ कर रख देगा ।

"याश्का से इसका क्या सम्बन्ध ?"

"लेकिन हुआ तो यही है ।" ग्जारे ने आंख मारते हुए कहा । 'हमारे यहाँ हमेशा यही होता है कि करें बड़े और भुगतें छोटे ।"

यह कहकर उसने फौरन ही मुझे घूरा । और चुभती हुई निगाहों से देखता हुआ और यह बड़बड़ाता हुआ वह दालान में चला गया

"जाओ, शिकायत कर दो ।"

मैं आका के पास गया । वह अभी अभी सोकर उठा था । उसका चेहरा मुर्झाया हुआ और मटियाला-सा था । उसके स्याह बाल असमतल खोपड़ी के गूमड़ों पर चिपके हुए थे । टाँगें चीरे वह मेज के सामने बैठा था । उसकी लम्बी गुलाबी कमीज घुटनों तक खिंची हुई थी और कमीज के दामन में लिपटी-लिपटाई एक भूरी बिल्ली बैठी थी ।

मालकिन चाय के लिए मेज सजा रही थी और जब वह कमरे में इधर से उधर जाती तो ऐसा मालूम होता था कि जैसे कोई छिपे हुए हाथ चिथड़ों की किसी पोटली को घसीट रहे हों ।

"क्या बात है ?" उसने कुछ मुस्कराते हुए पूछा ।

"सुअर बीमार हो गये हैं ।"

उसने बिल्ली को उठाकर मेरे कदमों में फेंक दिया और मुट्ठियाँ भींच कर बैल की तरह मुझ पर झपटा । उसकी दाहिनी आँख से शोले से निकल रहे थे और बायी आँख सुर्ख होती जा रही थी, उसमें आँसू डबडबा आये थे ।

"क्या,क्या ?" उसने हाँपते हुए कहा ।

"जरा जल्दी से डाक्टर को बुला लाओ ।"

मेरे करीब आते हुए उसने मसखरेपन से अपने कानों पर हाथ फेरे जो यकायक सूजे हुए मालूम हो रहे थे और नीले पड़ गये थे । उसने दुःख भरे स्वर में कुछ अजीब ढंग से गुर्राते हुए कहा

"वदमाश कही के ! मुझे मालूम है क्या मामला है ?"

मालकिन भी सरकती हुई करीब आगई और मैंने उसकी कपकँपाती हुई भर्राई हुई आवाज पहली बार सुनी।

"पुलिस को वुलाओ ! वासिया, जल्दी पुलिस को वुलाओ।"

उसके मुर्झाए हुए चीथडो जैसे गाल लरज रहे थे। मारे डर के उनका वडा-सा मुंह खुला-का-खुला रह गया था और असमान स्याह दांत दिखाई देने लगे थे। आका ने उसे वडी वेदर्दी से एक तरफ ढकेल दिया। दीवार पर लटके हुए कुछ कपडे घसीटे और उनकी पोटली वगल में दवाकर दरवाजे की तरफ लपका।

लेकिन वाहर आंगन में पहुंचकर सुअरो के डरबे में झांक कर और जानवरो की उखडी-उखडी सांसें सुन कर उसने सतोष के साथ कहा

"तीन आदमियो को वाहर वुला लाओ।"

और जव शातुनोव, आर्तेम और भूतपूर्व सैनिक भटियारखाने से वाहर आ गये तो उसने हमारी तरफ देखे वगैर ही तडखकर कहा

वाहर निकाल लाओ इन्हे।"

हम चार गदी लाशो को उठा कर लाये और उन्हे आँगन में डाल दिया। आस्मान पर हल्की-सी रोशनी फैल गई थी। जमीन पर रखी हुई लालटैन आहिस्ता-आहिस्ता गिरते हुए वर्फ के गालो पर और सुअरो के भारी सिरो पर किरणे डाल रही थी। सुअरो में से एक का दीदा आख में से निकल पडा था जैसे कि कांटे में फसी हुई मछली का दीदा।

अपने कन्धो पर लोमडी के समूर का कोट डाले और आखिरी सांसें लेते हुए जानवरो पर सिर झुकाए आका खामोश और अचल खडा था।

'जाओ, अपना काम करो ! येगोर को यहां भेज दो।" उसने खोखली आवाज में कहा।

"वडा सदमा हुआ है उसे !" जब हम बरामदे म पड़े हुए बोरो के पास पहुँचे तो आर्तेम ने सरगोशी मे कहा, "ऐसा धक्का पहुँचा ह उसे कि नाराज होना भी भूल गया ।"

दालान में मैं सबसे पीछे रह गया । और दरारो मे मे झांक कर सहन मे देखा लालटैन की रोशनी सुबह के अँधेरे से जूझ रही थी। उसकी रोशनी में चार सफेद बोरे मुश्किल से दिखाई दे रहे थे जो सीटी की-सी आवाज और एक किस्म की घडवडाहट के साथ कभी फूल जाते और फिर पिचक जाते थे। मालिक नगे सिर उन पर झुका हुआ था। उसके बालो की लटें चेहरे पर बिखरी हुई थी । इसी हालत मे वह बहुत देर तक चुपचाप खडा रहा। समूर के कोट से ढँका हुआ उसका शरीर घण्टी की भाँति दिखाई देरहा था । . . फिर मैने मूं-मूं की आवाज और इन्सानी खुसर-पुसर की आवाज सुनी ।

"क्या हुआ मेरे प्यारो। दुःख होता है ? बेचारे . त्व-त्व. ।"

ऐसा मालूम हुआ जैसे जानवर और ज्यादा जोर से सांस लेने लगे हो।

उसने अपना सर उठाया, चारो तरफ देखा और मुझे ऐसा दिखाई दिया कि उसके गाल आसुओ से तर थे । अब उसने अपने दोनो हाथो से आँसू पोछ डाले थे और एक रंजीदा बच्चे की तरह वहां से परे हट गया, खाली पीपे मे से मुट्ठी भर घास निकाली, वापस गया और जमीन पर बैठ कर सुअर की गदी थूथनी पोछने लगा। फिर जैसे चौक कर घास फेंक दी, उठ खड़ा हुआ और आहिस्ता-आहिस्ता सुअरो के गिर्द घूमने लगा ।

एक चक्कर लगाया, फिर दूसरा जरा तेज कदमो से, फिर तो एक दम उसने दौड़ लगाना शुरू कर दी । उछलता-कूदता, घूसे तान कर और बेतहाशा तेज दौड कर चक्कर लगाने लगा। उसके कोट के दामन टांगो में फरफरा रहे थे वह उनमें उलझ गया और गिरते-गिरते बचा।

और फिर मुंडिया हिलाता, मुंह विसूरता रुक गया । आखिरकार—यह भी अचानक हुआ जैसे कि उसकी टांगो मे दम न रहा हो । कूल्हे टिका कर वह जमीन पर बैठ गया और जैसे तातारी लोग प्रार्थना के वाद करते हैं उसने हथेलियो से अपना चेहरा मलना शुरू कर दिया ।

"पुच-पुच मेरे नन्हे-मुन्ने जानवरो । पुच-पुच ।"

येगोर झूमता-झामता, मुंह मे पाइप दवाए एक कोने के पीछे से प्रकट हुआ । पाइप की चिंगारी कभी-कभी उसके अंधेरे मे छिपे हुए चेहरे को रोशन कर देती थी । जो ऐसा मालूम होता था जैसे किसी ने एक गठीले तख्ते को जल्दी-जल्दी तराश कर इन्सानी चेहरे की शक्ल दे दी हो । उसके सुर्ख कान की मोटी-सी लौ में वाली भी नमक उठती थी ।

"येगोरी !" मालिक ने आहिस्ता से आवाज दी ।

"हां ।"

"जानवरो को उन्होने जहर दे दिया है । "

"उसने ?"

"नही ।"

"तो फिर किसने ?"

"याश्का और आत्युखोव ने । कुजिन ने मुझे वताया है । "

"तो क्या ठोकूं उनको ?"

उठ कर खडे होते हुए आका ने थकी हुई आवाज में कहा

"नही, अभी ठहरो ।"

"कितने नीच है ये सव ।" येगोर गुर्राया ।

हां ऽ ऽ, नहीं । लेकिन मैं पूछता हूँ जानवरो का क्या कसूर था, क्यो ?"

येगोर ने जमीन पर थूका लेकिन थूक इत्तेफाक से उसके जूते पर जा गिरा । फिर उसने अपना पैर उठाया और अपने कोट के दामन में जूता पोछ डाला ।

सफेद,ठण्ढा आस्मान छोटे-से आंगन पर शामियाने की तरह झुका हुआ था । जाडो का उजाड-उजाड दिन वडी अनिच्छा से निकल रहा था ।

येगोर दम तोडते हुए जानवरो के पास गया ।

"इन्हे मार डालना चाहिए ।"

"किमलिए ?" मालिक ने मिर को झटका देकर पूछा । "जी लेने दो जव तक जीते है !"

"मैं तो इन्हे मारकर रहूँगा और फिर हम इन्हे भटियारे के हाथ वेच देगे । इनका गोश्त तो नही वेचा जा सकता ।"

"भटियारा इन्हे नही लेगा ।" सेम्योनोव ने जमीन पर वैठ और एक सुअर की सूजी हुई गर्दन टटोलते हुए कहा ।

"क्या वातें करते हो, लेगा क्यो नही ? मैं कहूँगा कि तुम इनसे उक्ता गए थे इसलिए इन्हे जिवह करा दिया । मैं कहूँगा कि ये विल्कुल तन्दुरुस्त थे ।"

मालिक खामोश हो गया ।

"अच्छा वोलो तो अव इनका क्या जाय ?" येगोर ने जोर दिया ।

"क्या ?"

आका उठ खडा हुआ और एक वार फिर सुअरो के चारो तरफ आहिस्ता-आहिस्ता टहलने लगा और दवी आवाज में गुनगुनाने लगा

"नन्हे-मुन्ने, मेरे प्यारे प्यार. ।"

वह रुक गया, चारो तरफ देखा और अनायास वोल पडा

"कर दो जिवह !"

हम जवरदस्त तूफान वरपा होने, नौकरियो से वरखास्त होने की आशा कर रहे थे । हमारा विचार था कि मालिक सजा के तौर पर एक और वोरा नानखताइयां वनवाने के लिए डलवा देगा । वजारा वहुत दुखी नजर आ रहा था लेकिन वह वनने की कोशिश कर रहा

था और कृत्रिम लापरवाही से जोर-जोर से कह रहा था—

"सेको और जोश दो !"

कारखाने मे घुटी-घुटी खामोशी छाई हुई थी । सब मजदूर मुझे प्रकोपपूर्ण दृष्टि से देख रहे थे और कुजिन वडवडा रहा था

"सजा सव ही को मिलेगी—कसूरवार को भी और वेकसूर को भी ।'

वातावरण और भी दूषित हो गया । वातो-वातो में झगडे होने लगे । और जब हम खाना खाने वैठे तो सिपाही मिलोव जवडे चीर कर मुस्कराने लगा और फिर मूर्खतापूर्ण ठहाका उसने लगाया और कुजिन की पेशानी पर अपने चमचे से ठोंग मार दी ।

वूढे ने कराहते हुए अपना सिर हाथो मे दवा लिया । अपनी इकलौती आँख से आश्चर्यचकित होकर चारो तरफ देखने लगा और विसूरते हुए वोला

"भाइयो ! यह क्यो ?"

एक आम शोर व गुल वुलद हो गया । वीच-वीच में गालियाँ सुनाई देती थी और तीन आदमी मुक्का ताने सिपाही पर वरस पडने को पर तोलने लगे । और वह दीवार से टेक लगाये हँसी के साथ फुदकने लगा और वोला

"यह मक्कारी की सजा है । येगोर ने मुझे सव वता दिया है । आका जानता है कि सुअरो को जहर किसने दिया है ।"

पीला चेहरा और कुछ अजीव तनी हुई-सी हालत में वजारातँद्र के पास वैठा-वैठा एकदम कुजिन पर झपटा और उसकी गुद्दी दवोच ली ।

"फिर ? अवे इस तेरी जवान ने जो तेरी मरम्मत कराई है उससे पेट नही भरा क्या ! नीच, वदमाश कही के ?"

"तुम कहोगे कि शायद सच नही है यह !" कुजिन ने अपने मुर्झाए हुए छोटे-से चेहरे को छिपाते हुए थरथराती हुई वूढी आवाज में कहा,

"क्या तुमने शुरू नही किया था यह सब कुछ ? क्या मैं सुन नही रहा था कि तुमने बडबडिये से यह काम कराने की कोशिश की थी ?"

बन्जारे ने गुर्राते हुए अपना मुक्का ताना। लेकिन आर्तेम उसके कंधे पर लटक गया।

"मारो नही याश्का ! छोडो, जाने भी दो।"

अब खीचा-तानी शुरू हो गई। याश्का, शातुनोव और आर्तेम की पकड से निकलने के लिए लातें चला रहा था, भन्ना रहा था। और

"आओ एक-एक कर के लड लो ! आओ हिम्मत हो तो !"

विकृत और जमा हुआ खून खराब खाने और दूपित वायु के कारण विषाक्त, सतोप तथा दैन्य से सहे हुए अत्याचार के विप में बभा हुआ रक्त आज इन लोगो के सिर पर चढ आया था, चेहरे सुर्ख हो गये थे, कानो मे से ज्वालाएँ निकल रही थी, लाल–लाल आँखें अन्धे गुस्से में चमक रही थी और कटकटाते हुए दाँतो ने तमाम चेहरो को हवन्नक और विकृत कर दिया था।

आर्तेम दौडता हुआ आया और लेस्चोव के जगलियो जैसे मुंह के सामने आकर चीखा

"मालिक आ गया।"

हुल्लडबाजी इस प्रकार समाप्त हो गई जिस प्रकार आँधी के सामने कूडा-करकट गायब हो जाता है। हर व्यक्ति अपनी जगह पर वापस आ गया। पलक झपकाते ही निस्तब्धता छा गई। केवल थकावट और क्रोध के कारण फूली हुई साँस की धौंकनियाँ-सी चलती सुनाई दे रही थी। और चमचे दबोचे हुए हाथ कंपकँपा रहे थे।

दो नानवाई बेकरी के दरवाजे की मेहराब के अंदर खडे थे। एक तो था चुस्त व चालाक याकोव विश्नेवस्की और हृष्ट-पुष्ट, दमे का रोगी वाश्किन जिसका चेहरा ईंट जैसा लाल था और आँखें उल्लू जैसी गोल।

उसकी कुपित आँखे बडी भयकर मालूम हो रही थी।

"छोड दो मुझे! आज मैं इसे जान से मार कर ही दम लूगा ।"

सत्यवादी, नाटेकद के बूडे की मैली कमीस का गरेबान वन्जारे की मुट्ठी में था। उसके मुँह से झाग निकल रहे थे और वह हकला-हकला कर कहे जा रहा था

"अगर कोई वात न होगी तो मैं कुछ भी नही कहूँगा। लेकिन अगर वदमाशियाँ होती रही तो मैं कहूँगा और जरूर कहूँगा। हाँ कहूँगा चाहे तुम मेरी तिक्का-वोटी ही क्यो न कर डालो वदमाशो !"

यह कह कर वह अचानक याश्का पर धडाम से गिर पडा। उसके सर पर जोर का दुहत्तर मारकर उसे जमीन पर दे पटका। दो-तीन लातें रसीद की और युवको की-सी आश्चर्यजनक फुर्ती से उसका वदन रौंदना शुरू कर दिया।

"तूने, तूने! हरामी पिल्ले तूने डाला था नमक तूने ।"

आर्तेम ने एक छलाँग लगाई और बूढे के सीने पर अपना सिर दे मारा। वूटा एक चीख मार कर फर्श पर गिर पडा और वहीं पडे-पडे कराहता रहा।

झल्लाया हुआ याश्का मोटी-मोटी गालियाँ देता हुआ और सिसकियाँ भरता हुआ शेर की तरह उस पर झपटा और झट से उसकी कमीज फाड कर उसे वेतहाशा मुक्के मारने शुरू कर दिये। और मैं उसे रोकने की कोशिश करता रहा। हमारे इर्द-गिर्द जन्नाटे के साथ लातें चल रही थीं धमा-चौकडी हो रही थी और धूल व गर्द के वादल छा गये थे। जगलियो की नाईं दाँत निकाले वन्जारा दीवानो की तरह चीख रहा था। वडे जोर का मल्ल आरम्भ हो चुका था। खुद मेरे पीछे से मुक्को के धमाको और दातो के कटकटाने की आवाजे आ रही थीं। घुँघराले वालो वाला एक भैंगा जिसका नाम लेस्चोव था, मेरे कधे हिलाकर ललकारा

"क्यो, क्या दो-दो हाथ भी नही होगे ?" वाश्किन ने निराश व उदास स्वर में कहा। विश्नेवस्की ने अपने छोटे-से हाथ से जिस पर जले हुए के बहुत से निशान थे, अपनी बारीक मूँछो को मरोडते हुए बकरी की तरह मिमिया कर कहा

"अबे गँवारो। आटे के कीडो। "

सभी का भरा हुआ गुस्सा उन पर उतरा। कारखाने के सब आदमी उन्हे बुरी तरह गालियाँ देने लगे। उन नानबाइयो से सभी को नफरत थी। उनका काम हमसे आसान था और तनख्वाहें ज्यादा। उन्होने भी गालियो का जवाब गालियो से दिया। करीब था कि हाथा-पाई शुरू हो जाती कि अचानक रोता-बिसूरता हवन्नक याश्का मेज पर से उठा और डगमगाते हुए कदमो से जाने लगा। और फिर अपना सीना दबोच कर औंधे मुँह फर्श पर गिर पडा।

मैं उसे उठा कर डबलरोटी की बेकरी में ले गया जो अपेक्षाकृत अधिक साफ-सुथरी और हवादार थी। वहाँ ले जाकर मैंने उसे आटे के एक पुराने पीपे पर लिटा दिया। उसका चेहरा पीले हाथी दाँत की तरह पीला पड गया था। और वह ऐसा निश्चल व निस्पन्द पड गया था जैसे मुर्दा। शोर-गुल आहिस्ता-आहिस्ता खत्म हो गया।

किसी आने वाली मुसीबत का खतरा मडराता हुआ-सा नजर आ रहा था। हर शख्स सहम गया था और दबी-दबी आवाज मे कुजिन की निंदा कर रहा था

"तेरा ही किया-धरा है यह सब। काणे शैतान।"

"बदमाश जेल की हवा खाने के काबिल है।"

बूढा गुस्से में जवाब दे रहा था

"सब बकवास है। इसे तो कोई दौरा-वौरा पड गया है।"

आर्तेम और मैं लडके को होश मे लाये। उसने अपनी चुस्त,मनो-

हर आंखो की लम्बी-लम्बी पलके आहिस्ता से उठाई और बेजान आवाज में पूछा

"क्या हम आन पहुँचे ?"

"अबे आन कहाँ पहुँचे मरदूद।" उसके भाई ने चिंतित हो कहा। "हर जगह अपनी टाग अडाता फिरता है। मैं भी अब तेरी खूब ही ठुकाई करूँगा। गिर क्यो पडा था बे ?"

'कहाँ पे ?" उसने आश्चर्य से भवे सुकेडते हुए कहा। "मैं क्या गिर पडा था ? भूल गया हूँगा। मैंने एक सपना देखा था। हम एक नाव में थे—तुम और मैं। केकडे पकड रहे थे। हम खाना भी ले गये थे और एक बोतल वोडका की भी।"

कुछ थकावट महसूस करते हुए उसने अपनी आखे बन्द करली। फिर थोडी देर के बाद मुर्झाई हुई आवाज मे आहिस्ता-आहिस्ता बड-बडाना शुरू कर दिया

अब मुझे याद आया। मेरे दिल में इस जोर का दर्द उठा कि मालूम होता था निकल पडेगा। कुजिन ने किया है यह। मुझे उससे नफरत है। मेरी थाथ अच्छी तरह नहीं आरही। गधा कही का। मैं जानता हूँ उसे—अपनी पत्नी को मार-पीट कर मार डाला था उसने। अपनी बहू पर भी नियत बिगाड बैठा था। हम दोनो एक ही गाँव के है इसलिए मझे सब मालूम है।"

"अच्छा अब चुप तो रह।" आर्तेम ने डॉट कर कहा। "बस अब सोजा।"

"हमारे गाव का नाम योगिल्देयेवो था। बाते करने से मेरे दर्द होता है वरना मैं—"

वह ऐसे बोल रहा था जैसे कि अब नींद के गोते में आने ही वाला है और बीच-बीच मे अपने सूखे, काले होठो को जीभ से तर करता

जाता था ।

बेकरी में से कोई दौडता हुआ और मारे खुशी के चीखता हुआ आया ।

"अरे भाइयों ! मौज उडाओ ! मालिक अब फिर नशे में धुत्त है ।"

पूरा कारखाना गगनभेदी कहकहो और सीटी की तेज आवाजो से गूंज उठा । हर शख्स एक-दूसरे को भलमनसाहत, खुशी और उत्साह भरी दृष्टि से देख रहा था । सुअरो के कारण मालिक के बदले के भय ने आग लगाई हुई थी और अब उसकी मदहोशी के दौरान में कम काम किया जा सकता था ।

वानक उलानोव जो लडाई–झगडे के मौको पर धूर्तता से गायब हो जाता था अब एक छलांग मार कर बीच कारखाने में आ कूदा और उसने नारा लगाया

"आओ गाएं !"

बजारे ने आंखें बंद करके गला साफ करके बारीक और तेज आवाज में गाना शुरू कर दिया

एक कच्ची दाढी वाला नौजवां है आ रहा
वह रगीला जोश-मस्ती में अकडता झूमता ।

बीस आदमियो ने मेज पर ताल दी और गाने में शामिल हो गये ।

दाढी देखो उसकी लहराती हुई

बचारे ने अगली पंक्ति गाई, पांव से ताल देता रहा और सबने मिलकर बेतुकी पंक्ति को इस प्रकार पूरा किया

सांप की मानिन्द बलखाती हुई

चिकटे हुए फर्श पर कोई नर्म व नाजुक आकृति वाला ठुमकियाँ और मरोडियां देकर केंचुलीदार कीडे की तरह बल खा रहा था और इस तरह धूल के बादल उडने लगे थे ।

शाबाश नौजवानो ! डटे रहना !' एक जोरदार नारा बुलन्द हुआ और खुशी व शादमानी का यह तूफान अभी हाल के प्रकोप व गुस्से से कुछ कम हेय और दुखद न था।

रात को भुनभुने की हालत और भी खराब हो गई। बुखार तेज हो गया और सास कुछ उखडी उखडी सी नजर आई। हिचकियाँ ले ले कर गदी और बदबूदार हवा सास के साथ उसके फेफडो मे जाती और सिकुडे हुए होठो मे से फौवारे की तरह निकलती। मानो वह मुँह से सीटी बजाने की कोशिश कर रहा हो। लेकिन पूरी ताकत लगा कर सीटी बजाने का दम उसमें न हो। घडी घडी वह पानी माँगता लेकिन एक-दो घूट लेकर ही बस कर देता। और अपनी धुँधली आँखो की मधुर मुस्कान के साथ धीरे से कहता

'मेरा ही कसूर है ! बस और नहीं पीना चाहता ।"

मैंने उसके बदन पर वोडका और सिरके की मालिश की और वह थोडी ही देर में बेखबर सो गया । उसके चेहरे पर आटे की गर्द जमी हुई थी और हल्की-सी मुस्कराहट खेलती हुई नजर आ रही थी। उस के घुघरियाले बाल कनपटी पर चिपक गये थे और खुद वह ऐसा मालूम होता था कि पिघल कर पानी-पानी हो गया हो। गदी, फटी-चिथडा कमीज आटे में बुरी तरह लिथडी हुई थी। इस कमीज के नीचे उसके सीने में सिर्फ हल्की-सी हरकत का सदेह होता था।

सब लोग मुझ पर गुर्राये

'अच्छा बस अपनी डाक्टरी रहने दो। इस तरह व्यर्थ समय गवाना हम को भी आता है ।"

मुझे वडा ही दुख हुआ। और इस वग्त का वडी तेर्जा से मुझे एहसास होने लगा कि मैं उन लोगो मे विन वुलाया अजनवी हूँ। सिर्फ आर्तेम और याश्का ही शायद मेरे भावो को समझने थे। वजारे याश्का ने खुशमिजाजी मे कहा

"हँसी-खुशी रहो! ओ नन्ही-मुन्नी छोकरी जरा आटा गूथ ले। देख तो तेरे प्रेमी कैसे-कैसे उपहार लिये तेरी प्रतीक्षा में खडे है।"

आर्तेम भी मेरे साथ छेडखानी करता रहा। उसने वडी कोशिश की कि वह मुझ से दिलचस्प मजाक करे लेकिन आज वह भी असफल रहा। और आखिरकार ठण्डी साँस लेकर दुखभरी आवाज मे उसने मुझसे दोवारा पूछा

"क्यो, क्या तुम्हारा ख्याल है कि याश्का को वहुत खतरनाक चोट आई है ?'

शातुनोव ने हमेशा से ज्यादा गला फाड कर अपना मनोनीत गीत गाना शुरू किया–

जरा झाँकना तग गलियो के अन्दर
जरा देखना आम रस्तो पे जाकर
कि मेरे गम व ऐश हमराह लेकर
कहाँ खो गया आज मेरा मुक़द्दर

रात को मैं झूनझूने के पास ही फर्श पर सोया। जभी मै वोरियाँ विछा ही रहा था कि वह उठ वैठा और चौंक कर वोला

"कौन है यह ? क्या तुम हो वडवडिये ?"

उसने उठकर वैठने की कोशिश की, लेकिन वैठ न सका और फिर लेट गया। उसका सिर स्याह चीथडो के तकिये पर वेजान होकर गिर पडा।

सव सो रहे थे। गहरे साम लेने की सरसराहट हो रही थी और

वलगम की खांसी घुटी हुई वदवूदार हवा मे थरथराहट पैदा कर रही थी। खिडकी के मैले और धुंधले शीशो मे से गहरी नीली रात के तारे सद आखो से घूर रहे थे। तारे इतने छोटे और इतने दूर दिखाई दे रहे थे कि दिल पर उदासी छाई जाती थी। वेकरी के एक कोने में दीवार पर लगी हुई तेल की डिविया जल रही थी। और उसकी मद्धम रोशनी मे ताक मे रखे हुए रोटी के सांचें धुंधले-धूधले दिखाई दे रहे थे डवलरोटियो से गजी खोपडियो का शक होता था। आटे के एक वडे तसले पर गूगा निकान्दर सिकुडा-सिकुडाया गेंद बना पडा था और नानवाई की पीली नगी टाग जिस पर कई घाव थे उस मेज के नीचे से झाक रही थी जिस पर डवलरोटियां तोली और बण्डलो में वांधी जाती थी।

याश्का ने आहिस्ता से आवाज दी

"वडवडिए।"

"क्या?"

"मुझे वडी तकलीफ हो रही है।"

"अच्छा आओ हम वाते करें। मुझे कोई किस्सा सुनाओ।"

"क्या किस्सा सुनाऊँ? किसी देव का किस्सा सुनाऊँ?"

"चलो देव का ही सही।"

थोडी देर तक वह खामोश रहा। फिर डिब्बे पर से कूद कर नीचे लेट गया। झुलसता हुआ सिर मेरे सीने पर रख लिया और आहिस्ता-आहिस्ता तल्लीनता की स्थिति में कहना शुरू किया

"मेरे पिता के जेल जाने से पहले की वात है। गर्मियो का मौसम था और मैं विल्कुल छोटा-सा था। मै वाहर सो रहा था भूसे की गाडी में। वडा मजा आ रहा था। एकदम मेरी आख खुल गई। दरवाजे के सामने वह कूद रहा था—वहुत छोटा-सा था मुट्ठी से भी वडा नहीं

था। दस्ताने की तरह उस पर बाल ही बाल थे। भूरे और हरे। आंखें भी उसके नही थी। मैं चिल्लाने लगा। माँ ने मुझे जगा दिया। मुझे चिल्लाना नही चाहिए था, उसको डराना नही चाहिए नही तो वह नाराज हो जाता है और फिर चला जाता है और लौट कर नही आता यह बडी बुरी बात है। जिस घर मे देव नही होता उस घर मे भगवान की दया नही उतरती। तुम्हे मालूम है देव कौन होत हैं ?"

"नही ! कौन होत हैं ?"

"वे देवताओ के द्वारा भगवान को सूचना भजते हैं। देवता आसमान से उतरते हैं और सुना है कि वे हम लोगो की जबान नही समझत, नही तो वे अपवित्र हो जात हैं। और आदमियो को भी देवताओ की बात नही सुननी चाहिए।"

"क्यो नही सुननी चाहिए ?"

"इसलिए नही सुननी चाहिए कि मेरे ख्याल में तो यह शर्म की बात है। देखते नही इस जबान न लोगो को भगवान की ओर से कितना विमुख कर दिया है ?"

उसे जोश आ गया और वह उठकर बैठ गया। औरवह जल्दी-जल्दी बोलने लगा बिल्कुल उसी तरह जिस तरह तन्दुरुस्ती की हालत में बोला करता था।

"हर आदमी परमात्मा से सीधा जाकर कह देता है कि उसे क्या चाहिए लेकिन नही बीच में देव है– तभी वह लोगो स नाराज हो शायद लोग उसे खश नही करते और वह देवताओ स झूठी बातें कह देगा। समझे कुछ ? अब वे उससे पूछत हैं यह किसान कैसा है ? और वह चूकि नाराज होता है इसलिए कहता है वह तो खराब आदमी है और फिर मैं तुमसे शर्त लगाता हूं कि उस आदमी के घर में मसीबतो का पहाड टूट पडेगा। लोग चीखते हैं चिल्लाते हैं–हे परमात्मा हम पर

दया कर—और लोगो को मालूम नही होता कि उनकी शिकायत कर दी गई है। वह उनकी बात नही सुनता और वह भी उनसे नाराज हो जाता है "

लडके के चेहरे पर दु ख के बादल छा गये थ और वह गम्भीर हो गया था। उसन अपनी आँखें घुमाई और छत को घूरने लगा जो जाडो के आकाश की तरह सफेद थी । और गीले धब्ब बादलो जैसे दिखाई दे रहे थे।

'तुम्हारे पिता की मृत्यु कैसे हुई ?"

"वह अपनी ताकत की वडी डीगे हाका करते थ। यह उस जमाने की बात है जब वह जेल में थे। उन्होने कहा कि मैं पाँच आदमियो को हरा सकता हूँ। उनसे कहा कि वे एक दूसरे की कमर में हाथ डाल लें और फिर उन्होने उन्हे उठाना शुरू किया और उनका दिल फट पडा। खून निकलता रहा और वह मर गये ।

झुनझुने ने एक ठण्डी साँस भरी और दोबारा मेरे पास लेट गया। उसने अपने तमतमाते हुए कल्ले मेरे हाथो पर रगडे और अपना किस्सा फिर शुरू कर दिया ।

"वह वडे पहलवान थे। मन भर का वजन उठा कर वह बगैर दम लिए बारह बार अपने ऊपर क्रास का निशान बना लेते थे। मगर उन्हे काम ही नही मिलता था और जमीन भी वडी थोडी थी, बहुत ही थोडी—मालूम नही कितनी थी। पेट भरने को कुछ भी नही था, बिल्कुल कुछ भी नही। भीख मांगो जाकर और बस। मैं छोटा था, लेकिन मुझे भी तातारियो से भीख माँगन जाना पडता था। हमारे गाव में सब तातारी है, पर है, अच्छे तातारी। एस जो हमेशा कहते है, लो भई ! ये ले जाओ। वे सब एस ही है। अच्छा तो हमारे पिता जी ने घोडे चुराना शुरू कर दिये। उन्हे हम पर वडा तरस आता था।"

उमकी वारीक आवाज र्रा गई थी और धीरे-धीरे यकी-सी होती जा रही थी। लडका वूढे आदमी की नाई खाँसकर और ठण्डी साँस भरके वोला

"जव वह घोडा चुरा लाते तो फिर थव ठीक हो जाता। हमारे पाथ खाने को होता और हम थव वहुत खुश होते। माँ तो रो-रोकर आँखें युजा लेती थी लेकिन ऐथे मौकों पर वह भी शराव पीती और गीत गाती। वडी अच्छी थी, थव को प्यार करती थी पिताजी के मरने पर रो-रोकर कहती थी, 'हाय मेरे प्यारे, मेरी आत्मा!' गाँव वाले मेरे पिताजी को लाठियों से मारा करते थे। लेकिन वह किसी की परवाह नही करते थे। आर्तेम को फौज में भरती होना था। हम योचते थे कि वह वूढी औरत मालूम होता था। तँदूर के कोने के पीछे एक हाथ में वोदका की वोतल और दूसरे में आजूरा लिये वह कुछ चोरो की तरह छिपा खडा था। उसके हाथ कँपकँपाते मालूम हो रहे थे—। शीशे टकराने और कलकल की आवाज आ रही थी जैसे कोई शराव निकाल रहा हो।

"यहाँ आओ!" उसने मुझे आवाज दी और जव मैं करीव पहुँच गया तो एक झटके के साथ शराव का ग्लास वढाया और कुछ छलका भी दी। "लो पियो!"

"मैं तो नही पीना चाहता!"

"नही क्यो?"

"यह कोई वक्त नही है।"

"अगर कोई शराव पीता है तो पीने के लिये हर वक्त ठीक है। पियो!"

"मैं शराव पीता नही!"

उसने अपना भारी सिर हिलाया।

"मुझसे तो किसी ने कहा था कि तुम पीने हो!"

'एकाध ग्लास वह भी उस समय जबकि मैं थक जाता हूँ ।"

उसने दाहिनी आँख से ग्लास को घूरा और एक गहरी ठण्डी साँस भर कर वोडका तंदूर के मुंह मे फेंक दी। फिर वह तंदूर पर चढ गया और उसके मुँह मे पाँव लटका कर बैठ गया।

"बैठ जाओ। मै तुमसे कुछ बाते करना चाहता हूँ।"

अंधेरे मे मुझे उनका थाली-सा चेहरा तो नजर नही आ रहा था लेकिन आवाज सुन कर मुझे बडा आश्चर्य हुआ। इसलिए कि वह कुछ विलक्षण रूप से अनजानी-सी प्रतीत हो रही थी। मै उसके समीप बैठ गया। उसमे मुझे बडा आनन्द आ रहा था। अपना सिर झुकाए वह ग्लास पर अपनी उँगलियाँ बजा रहा था और हल्की-सी टनटन की आवाज आ रही थी।

'हूँ, तो कुछ सुनाओ।"

याश्का को अस्पताल पहुँचाना बहुत जरूरी है।"

क्यो, क्या बात है?"

'बीमार है न वह! कुजिन ने उसे बुरी तरह पीटा है।"

"कुजिन बडा नीच है, बदमाश है। तुम लोगो की चुगलियाँ खाता है। क्या तुम सोचते हो कि मैं इस कारण उसके साथ कोई पक्षपात करता हूँ? उसको कोई इनाम देता हूँ? उसके मूर्खो के-से थोबडे पर तो मैं मुट्ठी भर धूल भी न फेंकूं। पैसे देने की तो अलग रही।"

वह मरी हुई आवाज मे बोल रहा था लेकिन बाते साफ सुनाई दे रही थी और हालांकि उसका एक-एक शब्द वोडका मे बसा हुआ था लेकिन वह नशे में धुत्त नही था।

"मुझे सब कुछ मालूम है। तुम सुअरो को मार डालना क्यो नही चाहते थे? सच बताना मैंने तुम्हारे साथ ज्यादती की है न? और मेरे साथ तुमने भी अन्याय किया है, क्यो?"

मैंने सब कुछ बता दिया।

"हाँ।" उसने कुछ रुक कर कहा, "तो मैं सुअर से भी बदतर हूँ, क्यों ? मुझे भी जहर दे देना चाहिये ह ना ?"

उसकी आवाज ऐसे आई जैसे कि वह मुस्करा रहा हो। और मैंने दुबारा कहा

"तो फिर क्या मैं याश्का को अस्पताल ले जाऊ ?"

"तुम चाहे उसे बूचडखाने मे लेजाओ, मेरी बला से। मुझसे उसका वास्ता क्या ?"

"तुम्हारे खर्चे पर ?"

"हरगिज नही।" उसने लापरवाही से कहा। 'ऐसा पहले कभी नही हुआ। फिर तो सभी अस्पताल मे जाकर पड रहना चाहेंगे। मैं कहता हू तुमने मेरे कान क्यो अमेठे थे उस दिन ?"

"मुझे क्रोध आ गया था।"

यह तो मैं भी समझता हूँ। लेकिन मेरे सवाल का मतलब यह नहीं था। अगर तुमने मेरे कान पर मुक्का मार दिया होता या गाल पर घूसा, पर तुमने मेरे कान क्यो खीचे ? क्या मैं बच्चा हूँ ?"

"मैं लोगो को मारना पसन्द नही करता।"

बडी देर तक वह शान्त बैठा रहा। उस समय ऐसा मालूम होता था जैसे कि नींद का एक झोका आ गया हो। फिर उसने दृढता से और स्पष्ट स्वर में कहा

"तुम भी अजीब आदमी हो! बाकी सब नौकरो की-सी कोई भी बात तुम मे नही है। तुम्हारी खोपडी भी किसी और ही ढग की है।"

उसने यह बात मुझे भडकाने के लिए नहीं कही लेकिन उससे उस की खिन्नता अवश्य प्रकट होती थी।

"अच्छा अब बताओ कि क्या मै वास्तव मे बुरा आदमी हू ?"

"और आप क्या समझ रहे थे ?"

ने ? तुम झूठे हो, मैं अच्छा आदमी हू। अरे भाई मेरे मैं वहुत चालाक आदमी हूँ। अच्छा देखो, तुम पढे-लिखे हो बाते करने की तुम्हे ईश्वरदत्त प्रतिभा है। कोई वात हो तुम वरावर बोले जाओगे। तारो की दात हो चाहे फ्रासीसियो की, या भद्रलोक की—मैं मानता हू यह सव वडी अच्छी दिलचस्प और मजेदार वाते हैं। मैंने तुम्हे एक ही नजर मे भाप लिया था! याद है उस दिन जव तुम मुझसे पहली वार मिले थे और कहा था कि मुझे सर्दी लग जायगी और मैं मर जाऊगा। आदमी का मूल्य मैं वडी जल्दी ताड लिया करता हूँ!"

उसने भद्दी और मोटी उंगलियो से अपना माथा ठोका एक ठण्डी सास भरी और समझाने लगा

'अरे मेरे भाई मेरी स्मरण शक्ति वडी तेज है। अरे भाई मुझे तो यहा तक याद है कि मेरे दादा की दाढी में कितने वाल थे। शर्त लगा लो चाहे क्यो ?'

शर्त काहे की ?'

इस वात की कि मै तुमसे ज्यादा चुस्त व चालाक हूँ। जरा सोचो तो मै अनपढ आदमी हूँ, मुझे क ख भी नही आता सिर्फ गिनती जानता हूँ। लेकिन फिर भी मैं इतना वडा कारोबार सभाले वैठा हूँ। तेतालीस आदमी नौकर है एक दूकान के और तीन है शाखाएँ। तुम एक पढे-लिखे आदमी मेरे यहा नौकर हो। अगर मैं चाहूँ तो सचमुच एक अच्छे खासे विद्वान को नौकर रख कर तुम्हे लात मार कर निकाल वाहर कर सकता हूँ। मै अगर चाहू तो हरेक को लात मार कर निकाल कर सव पर अपना सारा धन लुटा सकता हू। क्यो ठीक कहता हूँ ना मैं ?'

'मेरी तो समझ मे आता नही, इसके लिए दिमाग की क्या जरूरत है ?"

सव वकवास! दिमाग क्या चीज होती है ? अगर मेरे पास नही

है तो फिर किसी के पास भी नही है। तुम समझते हो कि दिमाग वाला होने के लिए बातूनी होना जरूरी है। नहीं मिया यह तो कारोबार की बात है। यही आपको मिलेगा दिमाग।"

उसने एक हल्का-सा लेकिन विजयपूर्ण कहकहा लगाया जिसके साथ उसके बोझिल शरीर का लटकता हुआ मास थलथल फुदकने लगा। फिर उसने मैत्रीपूर्ण ढग से और भारी स्वर म बात जारी रखते हुए कहा

'तुम एक आदमी का भी पेट नही पाल सकते थे और मै चालीस को खिला रहा हूँ। अगर चाहूँ तो सौ को खिला सकता हू। दिमाग की बातें करने चले हो।"

जैसे-जैसे वह बोलता गया उसका स्वर कठोर और उपदेशात्मक होता गया और जबान लडखडाने लगी।

"मुझे क्या पाठ पढाने चले हो तुम ? सब बकवास है! बहरहाल उससे फायदा ही क्या ? न ही कुछ तुम्हारा भला होता है। खूब कोशिश करो ताकि मैं भी तुम्हे इसका मजा चखा सकूं। "

"चखा तो चुके हो।"

"अच्छा, वास्तव में ?"

उस पर उसने क्षण दो क्षण गौर किया और मेरा कन्धा थपथपाते हुये इकरार किया

"हाँ ठीक है। बस अब जरूरत इस बात की है कि मै तुम्हे एक मौका दूं। हालांकि मै सब कुछ देखता हू। सब कुछ जानता हू यह मेरा गारास्का चोर है लेकिन यह भी है बडा चालाक और यदि पकडा न जाय और जेल न चला जाय तो वह भी मालिक बन सकता है। अपने नौकरो की खाल खिचवाकर भुस भरवा देगा वह। यहाँ सबके सब चोर है जानवर से भी बदतर। पक्के बदमाश! और तुम उनके साथ भलाई करने की कोशिश कर रहे हो। मेरी तो कुछ समझ

मे नही आता यह तुम्हारी घोर मूर्खता है।"

नींद मुझ पर सवार हो चुकी थी। दिन भर की मेहनत से मेरा जिस्म थककर चूर हो गया था और थकावट से सिर चकरा रहा था।

आका को उकता देने वाली चपचपी आवाज विचारो को चिपकाये दे रही थी

'मालिको के बारे में तुम बडी भयानक बाते कहते हो। यह सब तुम्हारी मूर्खता है, तुम्हारी तरुणाई ही इसका कारण है। मेरी जगह यदि कोई और व्यक्ति होता तो फौरन पुलिस वाले को बुलाता, एक रुबल उसके हाथ मे थमाता और तुम्हे सीधा थाने भिजवा देता।"

उसने अपना भारी और नर्म हाथ मेरे घुटन पर मारा

'चालाक आदमी को मालिक बनने की फिक्र करनी चाहिये। इधर-उधर टक्करे मारने से क्या लाभ ? लोग तो इतने असख्य है जैसे मेंढक। मालिक बहुत थोडे है। यही मुश्किल है। यह सब असमान और गलत है अगर तुम आख खोलकर देखो तो तुम्हे बहुत कुछ नजर आयगा। फिर तुम्हारा दिल मजबूत हो जायगा और तुम समझ जाओगे कि खुद ये लोग ही खराब है यानी वे लोग जो नौकरी करते है। तमाम फालतू आदमियो को काम पर लगाना चाहिये ताकि वे बेकार मारे-मारे न फिरें। एक पेड को बेकार पडा सडते रहने देना लज्जास्पद है, उसको जला डालो गर्मी तो देगा। यही बात इन्सान के साथ है, समझे कि नही।"

याश्का के कराहने की आवाज आई और मै उसे देखने के लिए उठ खडा हुआ। वह चित्त लेटा हुआ था—भवे तनी हुई और मुंह खुला हुआ था। दोनो हाथ सीधे और जिस्म के साथ चिपके हुए थे। उस लडके में कुछ फौजियो जैसी चुस्ती पाई जाती थी।

सिकान्दर आटे के कटाव पर से नीचे कूदा और तंदूर की ओर लपका ही था कि रास्ते में मालिक से टकरा गया और कोई एक मिनट

तक हक्का-वक्का खडा रहा। फिर बडा-सा मुंह फाडकर अपनी मछलियो जैसी आखे अपराधी की नाई झपकाई और अपनी फुर्तीली उँगलियो से हवा मे कुछ पचीदा आकृतियाँ बनाते हुए मुनमुनाया

"मू—ऊ—ऊ—ऊ!"

आका ने उसे चिढाया और यह कहते हुए उठकर चला गया, "गूंगा पत्थर! "

जब वह दरवाजे के पीछे गायब हो गया तो बहरे गूगे ने मेरी तरफ देख कर आँख मारी और अपना हलक दो उँगलियो से दबा कर सकेत किया, "कोख–कोख। "

अगले दिन सुबह याश्का और मैं अस्पताल गये। हमारे पास सवारी के लिए पैसे नही थे और लडका बडी कठिनाई से चल रहा था। क्षीण स्वर में खांस-खाँस कर बातें करते हुए वह अपनी तीव्र वेदना का मर्द की भाँति सामना कर रहा था।

"थाथ ही नही ली जाती। फेफडे बेकार हो गये हैं बदमाश। "

बाजार मे चिलचिलाती हुई, चादी की तरह चमकती हुई धूप मे और गर्म कपडो में अच्छी तरह लिपटे-लिपटाये राहगीरो के दरम्यान वे अपने काले चिथडे पहने असलियत से ज्यादा छोटा और सूखा नजर आ रहा था। उसकी आस्मानी नीली आखें कारखाने के अधेरे की आदी थी और इसलिए उनमे पानी डबडबा आया था।

"और मैं मर गया तो आर्तेम तो कुत्ते की मौत मरेगा, शराब बुरी तरह पीने लगेगा। उल्लू! और अपनी तो वह जरा भी देखभाल

नहीं करता। बडवडिये, तुम उसकी डाट–डपट करते रहना, कहना मैंने कह दिया था।"

उसके सूखे, काले, छोटे-छोटे-से होठ बेचैनी के दर्द के कारण भिच गये।

उसकी बच्चो जैसी ठोटी थरथराई। मैं उसको वगल मे दबोचे हुए था और मुझे डर था कि कही वह रोना न शुरू करदे और मैं राहगीरो को मारना और खिडकियो के शीशे न तोडना शुरू करदूं और फिर अच्छा-खासा तमाशा वन जाये।

झुनझुना' रुक गया। एक लम्बी–सी सांस ली और वडे-बूढो की तरह रोवदार आवाज में बोला

"वस उससे इतना ही कह देना कि मैंने उसे हुक्म दिया है कि वह तुम्हारा हुक्म माने ।'

कारखाने में वापस आ कर मुझे एक और दुर्घटना का पता चला। सुवह जव निकान्दर विस्किट लेकर दूसरी दूकान में देने को ले जारहा था तो वह फायर ब्रिगेड के घोडो की सीमा में आ गया और वह भी अस्पताल पहुंच गया '

"अव, शातुनोव ने अपनी छोटी-छोटी चुधी आखो से मुझे देखते हुए वडे विश्वास के साथ कहा, तुम देख लेना कोई-न-कोई मुसीवत आयेगी। जव कोई दुर्घटना घटती है तो उसके वाद दो और आवश्यक होती हैं—हमेशा तीन हुआ करते हैं। हज़रत ईसा से लेकर सेंट निकोलस और सेण्ट जार्ज तक। फिर पुनीत माता उनसे कहेगी वस काफी ह वच्चो!' और फिर वे सत्पथ पर आ जायेंगे ।"

निकान्दर का कोई ज़िक्र न हुआ। वह उनके लिए अजनवी था हमारे कारखाने का आदमी न था। लेकिन फायर ब्रिगेड के घोडो की रफ्तार, ताकत और सहिष्णुता के वारे में वडी-वडी वातें होती रहीं।

अभी हम खाना खा ही रहे थे कि गारास्का आया। वह एक चुस्त

व चालाक, खूबसूरत लडका था। आँखें उसकी व्यभिचारियो और चोरो जैसी निडर थी मानो कह रही हो—डरता कौन है—उसने बडी गम्भीरता से घोषणा की कि मुझे निकान्दर की जगह देकर छोटा नानवाई बनाया गया है और मेरी तनख्वाह छ रूबल मासिक हो गई।

"बधाई!" याश्का खुशी से उछल पडा। फिर फौरन ही भवे सुकेड कर पूछा

"यह है किसकी आज्ञा ?"

"मालिक की !"

"लेकिन वह तो नशे मे धुत्त है ना !"

"बिल्कुल भी नही !" गारास्का ने चहक कर कहा। "मरने वालो की स्मृति मे कल जरूर एक दौर चला था। लेकिन आज होश व हवास बिल्कुल दुरुस्त है बल्कि इससे भी ज्यादा और आज आटा खरीदने गया है।"

"तो अभी सुअरो वाला मामला खतम नही हुआ ?' बजारे ने दबी आवाज में झुंझला कर कहा।

सब लोग मुझे मुँह फलाये देख रहे थे और जलन के मारे बुरे-बुरे ताने दे रहे थे। कठोर तथा असह्य अपशब्दो मे कारखाना गूँज रहा था।

"हाथ मार रहा है खूब।"

"निराला पछी सदा निराला होता है।"

शातुनोव अपनी विशिष्ट भाषा में चबाचबा कर कह रहा था

"काँटो की अपनी जगह होती है, फूलो की अपनी !"

और कुज़िन ने अपने विचार उन्ही शब्दो मे छिपाये जिन्हे वह अपनी दुर्भावनायें छिपाने के लिये सदैव इस्तेमाल करता था।

"अरे शैतानो ! कितनी बार तुमसे कहूँ कि मूर्ति को ज़रा साफ कर दिया करो !"

केवल आर्तेम ने बलन्द आवाज मे कहा
हा गई शरू—वही काट-छांट बोलियां, ठिठोलियाँ !"
डबलरोटी की बेकरी मे काम करने के बाद पहली ही रात को जब मै एक बारी का आटा ्ध कर ौर दूसरी बार का भिगोकर कित ब लिये हुए चिराग के पास बैठा था कि ाका आ गया। नीद के मारे आखें बोझिल थी और वह उन्हे जल्दी-जल्दी झपका कर अपने होट झपकाये जा रहा था ।
'पढ रहे हो यह बडी अच्छी बात है। पड कर सो रहने से बेहतर ह । ज्यादा देर तक आटा पडे रहने का खतरा ही नही ।"
बातें वह धीरे-धीरे कर रहा था। फिर बडी सावधानी से मेज के नीचे नजर दौडा कर जहाँ नानबाई पडा खर्राटे ले रहा था वह मेरे करीब, आटे के एक बोरे पर बैठ गया। किताब मेरे हाथ से लेकर बन्द कर दी और अपने मोटे-से घुटने पर रख कर उस पर अपनी हथेली जमा दी।
क्या किताब है यह ?'
'रूसी जनता के बारे मे ।"
कौन-सी जनता ?"
रूसी जनता कहा ना !'
उसने कनअखियों से मुझ देखा और मसकाते हुए बोला
'हम काजान के लोग भी रूसी ह—तातारियो के अलावा—सिबरक के लोग भी रूसी है। किसके सम्बन्ध मे लिखा है इसमे ?"
इसमें हरेक के बार मे लिखा है "
उसने पुस्तक खोली। पुस्तक वाल हाथ को फैलाकर पुस्तक को जाचते हुए सिर हिलाया और अपनी नजरी आख से पृष्ठो को जारा और निणय सुना दिया
'पता चल गया, तुम इन किताब को समझ ही नही सकते।"

'यह कैसे जान गये तुम ?"

'बात बिल्कुल साफ है चित्र कहाँ है ? एक भी तो नहीं है। तुम्हें तो ऐसी किताबें पढनी चाहिये जिनमें तस्वीरें हों। शर्तिया कहता हूं उसमें ज्यादा मजा आता है। जनता के बारे में क्या कहती है यह किताब ?"

'इसमें उनकी श्रद्धा, उनके रस्म व रिवाज और उनके गीतों के बारे में बातें लिखी हैं।" मालिक ने किताब बन्द कर दी और अपनी टांग के नीचे सरका दी। और एक लम्बी-सी जम्हाई ली। उसका मुंह यद्यपि भाड-सा खुला हुआ था लेकिन उसने उस पर क्राम का चिन्ह* न बनाया।

"ये तो आम बातें हैं जो सब जानते हैं।" उसने कहा। "लोग भगवान पर आस्था रखते हैं। उनके यहाँ अच्छे गाने भी हैं और बुरे गाने भी। और उनके रीति-रिवाज सब सड-पडे। उन सबके बारे में तुम मुझ से पूछ लो। रीति-रिवाज तो मैं तुम्हें इतनी अच्छी तरह समझा दूं कि क्या कोई किताब बतायेगी। उनके बारे में किताबें पढ कर तुम्हें जानने की जरूरत नहीं। सडक पर निकल जाओ, बाजार में चले जाओ, शराबखाने में जा बैठो या त्योहार के दिन गांव चले जाओ। वहाँ तुम्हें सब रिवाजों का पता चल जायगा। या जी चाहे तो किसी अदालत में चले जाओ। छोटे-मोटे अपराधों की अदालत में भी।"

'तुम तो बुरी बातों का जिक्र कर रहे हो।"

उसने घूर कर गुस्से से मुझे देखा और कहा

"हां, हां मुझे मालूम है मैं क्या कह रहा हूं। रह गईं ये किताबें तो ये सब मनगढन्त किस्से कहानियां हैं, बिल्कुल मूर्खतापूर्ण ! तुम

क्या मुझे यह समझा रहे हो कि एक किताब मे पूरी कौम का हाल लिखा जा सकता है ।"

"एक से ज्यादा किताबे है ।'

तो क्या हुआ, कौमे और जातिया भी तो हजारो-लाखो है । इन में से हरेक के बारे मे एक एक किताब तो लिखने मे रहा कोई !"

उनके स्वर मे तुशी थी और उसकी आखो के ऊपर के पीले रोए गुस्से के मारे खडे हो गये । यह बातचीत मुझे भयानक सपना-सा मालूम हो रही थी और मै उससे उकता गया था ।

"तुम भी अजीब आदमी हो, बिल्कुल औंधी खोपडी के । उसने एक लम्बी-सी साँस लेकर खरखराते हुए कहा, "तुम्हारी समझ मे नही आता कि यह सब व्यर्थ की बकवास है । किताबे किसके बारे मे है ? लोगो के बारे मे । लेकिन कौन लोग है जो अपने सम्बन्ध मे सच-सच बातें बता देगे ? तुम बता दोगे ? मै तो हरगिज न बताऊँ । अगर तुम मेरी जिन्दा खाल उधडवादो तब भी न बताऊँ । मैं तो शायद भगवान के सामने भी कुछ न बोलूं । वह कहेगा—हा तो वासिली अपने पापो की सूची तो पेश करो !—और मैं जवाब दूगा—हे परमपिता परमेश्वर वह तो तू मुझसे अधिक जानता है । यह आत्मा तो तेरी ही है मेरी नही ।"

उसने मुझे कुहनी मारी और हँसकर आंख मरते हुए पहले से नीची आवाज मे कहता गया

हाँ, मै तो यह भी कह सकता हूँ—किसकी है यह आत्मा ? उसकी है । उसने मुझसे लेली, और बस अब उसका जिक्र क्या !

उसने एक हाथ की और दोनो हाथ मुँह पर इस प्रकार फेर मानो मुँह धो रहा हो फिर उसी उत्साह व उमग से अपनी बाते जारी रखी

बोलो, क्या उसी ने नही दी थी मुझे आत्मा ? निश्चय ही उसने दी है । और बाद मे क्या उसी ने फिर वापस नही लेली ? निश्चय ही

उसीने ली। बस तो फिर हिमाब बेबाक और हम बरी।"

मेरा सर चकराने लगा। लैम्प हमारी पुश्त पर और हमसे ऊपर दीवार पर लटका हुआ था और हमारी परछाइयां सामने हमारे कदमों पर पड़ रही थी। कभी-कभी आका अपने सिर को झटका देता और ज़र्द रोशनी उसके चेहरे पर चमकने लगती। नाक दिखाई देती जिसे विभिन्न परछाइयों ने असलियत से ज्यादा लम्बा कर दिया था। और आंखों के नीचे स्याह हल्के नजर आते और उसके मोटे चेहरे के उतराव-चढाव भयानक मालूम होने लगते। हमारे दाहिनी ओर दीवार में एक खिड़की थी जो हमारे सिरों के बराबर ऊंचाई पर थी। खिड़की के धूल-धूसरित शीशों में से मुझे नीले आकाश और मटर के छोटे-छोटे दानों की तरह जर्द सितारों के एक झुमके के अलावा और कुछ नजर नहीं आरहा था। आलसी, सुस्त नानवाई खर्राटे लेरहा था झींगर झन-झना रहे थे और चूहे कही कोई चीज खुरच रहे थे।

"लेकिन क्या तुम्हें भगवान पर विश्वास नहीं है ?" मैंने अपने मालिक से पूछा। उसने अपनी मुर्दा आंख तिरछी करके मुझे देखा और काफी देर तक कुछ जवाब न दिया।

'यह तुम मुझसे नहीं पूछ सकते ! तुम्हें मजाल नहीं है कि अपने काम की बात के अलावा और कुछ बात मुझसे पूछो। जो कुछ मेरा दिल चाहेगा मैं तुमसे पूछूंगा। और तुम्हें जवाब देना पड़ेगा आखिर तुम चाहते क्या हो ?'

यह मेरा अपना मामला है।"

वह सोच में पड़ गया और मुंह भींचे नाक से धीरे-धीरे सांस लेता रहा।

'यह क्या जवाब हुआ ? बदतमीज। शैतान ! '

उसने अपने नीचे से किताब निकाली और अपने घुटनों पर थपथपा कर फर्श पर फेंक दी।

"कहानी ! कौन जान सकता है मेरी कहानी। और तुम्हारी—तुम्हारी कोई कहानी ही नही है और न होगी कभी।"

वह एकदम हँस पडा—एक बेपरवाह हँसी। इस अजीव सुवकी-की-सी हल्की और मरी हुई आवाज से। मेरे दिल मे मुर्झाहट और मालिक के लिए सहानुभूनि का भाव पैदा होता था। और वह अपने बेडौल जिस्म को लिए झूम-झूम कर व्यगपूर्ण और तीखे स्वर मे कहता रहा

मै यह सव कुछ जानता हूँ। तुम जैसे मैने बहुतेरे देखे है। मेरी एक रखेल है जो मेरी एक दूकान मे सौदा वचती है। उसका एक भतीजा है जो ढोरो की डाक्टरी पढता है, घोडो और गायो का इलाज करना सीख रहा है। अव वह पक्का शरावी है और शरावी बनाया है मैंने। गालिकन है उसका नाम, कभी-कभी आता है मेरे पास शराव के लिए दस कोपेक लेन। विल्कुल फक्कड है। उसने यह जानने की कोशिश की थी कि दुनिया के कारोवार कैसे चलते है, वह भी वकवास किया करता था। लोगो में कही-न-कही सच्चाई जरूर होगी। मेरे दिल की गहराइयो में यथार्थ की खोज की धुन समाई हुई है तो फिर दिल की उन गहराइयो के वाहर भी कही सच्चाई मौजूद है। और मैं उसे शराव पिला-पिला कर नशे में धुत्त करता रहा। कम्वख्त पक्का शरावी वन गया, दीदे निकाल-निकाल कर मुझे घूरा करता। आँखें उसकी कोमल रमणी की-सी थी पर मै यह नही कहूँगा कि उनमें मक्कारी थी, वह अपने आपे ही में न रहता था। कहा करता 'वासिली सेम्योनोव तुम कुहरा हो। जिन्दगी में तुम एक भयानक मनुष्य हो।

तँदूर गर्म करने का समय हो गया था। मै उठ खडा हुआ और मैंने मालिक को यह वात वताई तो वह भी खडा हो गया। नाँद खोल कर आटे को थपका और वोला 'अच्छा तो यह वात है।"

वह टहलता हुआ मेरी ओर देखे विना ही वहा से चला गया।

मैंने सन्तोष की सास ली कि उसकी चिकनी-चुपडी और शेखी

नरी आवाज रुक गई थी और बेहूदा बातचीत का न्मार बेकरी मे बाहर चला गया था।

ब्रिस्किटो की बेकरी में नंगे पाँव चलने की आहट हुई और गुप्प अधेर में आर्तेम मुझसे टकरा गया। उसके बाल बिखरे हुए और उदास आँखे फटी-फटी-सी थी जसे कोई नीद मे चलने के रोग का शिकार हो।

"अच्छा तो इस प्रकार तुम्हे काबू मे किया जा रहा है।'

"हाय, तुम सोए नही ?"

"मालूम नही, दिल मे कुछ दद-सा हो रहा ह। ही ही तो इस नरह वह। "

'उसकी भी बडी मुश्किल है।"

हा, शायद ! बेकार आदमी है और सौदेबाजी मे नीचता करता ह। "

अब लडके ने नद्र के सहारे खडे होते हुए परिवर्तित स्वर मे जैसे नाही नरमरी तौर मे कहा

'मेरे नाई बचारे का इन लोगो ने अधमुआ कर डाला ह। क्या ख्याल ह तुम्हारा ? जिन्दा निकल जायगा वह अस्पताल से ?'

क्या बात कही ? हे भगवान दया कर ! "

वह एक झटके के साथ नद्र मे अलग होकर खडा हुआ और उदास स्वर में यह कहता हुआ बिस्किट की बेकरी मे चला गया।

'भगवान ने हमे कुछ नही मिलेगा। "

मालिक मे रात की ये बात एक निरन्तर और भयानक सपने की तरह जागी रही। हर रात पिछले पहर जब मुर्ग अजान दे रहे होते तो

जहन्नुम मे शैतान उछल-कूद करते होते। और मैं आग सुलगाने के बाद किताब हाथ मे लिये पढने को बैठता होता तो वह बकरी मे कहीं से आ टपकता।

गोल-मटोल और आलसी की नाई वह अपने कमरे से लुढकता हुआ निकलता और एक हाय के साथ तदूर के किनारे पर बैठ जाता। और तदूर के अन्दर उसकी टाग इस तरह लटक रही होती जैसे कि कब्र मे। अपना छोटा-सा पजा फैला कर लपटो के सामने करके अपनी मजरी आख चुधी करके देखता और पीली खाल मे से झलकते हुए सुर्ख खून को देखकर आप ही सराहता और फिर दो घण्टे तक अजीब और उकता देने वाली बातचीत जारी रहती।

साधारणतया बातचीत की शुरुआत अपनी बुद्धिमत्ता की डींगो से और अनपढ गवार की शक्ति से करता जिसने एक बडा कारोबार खडा कर लिया जिसे वह भूखो और चोरो का काबू मे करके उनकी मदद से चला रहा है। इस विषय पर वह बडी लम्बी-चौडी बाते करता रहता लेकिन एक प्रकार की ऊब के साथ। बीच-बीच मे एक लम्बे अव-काश के बाद और बार-बार सर्द आह इस तरह भर कर माना सीटियां बज रही हो। कभी-कभी ऐसा मालूम होता था जैसे वह अपनी व्यव-सायिक सफलताये गिनाते-गिनाते थक गया हो। और अपने ऊपर बडा जब्र करके उनका जिक्र कर रहा हो।

उसकी वास्तव मे अनुपम प्रतिभा पर अचरज करते-करते मैं काफी समय हुआ थक चुका था। सड-बुसे और सील हुए आटे का भाव-ताव करके सस्ते दामो खरीद लेने, फफूद हुए खराब बिस्किट मनो की मात्रा मे गाव के व्यापारियो के हाथ बेच देने मे उसे कमाल हासिल था। धोखेभरा साम्य और लज्जास्पद सादगी के साथ सौदागरों की ये धोखा-बाजिया विफल होकर रह गई थी और उन्होने मनुष्य के लोभ व मूर्खता को बडी निर्दयता से नग्न कर दिया था।

तन्दूर में जलती हुई लकड़ियों में से लपटें निकल रही थीं। मैं और मेरा मालिक तंदूर के आगे बैठे थे। उसकी तोंद की मोटी-मोटी शिकनें उसके घुटनों तक लटकी हुई थीं। भड़कती हुई आग की लाली उसके अंधियारे चेहरे पर कौंदे की तरह लपक रही थी। बाड़ के जुए की धातु की तरह उसकी फुल्ली, पथराई हुई और डबडबाई हुई आंख, किसी बूढ़े-फूस फकीर की आंखों के तुल्य थीं। और मजरी, बिल्ली के दीदों की नाईं चमकती हुई आँख बड़ी तेजी के साथ झपक रही थी और उसमें एक विचित्र प्रकार के जीवन की झलक आती थी। उसकी अजीब आवाज—कभी स्त्री की आवाज की तरह तेज और महीन हो जाती और कभी भारी चीख बन कर निकलती—संतोषपूर्ण और ग्लानिपूर्ण शब्द निकाल रही थी।

"तुम दूसरों पर हद से ज्यादा भरोसा करते हो और बहुत-सी ऐसी बातें कह जाते हो जो तुम्हें नहीं कहनी चाहिये। लोग दगाबाज होते हैं, उन्हें बड़ी सावधानी और खामोशी के साथ सम्हालना चाहिये आदमी को शेर की निगाह से देखो और एक शब्द न कहो। अपनी जबान बिल्कुल बन्द रखो। जरूरत ही नहीं कि वह तुम्हारी बात समझे। जरूरत इस बात की है कि वह तुमसे डरे और यही अन्दाज लगाता रहे कि तुम्हारा मकसद क्या है।"

"मेरा तो यह इरादा बिल्कुल भी नहीं है कि मैं लोगों को नभाऊं।"

"झूठ! इसके बिना तुम्हारा गुजारा ही नहीं हो सकता!"

उसने मुझे समझाना शुरू किया "कुछ लोग ऐसे होते हैं जिन्हें काम करना पड़ता है और बाकी ऐसे जो इन्तेजाम करते हैं। और अफसरों को इस बात की निगरानी करनी पड़ती है कि काम करने वाले व्यवस्थापकों की आज्ञा का बिना चूं-चरा के पालन करें।"

"जिनकी जरूरत न हो उन्हें लात मार कर निकाल बाहर करो। तेरे-मेरे का क्या काम?"

"और वे जाये कहा ?'

"मेरी वला से कही जाये । आवारा मर्द और चोरो के लिए— तमाम निकम्मे लोगो के लिए ही तो अफसर-हाकिम है । जो आदमी किसी काबिल होता है उसे अफसरो की ज़रूरत ही नही होती, वह खुद अपना हाकिम होता है। अब गवनर-जनरल से तो यह आशा नही की जा सकती कि उसे यह मालूम हो कि मेरे लिए कौन-सा आटा अच्छा है और कौन-सा नही । उसका काम तो यह जानना है कि कौन-सा आदमी काम का है और कौन-सा वेकार।"

कभी-कभी मुझे ऐसा लगता कि उसकी आवाज में भावुक उत्साह ह । शायद यह किसी और ही चीज की लगन थी, किसी ऐसी वस्तु की अभिलाषा जिसे वह स्वय भी नही जानता था। और मैं उसकी बात-चीत पूरी एकाग्रता के साथ और वडी उत्सुकता से सुनता ताकि उसका मतलब समझ में आजाय। और नये-नये शब्द सुनने की मैं सदैव प्रतीक्षा करता रहता।

तन्दूर के नीचे से चूहो, जली हुई चटाई और धूल आदि की दुर्गन्ध आ रही थी। चीकट दीवारो में से गर्म और सीले हुए भभके निकल रहे थे। फर्श वहुत ही गन्दा और पुराना हो चुका था । खिडकी में से छन-छन कर आने वाली चाँदनी ने फर्श की काली दरारो को और भी अधिक स्पष्ट वना दिया था। खिडकी के शीशो पर जगह-जगह मक्खियो के गुच्छे चिपके हुए थे। मालूम होता था कि मक्खियो ने खुद आकाश को भी दागदार वना दिया है। यह जगह वडी घुटी हुई, गु जान और इतनी गन्दी थी कि उसका साफ करना असम्भव था।

क्या एक आदमी का इस प्रकार जीवन व्यतीत करना शोभनीय है ?

मेरा मालिक एक-एक शब्द आहिस्ता-आहिस्ता टटोल कर वोल रहा था। इस तरह वोलते हुए देखकर सहसा उस अंधे फकीर की आकृति

आंखो मे फिर छाजाती थी जो अंधेरे में अपनी कपकपाती हुई उगलियो से अपने कासे मे पैसा–धेला टटोल रहा हो ।

"विज्ञान—अच्छा भई मान लिया ठीक है ! तो फिर कोई वैज्ञानिक मुझे आकर बताये कि मिट्टी या कीचड से आटा कैसे बनता है । और हॉ, देखो तो सामने एक भव्य इमारत है—विश्व विद्यालय कहते हैं उसे । वहाँ के छात्र युवा और दिल्लगीबाज हैं, शराबखानो मे मारे–मारे फिरते हैं । पी-पीकर बदमस्त हो जाते हैं और बाजारो ऊधम मचाते फिरते हैं । सेंट बेर्लाम के बारे में अश्लील व गदे गाने गाते हैं, पेस्की बाजार में वेश्याओं के यहाँ जाते है और आम तौर पर उनकी जिन्दगी पावन पादरियो की-सी होती है । "

और फिर उसके बाद अचानक कोई डाक्टर बन जाता है तो कोई जज, कोई शिक्षक बन जाता है तो कोई वकील । क्या तुम मुझसे आशा करते हो कि उन पर विश्वास करू ? क्यो वह तो शायद मुझसे भी ज्यादा बेईमान हैं । मुझे तो किसी पर भरोसा नही । "

और भ्रष्टाचारियो की तरह होठो पर जबान फेरते हुए उसने अत्यन्त भाडे तथा ग्लानिपूर्ण विवरण के साथ बताना शुरू किया कि विद्यार्थी लडकियो के साथ किस प्रकार का व्यवहार करते हैं ।

स्त्रियो के सम्बन्ध मे वह बडी देर तक बाते करता रहा । उसका ढग बडा अरोचक एव रूखा था । एक विलक्षण एकाग्रचित्तता के साथ वह बोल रहा था और उसकी आवाज शनै शनै धीमी होते-होते मात्र खुसर-फुसर मे परिणत होगई थी । औरतो की शक्ल व सूरत का वह कभी जिक्र नहीं करता था बल्कि उनकी छातियो, जांघो और टांगो का विवरण से वर्णन करता था । उसके ये किस्से मुझे बडे असह्य मालूम होते थे ।

'तुम सब देखो अन्त करण की और खरेपन की बाते करते रहते हो । मै तुमसे ज्यादा बुरा आदमी हूं, तुम उद्दण्ड तो जरूर हो लेकिन मेरे

या स्पष्टवादी नही, जरा भर भी नही। मुझे तुम्हारी दो-एक हरकत मालूम हैं। अभी थोड़े ही दिन हुए तुमने शराबखाने मे एक अखबार के प्रतिनिधि से कहा था कि मेरे यहा आटे की नांदो मे सड़ांद है आटे का खमीर उठता है तो सारा फर्श पर वह निकलता है। झींगरो की भरमार है और कारीगरो को आतशक है, हर जगह गदगी है।"

तुमसे भी तो कहा था यह सब कुछ मैंने।"

हैं, कहा तो था। लेकिन यह तो नही कहा था कि तुम यह सूचना अखबारो को देना चाहते हो? अच्छा अखबारो में ये सब बातें प्रकाशित हुई, पुलिस आई, सफाई के महकमे वाले भी आये। मैंने पाँच-पाच के बीस नोट उनमे बाँट दिये। और देख लो, क्या बिगाड लिया किसी ने मेरा?" उसने अपना हाथ चक्र की तरह अपने सीने पर फिराया और बोला देखा तुमने! जो पहले था सो अब भी है—झींगर सब मौजूद है, मजे से उछलते-कूदते फिरते हैं। धरे रह गये तुम्हारे अखबार, तुम्हारा विज्ञान, तुम्हारा अन्त करण! अरे बोडम, तेरी समझ मे यह नहीं आता कि उल्टा तुझ पर ही वार हो जाता। आस-पास की सारी पुलिस मेरी जब मे है। सब अफसर मेरे इशारो पर नाचते है तुम्हारी एक नही चलेगी। और तुम इसके खिलाफ डट कर खडा होना चाहते हो जैसे कोई झींगर कुत्ते के मुकाबिले मे आखडा हो, हह! तुमसे बातें करने से तो मुझे मतली आने लगती है।'

वास्तव में ऐसा प्रतीत होता था कि उसको मतली हो रही हो उसका मुँह उतर जाता, मारे थकावट के उसकी आखें बन्द हो जाती और वह एक हल्की-सी आवाज के साथ जम्हाई लेता। उसके खुले हुए सुर्ख जबडो मे कुत्ते जैसी पतली-सी जबान दिखाई देने लगती।

उससे मुलाकात होने से पहले मै इन्सानी गदगी, निर्दयता और मूर्खता बहुत कुछ देख चुका था। और भलाई तथा वास्तविक मनुष्यता से भी कुछ कम मेरा वास्ता न पडा था। मै कुछ अत्यन्त सुन्दर पुस्तकें

पढ चुका था और मैं जानता था कि मुद्दतों से और हर जगह लोग एक विभिन्न प्रकार के जीवन के स्वप्न देख रहे हैं और यह भी कि कुछ जगहों पर उन्होंने अपने सपनों को व्यवहारिक रूप देन के लिए कोशिशे भी की थी । और अब भी वे उनकी पूर्ति के लिए सचेष्ट थे । और वर्तमान परिस्थिति से असन्तोष के मेरे दूध के दांत अर्सा हुआ टूट चुके थे और अपने उस मालिक से मुलाकात होने से पहले तक मुझे विश्वास था कि मेरे ये दांत काफी मजबूत हैं ।

अब ऐसी हर बातचीत के बाद मुझे पहले से ज्यादा अच्छी तरह और अफसोस के साथ अनुभव होता कि मेरे विचार और स्वप्न कितने क्षीण और क्रमहीन हैं । मेरा मालिक उन्हे किस तरह तार–तार कर रहा था, उनके अंधकारमय पहलू मुझे दिखा रहा था और मेरा दिल दुखद संदेहों से डूबने लगा था । मैं जानता था, मुझे अनुभव था कि मेरी हर आस्था का संतोष के साथ विरोध करना उसकी गलती थी और मैंने एक क्षण के लिए भी अपने सिद्धांतो की सत्यता पर शक नहीं किया । लेकिन इस सच्चाई पर वह जो कीचड उछालता था उससे उसे बचाना मेरे लिए कठिन था । अब प्रश्न यह नहीं था कि मैं उसे झुटलाऊं बल्कि अब समस्या थी अपनी अन्दरूनी दुनिया की सुरक्षा की जिस पर मालिक के नकचढ़ेपन के सामने मेरी अपनी अयोग्यता की घातक भावना आक्रमण कर रही थी ।

उसके भद्दे और भारी मस्तिष्क ने पूरी जिन्दगी को इस तरह टुकड़े-टुकड़े कर दिया था जैसे कोई किसी जिस्म को कुल्हाड़ी से काट डाले और उन टुकडों का एक ढेर-सा उसने मेरे सामने लगा दिया था ।

आत्मा और परमात्मा के बारे में उसकी बातों ने मेरी तरुण उत्सुकता को जगा दिया था । मेरी हमेशा यही कोशिश होती थी कि बातचीत का रुख इन समस्याओं की ओर मोड़ दूं । शायद मेरी इन कोशिशों को महसूस न करते हुए मेरा मालिक यह साबित करने लगता कि

जिन्दगी के रहस्यो और घातो से मैं कितना अनभिज्ञ हूँ ।

'जिन्दगी तेर करना वडी सावधानी का काम है । जिन्दगी इन्सान से हर चीज की माँग करती है—यो समझो जैसे कोइ रखेल, लेकिन उससे क्या तुम कुछ अधिक मागते हो ? नही, सिर्फ एक चीज–मजा ! मक्कारी और चालाकी भी जीवन के लिए अत्यावश्यक है । खुशामद–दरामद से काम निकल सके तो निकाल लो अगर यह न कर सको तो झपट लो या लेकर डण्डा मारो—तडाख ! और फिर जिन्दगी तुम्हारी लौंडी है ।'

यदि उसकी बातो पर झल्लाकर मै सीधे प्रश्न करने लगता तो तो वह उत्तर देता

'इससे तुम्हारा कोई वास्ता नही । मैं भगवान में विश्वास रखता हूँ या नही इसका उत्तरदायी मै हूँगा, तुम नही ।"

और जब मै अपनी मनोनीत समस्याओ पर बातचीत शुरू कर देता तो वह अपना सिर इस तरह हिलाता मानो कोई सुभीताजनक स्थिति ज्ञात करना चाहता हो । अपना छोटा-सा कान मेरे मुंह की ओर झुका देता और बडे सन्तोष व धैर्य के साथ बैठा सुनता रहता । इस स्थिति में हमेशा ही उसकी पकौडा-सी नाक वाले चपटे चेहरे पर उदासीनता के भाव उभर आते । उस चेहरे को देखकर तांबे का वैसा ही ढंकना अनायास स्मरण हो आता जिसके बीच में एक मुठिया लगी हो ।

वेदना का एक कटु भाव मेरे हृदय में जम गया था, उसका कारण मेरा व्यक्तित्व न था । घृणा करते-करते जब मै थक चुका था और जिन्दगी की ठोकरें काफी खामोशी के साथ सहन कर लेता और उन्हे हेय समझ कर उनके सामने डट जाता था । वल्कि इस अनुभव का आधार वह सत्यता थी जो मेरी आत्मा मे घुस आई थी । और वही विकसित हो रही थी ।

जब मनुष्य अपनी प्रिय और जीवन की महत्वपूर्ण तथा प्राप्य वस्तु

की उसके लिए शोभनीय सुरक्षा करने का अपने को अपात्र समझता हो तो उसका अनुभव अत्यन्त दुखदाई और उसकी वेदना व कसक नितांत तीव्र हो जाती है। मनुष्य के लिए उसके दिल की बेजबानी से ज्यादा तेज और कोई चीज नहीं होती ।

चूँकि हमारा मालिक रात को आकर मुझसे बातचीत किया करता था इसलिए कारीगरों की निगाहों में मुझे एक विशेष महत्व मिल गया था। कुछ लोग जो मुझे खतरनाक आदमी समझते थे और बाकी जो एक विचित्र व्यक्ति तथा सनकी समझा करते थे अब उन्होंने अपनी राय बदल दी थी। अधिकतर कारीगर मेरे सौभाग्य पर मुझसे अपनी नफरत व जलन छिपाने की असफल चेष्टा करते और मुझे एक अत्यंत धूर्त व्यक्ति समझते थे जो अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए कोई बड़ी गहरी चाल चल रहा हो।

कुज़िन ने अपनी मैली, धूल भरी छोटी-सी दाढ़ी पर हाथ फेरते और अपनी चंचल आँख को कहीं एक कोने में छिपाते हुए आदर के साथ कहा

"अच्छा भाई, अब तो तुम बहुत जल्दी हाकिम बना दिये जाओगे, और अब आश्चर्य की कोई बात भी क्या है इसमें ?"

किसी ने और न उसका साथ दिया

"हमें डराने-धमकाने के लिए ।"

मेरी पीठ पीछे और भी कई कटु वाक्य सुनाई दिये

जिनके मुँह में जबान हो वह तो लेकर क्या करेगा और जाने ना

रास्ता भी तलाश कर सकता है ।"

'घ्न खिलाओ इसे ।"

और बहुत-से तो अब मेरी आख के इशारे की प्रतीक्षा करते कि फौरन ही एक अनेच्छा भरी आज्ञाकारिता से आज्ञा का पालन करें।

आर्तेम, यान्का और उनके अलावा दो-एक और कारीगरो ने जिनसे मेरी मित्रता हो गई थी अब अपने इन सम्बन्धो में मेरी बातो पर अतिशयोक्ति पूर्ण गौर करना भी शामिल कर लिया था। एक दिन मेरा सन्तोष समाप्त हो गया और मैंने नाराज होकर बजारे से कहा कि मैं इस हरकत को बिल्कुल अनावश्यक और बहुत ही दोषपूर्ण समझता हूँ।

अच्छा बस रहने दो, मेरी बात मानो !" उसने मेरा मतलब समझते हुए कहा और शरारत में अपनी आंखें चढाली। "अगर हमारा मालिक जो हम सबसे ज्यादा चालाक है तुमसे अपने मामलो पर बहस करता है तो मेरा विचार है कि तुम्हारे पास भी बडे-बडे गर हैं।"

दूसरी ओर शातुनोव, जो सदैव खिचा-खिचा और खामोश रहता था अब मेरे बहुत निकट आगया और दिन-प्रति-दिन अधिक विश्वास करने लगा था। जब कभी हमारा आमना-सामना हो जाता तो उसकी उदास और रहस्यमयी आखे चमक उठती और उसके मोटे-मोटे होंठ आहिस्ता-आहिस्ता फैल कर मुस्कराने लगते और उसके कठोर, पथरीले चेहरे मे परिवर्तन झलक उठता।

क्यो, अब तो आराम से हो ?'

'आराम से तो नहीं हा सफाई से ।"

'सफाई अगर है तो उसका अर्थ है आराम !" वह उपदेशकों की तरह कहता, फिर एक कोने की तरफ निगाहे फरकर जैसे बिना किसी इरादे के पूछता

'नादरसन माम् क्या है, जानते हो ?"

ऐसे ही शब्दो का उसके पास भण्डार था। और जब वह अपनी

भारी व भयानक आवाज मे उनका उच्चारण करना तो बडा ही विचित्र-सा लगता । और उनमे एक प्रकार की प्राचीन, कल्पित कथा का आभास होने लगता था ।

"ये शब्द तुम कहाँ से सीख लेते हो ?" मैंने एक बार चकित हो पूछ ही लिया। मेरी उत्सुकता चरम सीमा को पहुच चुकी थी। उसने भी जरा सम्हल कर प्रश्न किया

"तुम्हे आखिर यह जानने की लालसा क्यो है ?"

फिर दुबारा मानो मुझे गच्चा देने की चेष्टा करते हुए वह अचानक एक सवाल और कर बैठा

"हर्नी का क्या अर्थ है ?"

कभी-कभी किसी दिन शाम को काम के बाद या किसी छुट्टी के दिन नहाने-धोने से निपट कर बजारा और आर्तेम मेरे पास आ धमकते और उनके पीछे ही पीछे ओसिप शातुनोव भी आ घुसता। हम एक अंधियारे कोने मे तंदूर के मुंह के इर्द-गिर्द बैठ जाया करते। मैंने यह कोना झाड-पोछ कर और धो-धुला कर साफ व आरामदेह कर लिया था। दाहिनी बाजू और पीठ के पीछे बडे-बडे ताक थे। उनमे डबल रोटियो के सांचे रखे थे, जिनमे खमीरी आटा फूल कर उभरा हुआ था। उन्हे देख कर यह गुमान होता था कि जैसे गंजे सिर छिपे हुए हो और दीवारो से झांक कर हमे देख रहे हो। टीन की एक बडी चायदानी मे से गहरे रंग की चाय निकाल-निकाल कर हम लोग पीने लगते। याश्का सलाह देता

"अच्छा तो अब हमे कुछ सुनाओ, या ऐसा करो दो-चार कविताएं ही सुना दो !"

स्टोव के ऊपर रखे हुए मेरे सन्दूक मे मेरे पास पुश्किन, इचरानिना और सुरिकोव की कविताओ के संग्रह थे—बड़े और छोटे छोटे खण्ड जो मैंने पुरानी किताबे बेचने वालो की दुकान से खरीदे थे। मैं बडे जोशीले ढंग से गुनगुना कर पढ़ने लगता

किस कदर ऊंचे हैं ऐ इन्सान तेरे सारे काम
तूने दुनिया को दिया है एक जैसा ही निजाम
कितने दिलकश, कैसे हैरतखेज, कितने शानदार
पड रही है खुद खुदा के नूर की जैसे फुहार
तू ही देता है हमें सच्ची मुहब्बत बेहिसाब
और सबको अपने-अपने काम का सच्चा जवाब

पाश्का ने आहिस्ता-आहिस्ता आंखें झपकाते हुए इधर-उधर से किताब को झांक कर देखा और आश्चर्यचकित होकर बडबडाया

'वाह क्या खूब ! बिल्कुल बायबिल की तरह ! अरे, गिरजे में यही गीत गाया जा सकता है तो भगवान मेरी सहायता कर ।"

कविता लगभग सवदा ही उसके भावों में उत्तेजना-सी उत्पन्न कर देती थी और उस पर एक पश्चाताप की स्थिति छा जाया करती थी। कभी-कभी जो पद उसे बहुत अधिक प्रभावित करते उन्हें वह हाथ हिला-हिला कर अपने घुंघरियाले बालों को मुट्ठी में भींच कर और बडी निर्भीकता से गालियाँ देकर, जमा-जमा कर दोहराता

वाह, वाह क्या खूब कहा है !"

जब लिखी है मेरी किस्मत पर सदा यह मुफलिसी
सारी उम्मीदें भुलादे अब तो अच्छा है यही

अरे वाह ! क्या कहा है ! भगवान की कसम कभी-कभी तो भाई अपनी जिन्दगी पर ऐसा ही दुःख होता है। बरबाद हो जाती है व्यर्थ नष्ट हो जाती है। ऐसी कसक होती है कि दिल को मसोस कर रख देती है—ऐसी कि नरक से भी बदतर। कोई करे तो क्या करे ? डाकू बन जाय ? एक छोटे-से पत्थर से तो चिड़िया भी नहीं मारी जा सकती और तुम हो कि हमसे कहते रहते हो—लडको मिल-जुल कर रहा करो ! दोस्तों की तरह रहो ! हे भगवान !"

आर्तेम कविता सुनते समय ऐसी आवाजें निकालता जैसे कोई चीज

निगल रहा हो। होंठो पर इस तरह जीभ फेरता मानो कोई गरम-गरम स्वादिष्ट चीज खा रहा हो।

प्राकृतिक दृश्यों के वर्णन पर वह सदा चकित होकर रह जाता था।

सिरों पर सुनहरे दरख्त जगमगाये
दरख्त झील पर है खड़े सर झुकाये

"ठहरो! उसने विस्मित होकर और खुशी से उछल कर कहा। और जब उसने मेरा कंधा पकड़ कर मुट्ठी में भींचा तो उसका चेहरा मारे खुशी के दमक रहा था, "मैंने भी देखा है! आस्के के समीप! वहां के एक सामन्त के इलाके में! हे परमात्मा मेरी मदद कर!"

"अच्छा तो इसमें क्या हुआ?" याश्का ने झल्लाकर पूछा।

"लेकिन तुम समझे क्यों नहीं? मैंने यह हाथ देखा है और इसी पर यह पद भी लिखा हुआ है।"

"भीड़ में मत खोना! बेकार बकवास लगा रखी है।"

एक बार आतम सुरिकाज़ की कविता 'गांव में' ने बड़ा प्रभावित हुआ। बाद कोई तीन-चार दिन तक वह उस कविता को एक पुरानी नाटिक गीत की लय पर गाता फिरा यहां तक कि लोग सुनते-सुनते उकता गये

चल रहे योगी जारी है सफर
जा रहा है मैं खुदा जाने किधर
है किन परवाह कुछ ही क्या नहीं
चलता फिरता रहे चाहे जिधर
जानता है इस सफर का खात्मा
पहुंचा देगा आखिर अपने घर

दानुनाव पदा न कविता। ... प्रभावित न होता था और न कविताएं बिल्कुल उदासीन। ... सुनता रहता था। पर ...

वह एक शब्द को ही पकड कर बैठ जाता और उनके अर्थ को समझवाये बिना पीछा न छोडता था।

'एक मिनट ! एक मिनट ठहरो ! वह क्या है ?—कब ?"

शब्दों के पीछे उसकी इस भाग-दौड से मैं बडा अचम्भित था और मुझे इसका पता लगाने की उत्सुकता हुई कि आखिर वह मालूम क्या करना चाहता है।

एक बार सवालों व आग्रहों की बौछार समाप्त होने के बाद ओसिप ने कुछ बडप्पन-भरी मुस्कान के साथ यह रहस्य भी खोल ही दिया

क्यों तुम भी कारण जानने के लिए उद्विग्न हो ?"

फिर रहस्यमय ढंग से चारों ओर देखते हुए उसने आहिस्ता-आहिस्ता खुसर-पुसर के स्वर में कहा

दरअसल एक ऐसा रहस्यमय पद है कि जिस किसी को भी मालूम हो जाय वह जो चाहे सो कर सकता है ! लेकिन कहते है कि अब तक पूरा पद किसी को मालूम नही है। इस पद के सारे शब्द विभिन्न लोगो में बाट दिये गये है और ये लोग सारी दुनिया मे फैले हुए है और उस समय तक फैले रहेगे जब तक कि नियत घडी न आ पहुँचे। अच्छा—तो भई इन तमाम शब्दो को एकत्र करना है और उन्हे जोड कर पूरा पद बनाना है।'

उसकी आवाज और भी धीमी हो गई और वह बिल्कुल ही मेरे ऊपर झुक गया।

'अरे इस पद को हर तरफ से पढा जा सकता है, चाहे आदि से पढो चाहे अन्त से अर्थ एक ही निकलता है। मेरे पास कुछ शब्द तो एकत्र हो चुके हैं। अस्पताल में एक खानाबदोश ने मरने से पहले मुझे बताये थे। समझे भाई, तो ये खानाबदोश दुनिया भर में मारे-मारे फिरते है और जहा कही भी इन्हे ये गुप्त शब्द मिलते हैं वे याद कर लेते हैं। जब वे सब शब्द याद कर ले तो फिर सभी को इसकी खबर

हो जायगी ।"

"वह कैसे ?"

उसने अविश्वास से मुझे सिर से पाँव तक गौर से देखा और कुछ नाराजगी के स्वर में कहा

"कैसे, कैसे ! तुम खुद भी तो जानते हो. ।"

"भई धर्म-ईमान से कहता हूँ मुझे कुछ भी तो नहीं मालूम ।"

"अच्छा, अच्छा ।" वह जाने के लिए मुड़ते हुए गुर्राया, "बस बनो नहीं ।"

और एक रोज सुबह आर्तेम दौड़ा-दौड़ा मेरे पास आया । वह बड़ा ही [illegible] था, उसकी साँस फूली हुई थी । हाँपते हुए बोला

"[illegible] मैंने भी अपने आप एक पद रचा है, सचमुच रचा है ।"

"अच्छा ?"

"मैं सच कहता हूँ जो चोर की सजा सो मेरी । शायद मैंने सपने में देखा था क्योंकि मैं सोकर उठा और लो पद तैयार । मेरे दिमाग में किसी [illegible] की तरह लगा रहा है [illegible] । तो सुनो ।"

तब तन कर खड़े होकर उसने बड़े जोरदार अंदाज में लेकिन आहिस्ता-आहिस्ता गुनगुनाते हुए पढ़ना शुरू किया

हो रहा है [illegible] दरिया में [illegible] आफताब
[illegible] में [illegible] जाता है अब उसका शबाब
और नदियाँ अपने [illegible] चल पड़ीं
और [illegible] [illegible]

"क्यों यह कविता कैसी रही ?"

[illegible]

घबराहट से तग आकर हाथ हिलाते हुए कहा

'भूल गया, मारो गोली। बिल्कुल ही याद नही रहा।"

और बेचारे की आँखो से टप–टप आँसू गिरने लगे—उसकी बडी-बडी आँखो से आँसुओ की सरिता–सी बहने लगी। उसका भयभीत, मुर्झाया हुआ चेहरा भौचक्का–सा हो गया था। और उसने सीने के ऊपर से दिल को सहलाते हुए अपराधी की नाई कहा

'देखो तो, च च कितना अच्छा पद था दिल को लगता था हाय तुम समझते हो मैं मजाक कर रहा हूँ ?"

सिर झुकाये वह एक कोने की ओर चल दिया और वही कधे व कमर झुकाये खडा रहा। फिर चुपचाप अपना काम करने चला गया। सारा दिन वह खोया-खोया और उदास रहा। और शाम को शराब इतनी पी, इतनी पी कि बदमस्त होगया और बात-बात पर लड़ने-मरने को तैयार होगया। चीख कर बोला

'कहाँ है याश्का, ? क्या होगया मेरे छोटे भाई ? अरे भगवान तुम्हे समझे "

कारीगर उसे खूब पीटना चाहते थे लेकिन बजारे ने उसका पक्ष लिया और हमने बदमस्त आर्तेम को बोरियो में लपेट कर सुला दिया।

सपने में जो पद उसके मस्तिष्क मे आये थे वे उसे फिर कभी याद न आये।

बेकरी और हमारे मालिक के कमरे के दरम्यान लकडी के पतले–पतले तख्तो की एक दीवार थी जिस पर कागज चढा हुआ था और

अक्सर जब मैं जरा ज़ोर से पढ़ना शुरू कर देता तो मालिक नन्दो की दीवार पर ज़ोर से मुक्का रसीद करके मुझे भी चौंका देता और झींगरों को भी। मेरे साथी चुपचाप सोने चले जाते। उछलते-कूदते झींगर रटे हुए कागज़ में मशगूल रहते और मैं अकेला रह जाता।

लेकिन कभी-कभी ऐसा भी होता कि हमारा मालिक अचानक आधी रात दबे पाँव खामोशी के साथ काले बादल के एक टुकड़े की तरह तैरता हुआ दरवाज़े से दाखिल होता और बिना आहट के हमारे कमरे में आ खड़ा होता और दाँत कटकटा कर कहता

'आधी-आधी रात तक जगे रहो कमबख्तो कि और सुबह न जाने कब तक पड़े खर्राटे लेते रहना।'

यह बात और इसके लोगों के लिए था। मुझ पर वह यों गुर्राता

"अरे भागे ... रात की गाड़ियाँ फिर आ गईं क्या तुमको? देखो ऐसी किताबें पढ़-पढ़ कर उनके दिमाग खराब न हो जाय और जब ... पर उतर आएँ ... कहीं तुम्हें ही सबक पढ़ाकर अपना निशाना न बना दें।"

... तब ... दिमाग के लिए। ... नहीं। ... हमारे पास फर्श ...

... भी ... हुए। ... भी ... आ ...

जाता।

और कभी एसा होता कि वह थकी हुई गमगीन आवाज मे यह कहता हुआ हम'रे साथ शामिल हो जाता।

"अरे लडको,. .नीद नही आती चूहे खडवड–खडवड कर रहे हैं, कमबख्त ! बाहर बफ चुरमुरा रही है।—लानत हो इन विद्यार्थीयो पर, मटरगश्त करते फिर रहे हैं।—दुकान के अदर-बाहर लडकियाँ–ही–लडकियाँ हैं। अन्दर आती हैं आग सेकने वेश्याए कही की ! तीन कोपेक की एक खरीदी और आध घण्टे तक आग तापने को अन्दर ही टहलती फिरी।'

बस फिर क्या था हमारे मालिक की फलसफावाजी शुरू होजाती।

सब ऐसे ही होते हैं दो कुछ नही और लो सब कुछ। तुम भी—तुम लोग भी बस इस फिक्र में रहते हो कि कोई आसान-सा काम मिल जाय। बस यही तुम्हे आता है। जितनी जल्दी हो सके काम छोड-छाड चल दो। और खाक छानते फिरा गली कूचो की ! "

पाश्का चूकि कारखाने का सरदार था इसलिए यह बात उसे काट की तरह चुभती और वह तडप उठता, फिर स्वामरवाह की बहस छिड जाती

तुम अब भी सन्तुष्ट नही हो, वासिली सेम्योनिच ! अब भी हम जिन्नात की तरह काम करते है, समझे ! हाँ, यह सम्भव है कि जब तुम स्वय काम करते थे तब वैसा ही "

हमारा आका भूली-विसरी बातो का स्मरण पसन्द नही करता था। थोडी देर तक तो वह नानबाई की बाते खामोशी से सुनता रहा, उसके होठ भिच गये और मॅजरी आख कठोरता से उसे घूरती रही फिर उसका मेढक-जैसा मुँह खुला और अनुनासिक ध्वनि में उसका भाषण उमड पडा

"बीती ताहि बिसार दे आगे की सुध ले ! पहले की पहले में रही, तो मैं तुम्हारा आका हूं और जो मुझे रुचे, कर सकता हूं—कानून कि तुम्हें मेरी आज्ञा का पालन करना पड़ेगा समझे ? हां बड़बड़िये पड़े जाओ ।"

एक दिन मैंने 'डाकू बन्धु' शीर्षक कविता पढ़ी। सबने यह कविता पसन्द की और उसने रस लिया । यहां तक कि हमारे मालिक ने भी विचार-मग्न होकर सिर हिलाते हुए कहा

'ऐसा हुआ होगा क्यों नहीं ? हो सकता था ऐसा । इन्सान सब कुछ हो सकता है सब कुछ !"

[illegible] ने नाक-भौं सिकोड़ी और सिगरेट अपनी उंगलियों में दबा कर उस पर जोर से फूंक मारी और आईने में एक हल्की-सी मुस्कराहट के साथ [illegible] करने के लिए सचेष्ट था।

भाई मेरा और मैं ! हम थे फकत दो ही जने
और न था [illegible] राशी में पुर अपने लिए

[illegible] अन्दर [illegible] का [illegible] रहा था, और वही [illegible] हुए था ।

'तुम्हें [illegible] अच्छी कविता आती है । [illegible]"

'[illegible] तो फिर सुन लो भी !" हमारे मालिक ने [illegible] की ओर [illegible] पर टांगें जमा कर व्यंग्यपूर्ण ढंग से [illegible] कर कहा । आखिर [illegible] गया कि उसकी गर्दन तक लाल हो गई और उसके कान [illegible] लगे ।

'तुम्हें याद नहीं आएगी अब [illegible]"

'[illegible], [illegible] !" [illegible] ने [illegible], "कोई तुम्हारी जबान नहीं पकड़े रहा ।"

[illegible]

[illegible]

लो । "

शातुनोव ने लाचारी और अपराधी की-सी निगाहो से मेरी ओर देखा, फिर मालिक की ओर, और एक गहरी सास ली ।

"अच्छा तो सुनो ।"

अब भी तंदूर की खोह में घूरते हुए—जहा डबलरोटी के टूटे हुए सांचे, लकडियां और भाड़ुएं बिखरी पडी थी और जो एक ऐसे अधखुले काले मुंह की भाति दिखाई दे रहा था जिसमें बिना चबाया हुआ ग्रास पडा हो । उसने अपनी भारी आवाज मे गाना आरम्भ किया

वोल्गा के करीब एक रहजन
झडियो में पडा था खस्तातन
उसके सीने पर था जख्म कारी
और हगामे मौत था तारी
आखीरी वक्त में दुआ के लिए
जख्म अपना दबा के हाथो से
पहले घुटनो के बल वह बैठ गया
गिडगिडा कर यह फिर खुदा सेकहा
रूह बदकार है मेरी यारब
यह गुनाहगार है तेरी यारब
तू मेरी रूह को जुदा कर दे
जिस्म की कैद से रिहा कर दे
कितनी बदकार है यह मेरी रूह
हां गुनाहगार है यह मेरी रूह
जबकि अहदे शबाब था मुझ पर
मुझको अनगा था राहिने खुशबू
आज मैं बन गया मगर डाकू

शातुनोव गुनगुनाकर कविता पढ रहा था । अपनी कमर दुहरी करके

और अपने नगे पांव का अँगूठा हाथ में दबोचकर उसने अपना चेहरा छिपाया हुआ था और न जाने क्या वह अपना पांव निरन्तर उठाता रहा। ऐसा प्रतीत होता था कि जैसे वह कोई जादू कर रहा हो और बार-बार कोई मंत्र पढ़ता जाता हो—

कारनामों में सरफ़रोशी के
उम्र अपनी गुज़ार दी मैंने
जो बहादुर हो खौफ़ क्या जाने
मुझको अच्छे लगे न हंगामे
जिन्दगी काट दी समझने में
मैंने उस रूह को परखने में
सुबह हस्ती की शाम कर डाली
अपनी हस्ती तमाम कर डाली
उम्र भर सोचता रहा हूँ मैं
[illegible] पूछता रहा हूँ मैं
[illegible] ने सिखा मुझको दी है
[illegible] आशिगन है गर्दी है
[illegible] नाग़ाज
[illegible] बाज़मनाज
[illegible] शहज़ादा
[illegible] दिलशादा
[illegible]

"ठहरो तो, वासिली सेम्योविच !" बजारे ने उसकी बात काटकर झल्लाकर कहा, "खत्म तो कर लेने दो उसे !"

परन्तु मालिक सुनी-अनसुनी करते हुए भावावेश में कहता ही गया "यह तो बिल्कुल नीचता है ! तेरी आत्मा, मेरी आत्मा पहले तो खूब गुलछर्रे उडाए, फिर डर गया और हाय-तोबा करने लगा हे भगवान, हे भगवान ! भगवान का इससे क्या वास्ता ? पहले तो खूब छककर पाप किये और अब उसके परिणाम से नानी मरती है ! "

उसने जम्हाई ली और मैं समझता हूँ, जान-बूझकर ली । फिर भर्राई हुई आवाज में कहा

"आत्मा, आत्मा ! और है नही कौडी बराबर महत्व की ।"

बर्फ का तूफान खिडकी के शीशो को अपने कुरूप पजो से नुच रहा था । मालिक ने खिडकी को कनखियो से देखा और फिर एक ही साँस में कहना शुरू किया

"मुझसे पूछो तो जो व्यक्ति अपनी आत्मा की बड हाँकता है, उसे जरा भी अक्ल नही है । उससे कहा अच्छा भई, तुम्हे यह काम इस तरह करना चाहिए और वह कहता है मेरी आत्मा ने इसकी अनुमति नही दी ।—अन्त करण कहो या कुछ और जब तक कोई किसी काम के करने से झेपता रहे उसका फल एक ही जैसा होता है, उसे आत्मा कहो या अन्त करण । कोई समझता है कि हर चीज निषिद्ध है । वह जाता है और साधु बन जाता है । कोई और व्यक्ति है जो समझता है कि कोई वस्तु निषिद्ध नही है—वह डाकू बन जाता है । ये दो प्रकार के मनुष्य है, एक प्रकार के नही । और उन्हे एक दूसरे के साथ गडबड नही करना चाहिए । जो काम करने का है वह तो करना ही होगा । और जब कोई काम करना ही है तो अन्त करण तन्दूर मे जाकर ही छिप जायगा और आत्मा पडोसिन से मिलने चली जाएगी ।"

बहुत बेढंगेपन से उसने अपनी टाँगे घसीटी और खड़े होकर किसी पर नजर डाले बगैर ही अपने कमरे में चला गया।

'अच्छा, अब जाओ सो रहो । बैठे हुए उपदेश दे रहे हो, हूह! आत्मा! भगवान से प्रार्थना करना बड़ी साधारण बात है और डाकू बन जाना बड़ी बहादुरी नहीं है, हरगिज नहीं। अरे मूर्खो! कुछ काम करो काम! हाँ!!"

किवाड़ बन्द करके जब वह चला गया तो बजारे ने शातुनोव के कुहनी मारते हुए कहा

'हाँ तो फिर आगे सुनाओ वह गीत!"

[illegible] ने अपना सिर उठाया, एक सिरे से दूसरे सिरे तक सब पर दृष्टि दौड़ाई और फिर दबे स्वर मे कहा

'[illegible]!"

[illegible]?"

'[illegible], आत्मा तो है उसके भी। लेकिन उसे सुख-चैन नसीब नहीं है। [illegible]!"

'[illegible] तुम कहो क्या कहते हो?"

[illegible] वह [illegible] निकला और [illegible]

[illegible]!"

[illegible]!"

नहीं, नहीं [illegible] नींद [illegible] रही है।"

[illegible] तुम्हारी [illegible] कोशिश [illegible]!"

नहीं, [illegible] नींद [illegible] रही है।"

[illegible]

[illegible]

[illegible] जिन्दगी [illegible]!"

"वास्तव मे ?" आर्तेम वडवडाया। "और हमें पता ही नही—धन्यवाद !"

वजारे ने वडी सफाई से अपने लिए एक सिगरेट वनाई और ओसिप की परछाई अँधेरे मे लुप्त होती देखते हुए सरगोशी के अन्दाज मे कहा

'इस आदमी का दिमाग कुछ कमजोर मालूम होता है।'

फरवरी का वर्फानी तूफान आया हुआ था, हवा चिंघाड रही थी, खिडकियाँ सिर पीट रही थी, धुंआकश मे तेज हवा घुसकर सीटियां वजाने लगती थी। वेकरी के निविड अन्धकार मे तेल का टिमटिमाता लैम्प रोशनी पैदा करने की असफल चेष्टा कर रहा था और अँधेरा काँपता हुआ नजर आ रहा था। सर्द हवा की लहरें कहीं से बराबर अन्दर आ रही थी और टागें ठण्डी वर्फ हुई जा रही थी। मैं आटा गूंथ रहा था और मालिक नाँद के पास आटे के एक वोरे पर वैठा कह रहा था

'जब तक तुम जवान हो, हर वात पर गौर करो। जब तक कोई पेशा-विशेष न अपना लिया हो, हर प्रकार के काम के बारे मे सोचो। हर पहलू पर दृष्टिपात करो। शायद कोई ऐसा काम सूझ जाए जो तुम्हारे लिए उचित हो। वस जरा सोचलो—ऐसी कोई जल्दी नहीं है।"

वोरे पर वैठे हुए उसने अपने घुटने फैला रखे थे। एक पर उसने शराब का एक कनस्टर टिकाया हुआ था, और दूसरे पर रद्दी गरम

वहुत वेढगेपन से उसने अपनी टाँगें घसीटी और खडे होकर किसी पर नजर डाले वगैर ही अपने कमरे में चला गया।

"अच्छा, अव जाओ सो रहो । वैठे हुए उपदेश दे रहे हो, हूह ! आत्मा ! भगवान से प्रार्थना करना वडी सावारण वात है और डाकू वन जाना वडी वहादुरी नही है, हरगिज नही। अरे मूर्खो ! कुछ काम करो काम ! हाँ !!"

किवाड वन्द करके जव वह चला गया तो वजारे ने शातुनोव के कुहनी मारते हुए कहा

"हाँ तो फिर आगे सुनाओ वह गीत !"

ओसिप ने अपना सिर उठाया, एक सिरे से दूसरे सिरे तक सव पर दृष्टि दौडाई और फिर दवे स्वर में कहा

"झूठा है वह !"

"कौन, हमारा मालिक ?"

"हाँ, आत्मा तो है उसके भी। लेकिन उसे सुख-चैन नसीव नही है। मुझे खूव मालूम है !"

"उससे हमें क्या गरज ? तुम कहो क्या कहते हो ?"

ओसिप घवरा गया, वह तन्दूर में से रेंगता हुआ निकला और अपने वडे-से सिर को झटका देकर वोला

"मैं तो भूल ही गया!"

"अच्छा, अव झूठ मत वोलो !"

"नही, नही वास्तव में मुझे नीद आ रही है।"

"अरे तुम्हारी याद करने की कोशिश तो करो !"

"नहीं, अव तो नीद सता रही है।"

अव अँधेरे में वह विल्कुल छिप गया, हल्की-सी आवाज में वोला

"अरे भाईयो ! यह जिन्दगी भी वडी मुसीवत की है हमारी !"

"वास्तव में ?" आर्तेम बडबडाया। "और हमें पता ही नही—धन्यवाद।'

बजारे ने बडी सफाई से अपने लिए एक सिगरेट बनाई और ओसिप की परछाई अँधेरे मे लुप्त होती देखते हुए सरगोशी के अन्दाज मे कहा।

"इस आदमी का दिमाग कुछ कमजोर मालूम होता ह।'

फरवरी का बर्फानी तूफान आया हुआ था, हवा चिघाड रही थी, खिडकियाँ सिर पीट रही थी, धुँआकश मे तेज हवा घुसकर सीटिया बजाने लगती थी। बेकरी के निविड अन्धकार मे तेल का टिमटिमाता लैम्प रोशनी पैदा करने की असफल चेष्टा कर रहा था और अधेरा कांपता हुआ नजर आ रहा था। सर्द हवा की लहरे कहीं से बराबर अन्दर आ रही थी और टागें ठण्डी बर्फ हुई जा रही थी। मैं आटा गूंथ रहा था और मालिक नांद के पास आटे के एक बोरे पर बैठा कह रहा था

"जब तक तुम जवान हो, हर बात पर गौर करो। जब तक कोई पेशा-विशेष न अपना लिया हो, हर प्रकार के काम के बारे मे सोचो। हर पहलू पर दृष्टिपात करो। शायद कोई ऐसा काम सूझ जाए जो तुम्हारे लिए उचित हो। बस जरा सोचतो—ऐसी कोई जल्दी नहीं है।"

बोरे पर बैठे हुए उसने अपने घुटने फैला रखे थे। एक पर उसने शराब का एक कनस्टर टिकाया हुआ था, और दूसरे पर पादरी गारव

से आधा भरा हुआ एक गिलास मैले-कुचैले फर्श पर झुके हुए उसके वेडौल चेहरे पर मैं कभी-कभी चुपके से घूर कर देख लेता और जलकर दिल-ही-दिल में सोचता

"एक-आध ग्लास मुझे भी दे दे ।"

उसने सर उठाया, बाहर की चिंघाड़ गौर से सुनी और धीमी आवाज में पूछा

"क्या तुम अनाथ हो ?"

"यह तो पहले भी पूछ चुके हो हुज़ूर ।"

"भगवान कसम, कितनी कर्कश आवाज है तुम्हारी !" उसने एक ठण्डी साँस भरके और अपने सिर को झटका देते हुए कहा, "आवाज तो है ही, तुम्हारी बात भी !"

काम समाप्त कर चुकने के बाद, मैं अपने हाथों से चिपका हुआ सूखा आटा खुरच कर साफ कर रहा था । होंठ चाटते हुए उसने शराब पीकर ग्लास खाली किया और दोबारा भरकर मेरी ओर बढ़ाया ।

"लो, पियो !"

"शुक्रिया ।"

"हाँ, हाँ लो, पियो । मैं झट से बता सकता हूँ कि काम करना कौन आदमी जानता है । और ऐसे आदमी की गलतियों को मैं अक्सर अनदेखा कर जाता हूँ । अब मसलन याश्का ही को ले लो । वह मूर्ख भी है और चोर भी । लेकिन फिर भी मैं उसका आदर करता हूँ । उसे अपने काम से शौक है । शहर में उससे अच्छा नाई कहीं नहीं मिलेगा । जो शख्स काम करना पसन्द करता है, जिन्दगी में उसके लिए रिआयत करना और मरने के बाद उसका सम्मान करना हमारा कर्त्तव्य होजाता है । निश्चय ही !"

नाँद को ढँक कर मैं आग सुलगाने चला गया । मेरा मालिक कराहता हुआ उठा और एक भूरी गेंद की तरह लुढ़कता हुआ चुपचाप मेरे

पास आया और बोला

"जब कोई आदमी अच्छा काम कर रहा हो तो उसके अनेक दोष व त्रुटियां क्षम्य हैं। उसके अवगुण उसकी मृत्यु के साथ समाप्त हो जाएंगे किन्तु उसके गुण जीवित रहेंगे।"

तंदूर में टांगे लटकाते हुए वह धम्म से जमीन पर बैठ गया, शराब का कनस्टर अपनी बाजू में रख लिया, आग को देखने के लिए झुका और देखकर बोला

"लकड़ियां काफी नहीं हैं। देखो तो जरा।"

"बहुत है, सूखी बैंमे है और फिर आधी उसमें चीड़ की है।"

"हूँ उख ।"

वह धीरे से कहकहा मारकर हँसने लगा और मेरे कंधे पर हाथ मारते हुए बोला, "बड़े होशियार हो। यह न समझना कि मैंने यह देखा नहीं था। बहुत काफी है लकड़ियां! हर चीज पर नजर रखनी पड़ती है। लकड़ी और आटा, और बाकी सब कुछ!"

"और आदमी की नहीं ?"

"आदमी की बात भी बताऊँगा, घबराओ नहीं। मेरी बातें जरा गौर से सुनो, तुम्हें कोई खराब बात नहीं सिखाऊँगा।"

अपने सीने पर हाथ मारते हुए, जो उसकी तोंद की तरह फूला हुआ और मोटा था, उसने कहा

"मैं अन्दर से अच्छा आदमी हूँ। मेरे सीने में भी दिल है। ऐसी बातें समझने के लिए अभी तुम बच्चे हो, और बेवकूफ भी। लेकिन फिर भी अच्छा है कि ये बातें तुम्हारे कान में पड़ जाएं! और सुन मेरे भाई, आदमी जो है ना वह किसी सैनिक की वर्दी का बटन नहीं है। आदमी विविध प्रकार से चमकता है। और हां यह तुम्हारा मुँह क्यों उतरा हुआ है?"

"बात दरअसल यह है कि मुझे नींद आ रही है और तुम ..."

नही देते । वडी दिलचस्प होती है तुम्हारी वाते भी ।"

"अगर दिलचस्प है तो फिर मत सोओ । जव मालिक बन जाओगे तो वहुत समय मिला करेगा सोने के लिए ।"

उसने एक ठण्डी साँस भरी और कहा

"नही, तुम मालिक नही बनोगे कभी । तुम हरगिज व्यापार नहीं करोगे । आवश्यकता से अधिक वाचाल होना । बातो-बातो ही में तुम अपने आप को समाप्त कर लोगे । और यो ही नष्ट-भ्रष्ट हो जाएगा तुम्हारा सारा जीवन । किसी को तुमसे कोई लाभ न होगा ।"

अचानक उसने एक जोर की साँस खीचते हुए एक वहुत गदी गाली दी । उसके चेहरे का माँस इस प्रकार थिरक रहा था जैसे फालूदे से भरे हुए प्याले को किसी ने जोर से हिला दिया हो । और गुस्से की एक रौ उसके जिस्म में दौड गई, उसका चेहरा और गर्दन सुर्ख हो गए और आँखो की पुतलियाँ भयानक रूप धारण करके उवल पडी । हमारा मालिक वासिली सेम्योनोव धीरे-धीरे और कुछ विलक्षण ढग से हुकार रहा था । मानो वाहर जो वर्फानी तूफान आहे भर रहा था और जिसके साथ सारी धरती वडे दयनीय ढग से आँसू वहाती प्रतीत हो रही थी वह उसकी नकल कर रहा हो ।

"अरे गोली मारो इसे ! काश मेरे पास अच्छे विश्वासपात्र आदमी होते ! फिर मैं तुम्हे दिखाता कि कारोवार किसे कहते है । सारा जिला, और वोल्गा का पूरा इलाका दाँतो तले उँगली दवाता ! लेकिन ऐसे लोग मिलते ही नही । सवके सव गरीवी के कारण या अपनी व्यक्तिगत निर्वलता के कारण शरावी वन गए है । और अधिकारी लोग, वे मरदूद अफसर धिक है उन पर "

उसने अपनी गठीली कलाइयो की मुट्ठियाँ मझ पर तान कर उगलियाँ खोली और हवा में इस तरह पजे चलाए जैसे वह किसी के वाल पकडकर उसे नोच-खसोट रहा हो । और इसी दौरान मे वह भूखे शेर

की नाई गुर्रा-गुर्रा कर और मुंह से झाग छोडते हुए वोलता रहा

"वचपन ही से देखना चाहिए कि किसी की पसन्द और रुचि क्या है यह नही कि किसी भी पुराने काम पर अँधाधुंध लगा दिया। इसी का तो यह नतीजा है कि आज कोई व्यक्ति सौदागर है तो कल वही भिखारी वन गया। आज नानवाई है तो एक सप्ताह वाद उसे किसी के यहाँ लकडियाँ चीरते हुए पाया। स्कूल खोले और हर ऐरे-गैरे-नत्थू-खैरे को घेरकर वहा ले गए कि जाओ पढो। हरेक को एक ही लाठी से हांकना शुरू कर दिया। हर आदमी को मौका देना चाहिए कि वह अपना रुझान खद मालूम करे।"

उसने मेरा वाजू दवोच कर अपनी ओर घसीटा और वडी भयानक सिनियाती हुई आवाज़ में कहता रहा

"यही तुम सोच रहे होगे और इसी की वाते कर रहे होगे कि हरेक को ऐसी जिदगी वसर करने पर मजवूर किया जाता है जो उनको नापसद हो वल्कि इस तरह की जैसी कि वसर करने का उनके अफसर हुक्म दें। आखिर हुक्म देने का अधिकार किसको है ? उसे जो काम कर रहा हो। यानी मुझे हुक्म देने का हक है। मै खूब समझ सकता हूँ कि कौन किस काम के लिए उचित ह।"

फिर मुझे धक्का देते हुए उसने अपनी ववसी प्रकट करते हुए हाथ हिलाया।

"लोगो के व्यक्तिगत मामलो मे अधिकारीगण यदि हस्तक्षेप करेंगे तो उससे कोई फायदा नही होगा। कोई काम नही चलेगा। सबसे अच्छा तो यह है कि सारे वखेडे को लात मारकर जगल मे निकल जाओ। सब कुछ छोड कर भाग जाओ।

अपने गोल-मटोल जिस्म को इधर-उधर झुलाते हुए उसने धीरे-धीरे और चवा-चवाकर कहना शुरू किया

'एक आदमी तक नही मिलता। सव चापलूस और जी हजूरी

करने वाले है, किसी में जरा भी हिम्मत नही। जाने के लिए कहो तो वह गया और रुकने को कहो तो फौरन रुक गया। ठीक वैसे ही जैसे रगरूट करते है। और जब कोई शरारत करने की सूझती है तब भी रगरूटो की-सी हरकत करते है और असल मे इनमे मिलता मिलाता खाक नही। और सच कहता हूँ मैं तुमसे भगवान आसमान पर बैठा-बैठा यह सब झगड़े-टण्ट देखता रहता है और आप ही आप सोचा करता है—अरे मूर्खा! भर पाया मैं तुमसे! दुनिया के किसी मसरफ के भी नही हो तुम।"

'तो तुम अपने आप को दुनिया के किसी मसरफ का नही समझते क्यो ?"

अब भी वह पहले की तरह अपने शरीर को झुलाता रहा और फौरन जवाब न दिया।

"मेरे मेरे बारे मे कह रहे हो तुम हर चिगारी तो ज्वाला नही बन जाती, सम्भव है कि करब्दे में चमक कर रह जाये। मुझे कहते हो तुम, मैं तो चालीस से कुछ ही ऊपर हूँगा और जल्दी ही शराब की लत मेरा काम तमाम कर देगी। और शराब की लत पडती है जिन्दगी की उलझनो और परेशानियो से। और परेशानियाँ अब देखो क्या मैं सिर्फ इसी काम के लायक हूँ ? मैं तो दस हजार आदमियो के किसी कारोबार को चलाने की योग्यता रखता हूँ। और यदि ऐसा हो जाता तो मेरा सारा काम इस खूबसूरती के साथ चलता कि देश के सारे बडे-बडे गवर्नर हक्का-बक्का रह जाते।"

उसने शान में आकर अपनी मंजरी आँख चमकाई और फुल्ली आंख मलिनता से आग के शोलो को घूरती रही। फिर उसने अपने हाथ तेजी से आगे को फेंकते हुए कहा

"क्या महत्व है इसका मेरे लिए ? इससे अधिक उपयोगी तो नहेदान होता है। एक आधे दर्जन आदमी दो मुझे—ईमानदार आदमी।

अच्छा, चलो ईमानदार न सही चोर-चालाक तो हो। और मैं तुम्हे दिखा दूँगा कि क्या हूँ मैं ! और काम ? अरे ऐसा शानदार कारोबार कायम करूँ कि जो देखे चकरा जाए । और फिर काम भी ऐसा-वैसा नहीं, जोरदार !"

थक-हारकर वह उस गंदे फर्श पर ही लेट गया। उसने एक लम्बी अँगडाई ली और नाक से सू-सू करते हुए, अपने पाँव तंदूर के मुह में लटका दिये जो भडकते-लपकते शोलो की रोशनी से दमक रहा था।

औरते भी !" वह सहसा गुर्राया।

'औरतो का क्या जिक्र ?"

कोई एकाध मिनट तक छत को घूरते रहने के बाद मालिक निरुत्साह व उदासी भरे स्वर में कहते हुए बैठ गया

'काश स्त्री बस यह समझले कि पुरुष किस तरह उनके बिना एक कदम नही बढ सकता ! कारोबार में वे कितनी बडी भूमिका अदा कर सकती है यह वे समझ ही नही सकती। कोई बेचारा अकेला है। यह तो भेडिये का-सा जीवन हुआ न ! जाडा हो, अँधियारी रात हो, [illegible] हो और बर्फ गिर रही हो पर वह एक भेड जरूर हजम कर [illegible] ! लेकिन फिर ? क्या फायदा हुआ ? पेट भर लेने पर भी उसकी हालत वही दयनीय बनी रही। वह बैठकर मनहूस आवाज मे रोयेगा, अपनी तकदीर को कोसेगा !'

सर्दी से उसके शरीर में झुरझुरी पैदा हुई, [illegible] अन्दर झाका। घूर कर मेरी ओर। फिर फौरन ही [illegible] दार आवाज बना कर गुर्राया

कोयले झाडो, खडे देख क्या रहे हो ? खटे-खट [illegible] हो ?'

तंदूर में से उठकर वह ऊपर आया [illegible] से बाहर देखता और अपनी [illegible] सुनाता रहा। [illegible]

''

सफेद भंवर पटाख-पटाख की आवाज निकाल रहे थे। दीवार पर लगे हुए लैम्प की लौ, धुँए मे भरी चिमनी मे बिल्कुल ही छिप-सी गई थी। और वहाँ मे लौ के भडकने और चटखने की आवाज आ रही थी।

मालिक 'हे भगवान, हे भगवान !' बडबडाता हुआ, भारी-भारी कदमो से विस्कुटो की बेकरी में चला गया और जाते हुए वह ऐसा लगा मानो अधकारपूर्ण मेहराव ने उसे निगल लिया हो। जब वह चला गया तो मैंने तंदूर में डबल रोटियाँ जमाना शुरू की और फिर ऊँघते-ऊघते सो गया।

"देखो दिन चढे तक मत सोते रहना।" मेरे सिर के ठीक ऊपर से किसी की जानी-पहचानी आवाज आई।

मालिक पीठ पर अपने हाथ बाधे खडा था। उसका चेहरा तर था और कमीस सीली हुई।

"बडी बर्फ पड रही है। ढेर-के-ढेर लगे हुए हैं। सारा आगन बर्फ से पटा पडा है।"

उसने अपने होंठ फैला कर लटका लिए और कुछ देर योही चुपचाप खडा मेरा मुँह चिढाता रहा। फिर आहिस्ता से बोला

"एक दिन ऐसा आएगा कि ऐसी ही बर्फ-बारी पूरे हफ्ते, पूरे महीने सारे जाडो और सारी गर्मियो होती रहेगी। और धरती की हर चीज उसके नीचे दब जायगी। बेलचो से बर्फ कितनी ही क्यो न हटाओ कुछ भी फायदा न होगा। हाँ हा, खयाल कुछ बुरा नहीं है। तमाम बेवकूफो का एकदम खात्मा हो जायगा।"

झूमता-झामता वह दीवार के पास पहुँच कर कुछ हिचकिचाया और फिर अंधेरे में गायब हो गया।

हर रोज सुबह पौ फटने ही ताजा डबल रोटियों की एक टोकरी लेकर मुझे कारखाने की एक और दुकान पर जाना पडता था। और मालिक की तीनो रखैलो से मेरी जान-पहचान हो गई थी।

उनमें से एक नौजवान, घुंघरियाले वालो और भरे जिस्म वाली दर्जन थी जो एक औसत दर्जे का चुस्त व सफद गाउन पहने रहती थी। ससार को वह अपनी मुर्दा मलिन और खाली-खाली, निराशामय आखो से देखा करती थी। और उसके पीले चेहरे पर वैधव्य का-सा गम छाया रहता था। मालिक के पीठ पीछे भी वह उसका जिक्र वडे डरते-डरते और दवी हुई आवाज में करती थी, उस।।ा नाम और प्यार का नाम लेकर याद करती। और जो चीजे मैं लेकर जाता उन्हे वह एक अजीव घवराहट के साथ लेती और जाँचती, मानो वह कोई चोरी का माल ले रही हो।

'ह य कितनी प्यारी-प्यारी डवलरोटियाँ है ? नन्ही-नन्ही !" वह वडी मधुर आवाज में कहा करती।

दूसरी एक ऊँची, साफ-सुथरी, कोई तीस वर्षीय स्त्री थी—देखने में वहुत स्वस्थ व हृष्ट-पुष्ट तथा नेक नजर आती थी। उसकी चम-कीली आँखें सदा झुकी रहती थी और उसकी वाणी मे वडा माधुर्य व विनम्रता थी। चीजे वसूल करते समय गिनती में वह मुझे टगने की कोशिश किया करती थी और मुझे पूरा विश्वास था कि एक-न-एक दिन यह स्त्री अपने दुवले-पतले और प्रकट रूप में ठण्डे जिस्म पर जरूर कैदियो के धारीदार कपडे पहनेगी। जेलखाने का सफेद रग का लवादा उसके कधो पर होगा और वालो पर सफेद रूमाल वंधा होगा।

उन दोनो को देखकर घृणा का एक तूफान मेरे दिल में उमड पडता जो किसी हाल रोके न रुकता था। और मै हमेशा यह कोशिश

किया करता था कि मैं तीसरी औरत के पास समान लेकर जाया करूँ। उसकी दूकान आम रास्ते से जरा ज्यादा हटकर थी। और इस अजीब औरत के पास जाने का सुखद अवसर दूसरे लडके मुझे खुशी से दे दिया करते थे।

उसका नाम सोफिया पनाम्विना था, शरीर भारी और गाल गुलाल के से थे। और कुल मिलाकर वह एक विलक्षण-सी बेडौल औरत थी मानो किसी ने इधर-उधर से बचे-खुचे टुकडे जमा करके और जल्दी-जल्दी में जोड-जाड कर उसे घड दिया हो। उसके बाल लहरिये और झबरे थे, काले भंवर जैसे, जैसे किसी यहूदन के हों और वे हमेशा उलझे रहते थे। फूले हुए गुलाबी गालों के बीच में तोते की चोंच की तरह खमदार नाक थी और आंखें भी असाधारण रूप से सुंदर थीं। गहरी, सुर्खी मायल, बादामी रंग की पुतलियां साफ-शफ्फाक ढेलों पर अजीब तरह से तैरती हुई नजर आती थीं। और उनमें बच्चों की सी मस्ती-भरी चमक थी। उसका मुंह भी बच्चों का-सा ही था—छोटा-सा और सिकुडा हुआ। और उसकी ठोस मोटी ठोढी एक हृष्ट पुष्ट स्त्री की बदनुमा, उभरी हुई छातियों पर धरी रहती थी। अपने फूहडपन के कारण वह सदा एक मैला-कुचैला, बदबूदार ब्लाउज पहने मिलती थी जिसमें एक बटन भी न होता था। नंगी टांगें और पैर में स्लीपर। देखने में वह तीस वर्ष की स्त्री मालूम होती थी। हालांकि वह थी केवल अठारह वर्ष की। जैसा कि उसने मुझे अपनी टूटी-फूटी रूसी भाषा में बताया था। उसे यहां एक अनाथ समझ कर नैरोल्स्क से लाया गया था और उसके मालिक ने उसे वेश्यालय में पहुंचा दिया था जहां से उसने अपना रास्ता तालाश कर लिया। वह कहा करती

"ऐसा हुआ कि जिसकी कोख में मैं पैदा हुई थी वह मेरा मां मर गया, और बाबा एक जर्मन औरत से सादी कर लिया और वह भी मर गया। उधर जर्मन औरत एक जर्मन मर्द के साथ शादी कर लिया।

इस तरह मेरा एक और माँ और एक और बाबा हो गया। पर उन दोनों में से मेरा कोई भी नहो। वो दोनो खूब दारू पीता था। अब मेरा उमर तेरह वर्ष का हो गया और वह जर्मन मरद ने मुझे सताना शुरू करा इस वास्ते कि मैं शुरू से मोटा थी। वह मुझे खूब मारता, पीठ पर घूसे लगाता फिर वो मेरे साथ रहने लगा और मेरा पेट रह गया। फिर तो वो सब घबरा गया और घर छोडकर भाग गया। सब कुछ खतम हो गया और कर्जे मे घर बेच दिया और मैं उस औरत के साथ जहाज में बैठकर यहाँ आया पेट गिरवाने। फिर मैं ठीक हो गई और उन लोग मुझे एक रण्डी खाने में दे दिया। वो बडा गदा, भयकर ! बस मेरे को तो जहाज में अच्छा लगता था ।"

ये सब बाते उसने मुझे उस समय बताई जब हम आपस मे दोस्त बन गए थे और जिस तरह हमारी दोस्ती हुई वह भी अजीब थी।

उसका बेजोड चेहरा, उसकी टूटी-फूटी बाते, उसकी सुन्ती औ[illegible] उसका असह्य घमण्ड और बडबडिया बाते, मुझे ये कुछ भी पसन्द [illegible] [illegible]। दूसरी बार जब मैंने सामान उसको देदिया तो उसने कहकहा लगा कर कहा

"कल मैंने मालिक को घर से निकाल दिया और उसका मुँह नोच लिया। तुमने देखा ?"

देखा तो था मैंने। एक गाल पर तीन खराशे पडी थी और दूसरे पर दो। लेकिन उससे बात करने को मेरा जी न चाहा और मैं खामोश रहा।

"बहरे हो तुम ?" उसने पूछा, "या गूंगे हो ?"

मैंने कोई जवाब न दिया। फिर उसने मेरे मुह पर जोर से [illegible] मारा और कहा

"उल्लू !"

बस उस मरतबा सिर्फ इतना ही हुआ। [illegible] दिन [illegible]

टोकरी पर झुका हुआ गुश्क और फफूदी हुई रोटियाँ, जो बिकी नहीं थी, छाँट रहा था तो वह आकर मेरी पीठ पर सवार हो गई। उसने अपने छोटे-छोटे नर्म बाजुओं से मेरी गर्दन कस ली और चिल्लाई

"चढ्डी दो, मुझे चढ्डी !"

मुझे बड़ा तैश आया और मैंने उससे कहा, 'मुझे छोड दो !"
लेकिन वह और भी बोझ डाल कर लटक गई और कहने लगी

"चलो-चलो मुझे पीठ पर लेकर चलो !"

"हट जाओ वरना मैं तुम्हें पटखी दे दूगा।"

'नही !" उसने बहस शुरू की, तुम मुझे नहीं पटख सकते। मैं नारी हूँ और तुम्हें एक नारी की बात माननी चाहिए। चलो !"

उसके चिकटे हुए बालों में से तेल की ऐसी बदबू आ रही थी कि दिमाग फटा जाता था और वह खुद भी उस तेज़ और चिकटी हुई बू में बसी हुई थी। जैसे कोई पुरानी प्रिंटिंग मशीन हो ।

'मैंने एक झटका देकर उसे अपने सिर के ऊपर से इस तरह उछाला कि उसके पाँव दीवार से जाकर टकराए । उसने बच्चों की तरह आहिस्ता-आहिस्ता बिसूर कर रोना और कराहना शुरू कर दिया।

मुझे उस पर तरस भी आया और अपनी उस हरकत पर शर्म भी। फर्श पर मेरी ओर पीठ किए बैठी झूम-झूमकर वह अपनी चिकनी-चिकनी खुली हुई टाँगें अपने दामन में छिपा रही थी और उसकी नग्नता में कुछ ऐसी बेचारगी थी जो दिल पर असर करती थी। विशेषतया अपने नगे पाँव के अँगूठों को जिस तरह बल दे रही थी क्योंकि गिरते समय उसके पाँव के स्लीपर फिसल कर गिर पड़े थे ।

"मैंने पहले ही कह दिया था ।" मैं गड़बड़ा कर बड़बड़ाया और उसे उठाकर खड़ा करने लगा । उसने मुँह बनाया और कराहते हुए कहा

"हाय, हाय   गुस्ताख लडके!

और अचानक फर्श पर जोर से पाँव पटखते हुए उसने खुशमिजाजी से कहकहा लगाते हुए कहा

"जा जहन्नुम में जा! चल भाग यहाँ से।"

मैं दौडकर बाहर गली में आगया। मुझे बडी शर्मिन्दगी थी और मैं अपने आपको बुरी तरह कोस रहा था। छतो के ऊपर रात का जमा हुआ मटियाला कुहरा जो बाकी बचा था वह भी पिघल गया था और धुंदली सुबह रेंगती हुई शहर पर छा रही थी। लेकिन सडक की लालटेनो की पीली रोशनियाँ अभी गुल नही हुई थी और सन्नाटे पर पहरा दे रही थी।

"सुनो!" लडकी ने सडक की तरफ का दरवाजा खोलकर मुझे आवाज देते हुए कहा, "डरना नही, मैं मालिक से कुछ भी नही कहूँगी!"

दो दिन बाद उसके यहाँ सामान ले जाने का मुझे फिर मौका मिला। उसने बडी सुखद मुस्कान के साथ मेरा स्वागत किया, फिर एक दम किसी सोच में पड गई और पूछा

'तुम्हे पढना-लिखना आता है क्या?"

और नकदी रखन की दराज खोलकर उसने उसमे से एक खूबसूरत बटुआ निकाला और कागज का एक पुर्जा खीच लिया।

"इसे पढो तो जरा!"

मैंने कविता के दो पद पडे जो बडे सुन्दर लेखन में थे

चदा खा जाने में पिताजी है बडे बदनाम
कम-से-कम भी वह चरा बैठे है शायद एक लाख

"उफ कैसा जानवर है!" वह चिल्लाई और कागज का पुर्जा उसने मेरे हाथ से छीन लिया। फिर जल्दी-जल्दी और गुस्से में कहने लगी

"एक उल्लू के पट्ठे ने लिखकर दी है यह कविता। वह तो

वडा उद्दण्ड लेकिन अभी विद्यार्थी ही है। मुझे विद्यार्थियो से वडी दिलचस्पी है । वे भी फौजी अफसरो की तरह होते है और वह तो मुझसे इश्क लडा रहा है । अपने आप के बारे में ऐसी ही बातें किया करता है। उसका बाप कोई वडा आदमी हे । वडा-बूढा है, सीने पर तमगे लगाए कुत्ते को साथ लिए फिरा करता है । हाय हाय, मुझे कितनी घृणा होती हे जब कोई बुड्ढा आदमी कुत्ते साथ लिए फिरे । कोई और नही मिलता उन्हे साथ ले जाने को ? इधर उसका बेटा उसे बुरा-भला कहता है, चोर कहता है यहाँ तक कि लिख भी दिया—यहाँ !"

"तुम्हे उनकी क्या परवाह ?"

'ओह !" उसने कहा और उसकी आँखें दु खी होकर फटी-की-फटी रह गई ।' अपने बाप को बुरा-भला न कहना चाहिए । और उसे खुद को तो देखो दुश्चरित्र स्त्रियो के साथ चाय पीने जाता है ।"

"कौन है वह ?"

"क्यो मैं जो हूँ !" उसने अचम्भे और क्रोध मिश्रित आवाज मे झल्ला कर कहा। "कितने बुद्धू हो तुम ?"

एक विचित्र प्रकार की कहना चाहिए जवानी जान-पहचान हममें पैदा हो गई थी । हम हर मसले पर बातचीत करते थे । लेकिन यह बात सदिग्ध है कि हम एक-दूसरे के स्वभाव को बिल्कुल समझ सके हो । कभी-कभी तो वह वडी गम्भीरता के साथ लडकियो की बातें वडे राजदाराना अदाज में मुझे बताती और आपीआप मेरी निगाहे झुक जाती और मैं सोचने लगता

"कही वह मुझे औरत तो नही समझती ?"

लेकिन असल में यह बात नही थी । जबसे हमारी दोस्ती हुई थी वह मेरे सामने मैली-कुचैली पोशाक में कभी न आती थी । उसके ब्लाउज के बटन लगे हुए होते, बगलो के नीचे फटी हुई आस्तीनो की

सिलाई की हुई होती थी। यहाँ तक कि वह लम्बे मोजे भी पहन लिया करती थी। मेरे सामने वह दयापूर्ण मुस्कान अपने चेहरे पर बिखेरे आती और ऐलान करती

"मैंने समावार तैयार कर दिया है।"

अलमारी के पीछे हम चाय पिया करते थे जहाँ उसकी एक छोटी चारपाई बिछी हुई होती थी। दो कुर्सियाँ, एक मेज और कपडा रखने की एक पुरानी बदनुमा अलमारी जिसके नीचे की दराज बंद ही न होती थी। आते-जाते सोफिया की पिंडलियाँ उस दराज से अक्सर टकराती रहती थी। और जब कही उसे वह जोर से लग जाती—और खाल छिल जाती—तो वह पांव को सहला-सहलाकर, मुँह बनाकर बुरा-भला कहने लगती थी

"तोंदू कही की, मूर्खा! ऐसी ही जैसे सेम्योनोव है। थलथल, घृणित और मूर्ख!"

"तो क्या तुम्हारे ख्याल में मालिक मूर्ख है।"

उसने आश्चर्य प्रकट करते हुए अपने कंधे उठाए और उसके बडे-बडे कान भी साथ ही थिरकते हुए उठ गये।

"निश्चित रूप से।"

"क्यो?'

"इसलिए कि वह है।"

"नही, लेकिन क्यो?"

अब चूंकि वह जवाब न दे सकी तो उसे गुस्सा आगया

'क्यो, क्यो? इसलिए कि वह बेवकूफ है। .हर तरफ से बेवकूफ है!"

लेकिन एक दिन उसने मुझे समझाया और समझाते हुए कुछ नाराज-सी हो गई.

'क्या तुम समझते हो, वह मेरे साथ रहता है? बस दो बार वह

मेरे साथ रहा। उन दिनों मैं वेश्यागृह में थी। लेकिन यहाँ ऐसी कोई बात नहीं है। मैं उसके घुटनों तक पर बैठती थी और वह मुझसे थोड़ी देर तो छेड़छाड़ करता और फिर कहता, 'भाग जाओ!' वह तो उन दोनों के साथ रहता है। मझ मे न मालूम वह चाहता क्या है? उस दूकान मे कोई आमदनी नहीं होती, मैं अच्छी दूकानदार भी नहीं और न ही मुझे यह पसन्द है। न जाने क्या मसलेहत है? मैं पूछ लेती हूँ कभी तो वह चीख पड़ता है, 'इससे तुम्हें कोई मतलब नहीं!' ऐसी-ऐसी हजारों बेवकूफियाँ गिन लो!"

आँखे बन्द किये हुए उसने अपना सिर हिलाया और उसका चेहरा बिल्कुल खाली-खाली-सा लगा जैसे कि लाश का।

"उन दोनों को जानती हो तुम?"

"क्यों नहीं। जब वह पिये हुए होता है तो उनमे से किसी एक को मेरे यहाँ लाता है और पागलों की नाईं चीखता है, 'लगे एक इसके लाल-लाल मुँह पर!' छोटी वाली को तो मैं हाथ नहीं लगाती, तरस आता है उस पर। वह हमेशा थर-थर काँपने लगती है। लेकिन वह दूसरी—उसे एक बार मैंने मारा था। मैं खुद भी नशे में थी और मैंने उसे मारा। मुझे फूटी आँख नहीं भाती वह! और फिर मेरी तबियत बड़ी खराब हो गई। और मैंने उसके भी खूब निहट्टे मारे!"

अपने विचारों मे वह गुम हो गई, मूर्तिवत अकड़ी हुई बैठी रही। फिर उसने धीरे-धीरे कहना शुरू किया

"उसे मारने का मुझे जरा भी अफसोस नहीं सूअर कहीं का! लेकिन फिर भी वह धनवान है। अच्छा होता कि वह भिखारी या बीमार होता। मैं कहती हूँ उससे, 'अरे मूर्ख! तुम इस तरह कैसे रह सकते हो? किसी-न-किसी तरह अच्छी जिन्दगी बसर करो। अब क्यों नहीं तुम किसी अच्छी औरत से शादी कर लेते कि बच्चे हों।"

"लेकिन वह तो शादीशुदा है।"

सोफिया ने कधे सिकोड कर सादगी से कहा

उसने क्या किसी को जहर देकर नही मारा ? अपनी पत्नी का भी वह जहर दे सकता है अब तो वह बेकार सी बुढिया है न । वह तो बिल्कुल पागल आदमी है। न वह कुछ चाहता ही है ।'

मैंने उसे समझाना चाहा कि किसी को जहर देना अच्छी बात नही लेकिन उसने बडे इत्मीनान और सुकून के साथ जवाब दिया

'मगर यह तो होता ही रहता है।'

उसके कमरे की खिडकी मे से गुलमेहदी का पौधा दिखाई देता था। खूब फूल आये हुए थे। एक दिन उसने बडे गर्व से पूछा

कितना सुन्दर है यह सूरजमुखी ?''

'हाँ, खासा है। लकिन यह सूरजमुखी तो नही है ।'

उसने अपना सिर हिलाकर बहुत जोर से इन्कार कर दिया।

'नही, नही यह ठीक नही । मामूली फल तो वही होता है जो छींट पर छपा होता है। लेकिन सूरजमुखी तो देवता का फल होता है। सूर्य देवता का ! ये सब सूरजमुखी के फूल होते है। हर किस्म के रगो का होता है।—गुलाबी नीले, लाल सब रगो की मुझे पहचान है।''

इस प्रकार के दिखावे भरे सादे लेकिन असल मे अजीब व बहुत ही गडमड लोगो के साथ जीवन बिताना मुझे दिन-ब-दिन असह्य मालूम होने लगा था। वास्तविकता एक भयानक स्वप्न बन गई थी। किताबो मे जो बाते पढी थी उनकी आब व ताब व उनकी सुन्दरता मे और भी वृद्धि हो गई थी। और वह नदिया के तारो की तरह आकाश में दूर से दूरतर होती जा रही थी।

एक दिन मालिक ने मेरी आँखो में अपनी मँजरी आँखलाडकर जो उस समय तपे हुए तांबे की तरह धुवली हो रही थी, मुझसे वडे उदास स्वर में पूछा।

' मैंने सुना है कि आजकल तुम छोटी दूकान में जाकर चाय पिया करते हो ?"

"हाँ।"

'मेरा भी यही ख्याल था। सँभल जाओ तो बेहतर है ।"

वह मेरे पास बैठ गया और कुछ वेखुदी के आलम में बातें शुरू कर दी। बोलते समय उसकी आँखें पुचकारी हुई बिल्ली की तरह जल्दी–जल्दी झपक रही थी और वह होठो को इस तरह चाट रहा था मानो एक–एक शब्द का मजा ले रहा है।

"लडकी क्या है टमाटर है क्यो ? मुझसे पूछो, मैं बताऊँ। वास्तव में वह भगवान की पथभ्रष्ट सृष्टि में से नही है । जैसी बातें वह मुझसे करती है कोई पादरी भी क्या करेगा। हाँ, हा जान–बूझ कर, उसकी परीक्षा लेने के लिए मैं उसे धमकाता हूँ, डराता हू। अरी पगली, मैं तुझ लातें मारकर निकाल दूंगा। लेकिन वह जरा बराबर भी तो परवाह नही करती, सच्ची बात कहने में जरा भी तो नही हिचकिचाती।"

"सच्चाई की तुम्हे क्या जरूरत है ?"

"विना सत्य के जीवन अजीर्ण हो जाता है ।" उसने विस्मयपूर्ण सादगी से कहा।

फिर उसने एक गहरी सांस ली और मुझे घूर कर देखा । चिड-चिडे अन्दाज मे मानो मुझ से क्रुद्ध होकर बोला

"तुम शायद सोचते होगे जिन्दगी बडी सुन्दर चीज है।'

' नही तो, और विशेषकर तुम्हारे आसपास ।"

'तुम्हारे आस-पास ! उसने मुँह चिढाया और फिर देर तक मुँह

फुलाये खामोश बैठा रहा। गर्दन का ढीला ढाला मास इस तरह लटक रहा था जैसे गर्मी के मारे हाँपते हुए कुत्ते के जबडे। कान झुक गये थे और निचला होंठ बेजान होकर छीछडे की तरह लटक पडा था। आग के शोलो के प्रतिबिम्ब ने उसके दाँतो मे सुनहरी चमक पैदा कर दी थी।

"मूर्ख होते हैं वे जिन्हे जीवन सुखद नज़र आता है। होशियार आदमी तो वोदका पीता है। उसको तो आस्तीनें चढा कर जिन्दगी से टक्कर लेना होती है। मुझे देखो! कभी-कभी तो मैं रात भर पडा रहता हूँ। सारी रात पडा रहता हू लेकिन कमवख्त एक जू तक नहीं काटती मुझे! जब मैं मजदूर था तो जुऐं भी बडे शौक से मुझे काटा करती थी। दौलत की निशानी होती है यह हमेशा! जैसे ही मैं साफ-सुथरा रहने लगा कि उन्होने मेरा साथ छोड दिया। हर चीज मेरा साथ छोड रही है। बस केवल घटिया, सस्ती चीजे शेष हैं—औरत! और वह तो बहुत ही दुखदाई और दुश्वार होती है।"

"और क्या तुम वही सत्य की खोज कर रहे हो?"

उसने झल्लाकर जवाब दिया

"तुम समझते हो कि क्या वे तुम लोगो से कम चलती हुई हैं? तुम लोगो से? कुज़िन ही को देखो, भगवान से डरता है और नयी बातो की खबर देना उसको अच्छा लगता है। सोचता है कि शायद मैं उसका पारिश्रमिक दूँगा। मैं तो खुद ही सडी बुसी चीजे अच्छे दामो बेच डालता हू, समझे?"

फिर उसने आग की ओर ग्लानिपूर्वक सकेत किया और बोला

"रोगोर तो कुल्हाडी है। उल्लू की तरह बेवकूफ! तुम लोग इधर-उधर करते फिरते हो और हर घडी इस घात मे रहते हो कि ज़रा कोई मौका मिले और अपने किसी साथी की गर्दन पर सवार हो। तुम चाहते हो तब उसी तरह रहे-सहे जिस तरह तुम रहो। और मैं यह

नही चाहता । खुद भगवान ने मुझे बीच मँझधार मे छोड दिया और मानो कह दिया, जाओ मिस्टर सेम्योनोव, जैसे चाहो जिन्दगी बसर करो, मैं दख़ल नही देता । मेरी बला से जहन्नुम मे जाओ तुम !"

उसका सँवलाया हुआ सुर्ख चेहरा भडकते हुए शोलो की लपट में दमक रहा था और पसीने मे तर हो गया था । उसकी आँखे ठहर गई थी । जैसे नीद आ गई हो और जबान मे लडखडाहट आ गई थी ।

"लेकिन सोवका तो मुँह पर कहती है—तुम आवारा की-सी जिन्दगी बसर कर रहे हो ! आवारा की-सी ? हाँ और नही तो क्या ! तुम कोई भेडिये या सुअर नही हो । तो फिर इन्सान जिये किस तरह मूर्खा ? मुझे क्या पता ? वह कहती है तुम खुद ही मालूम करो । तुम काफी होशियार हो, अब बनो मत कि मुझे मालूम नहीं—लो यह है सच्चाई ! जिन्दगी इस तरह बसर नही की जाती । मुझे मालूम नहीं कि फिर दूसरा कौन-सा रास्ता है ? यह है बिल्कुल सच ! और तुम, तुम ।"

उसने एक मोटी-सी गदी गाली दी और फिर और भी ज्यादा तैश मे आकर कहने लगा

"मैं उसे सोवा* कहा करता हूँ । दिन के समय तो वह बिल्कुल अँधी मूर्खा-सी लगती है हालाकि रात के समय भी वह होती मूर्खा ही है । लेकिन रात के समय कम-से-कम वह चचल और ठीक तो होती है ।"

उसके स्वर में स्नेह था और आवाज मे वही मिठास मालूम होता था जो मैंने पहली बार सुअर के बच्चो से उसे बाते करते समय पाया था ।

"तीन रख छोडी है मैंने ।" जब फिर उसने अपनी गाथा शुरू की । "एक तो गोश्त-पोस्त के आनन्द के लिए—नादिया घुघराले वालो वाली । शोख़ी और चचलता तो उसमे कूट-कूट कर भरी है ।

* रूसी भाषा म सोवा (सोवका का सक्षिप्त) का अर्थ उल्लू होता है ।

देखने में यो लगता है जैसे वह निहायत ही डरपोक है लेकिन दरअसल है वह बिल्कुल निर्भीक । न तो भय को वह जाने कि किस चिडिया का नाम है और न यह जाने कि अन्त करण क्या बला है ।—बस लोल-लिप्सा उसका अन्त करण है । जोंक है वह जोंक ! कोई भिक्षु या साधु—सत उसे देखे तो दग रह जाए । दूसरा करोचकीना है मानसिक व्यभिचार के लिए । इसके अलावा और कोई नाम उसके लिए जँचता ही नही । उसका नाम तो है ग्लाशा, ग्लाफिरा लेकिन कहना उसको पडेगा करोचकीना ही । बस यही उसकी विशेषता है । उसे सताने में मुझे बडा मजा आता है । मैं कहता हूँ कि जाओ पूजा करो ... जलाए जाओ दिये इन मूर्तियो पर लेकिन भूत तुम्हारी ही ताक में बैठे है । भूतो से उसे बडा डर लगता है घिग्घी बँध जाती है उसकी डर के मारे । पर खोटे सिक्के खूब चलाती है चुपचाप । अभी कल ही तो बात है एक खोटा सिक्का उसने मुझे चेंप दिया था—तीन रूबल का था वह और उससे पहले एक पाँच रूबल वाला थमा दिया था उसने । मैं पूछता हूँ कहाँ से आते है तुम्हारे पास ? तो कहती है कोई आँखो में धूल झोंक कर चलता बना । झूठी है वह । जालसाजो की किसी टोली से मिली—भगत है मालूम होता है । शायद कमीशन तय कर लिया होगा । लेकिन भई है बडी घुन्नी । जब तक उसे गुस्सा न दिलादो उसके साथ मजा नही आता । फिर तो उसका गरम होना देखो । कभी-कभी तो मुझे भी फुरहरी आ जाती है । उसका बस चले तो आदमी का गला घोट कर दम निकाल दे । एक तकिये से दम घोटस कती है, हा हा, सिर्फ एक तकिये से । और जब काम तमाम कर चुकेगा तो दुआ मांगेगी । हे भग-वान मुझे क्षमा करदो । तुम बडे दयाल हो भगवन । हा हा ... ऐसा ही करती है ।'

शोले और भी ज्यादा तेज हो ... ... । आग की रोशनी में उसकी बदनुमा और बदसूरत ... ... नजर आने लगी थी जो घृणापूर्ण होने के साथ दुखदद भी थी । ... ने

बचने के लिए उसने बलखाने शुरू कर दिए थे, पसीना वह निकला था और सांस के साथ सडी हुई, चिकटी बदबू निकल रही थी जैसी कि गर्मियो में गदे नालो से भभक उठती है । जी चाहता था कि खूब ही तो उसे सुनाई जाएं, मरम्मत की जाएँ, गुस्सा दिलाया जाय ताकि यह शख्स किसी और अँदाज में बातचीत करे । लेकिन इसके साथ ही वह उन घृणित बातो में जादूभरी दिलचस्पी लेने पर मजबूर भी कर देता। उन बातो से गदगी टपकी पडती थी । लेकिन उनमे एक दर्द और एक प्रकार की चुभन का भी एहसास पाया जाता था ।

"झूठ सब बोलते है—मूर्ख अपनी मूर्खतावश और चालाक अपनी मक्कारी के लिए । लेकिन सोबका सच बोलती है सच बोलती है अपने लिए नही अपनी आत्मा के बहिष्कार के लिए भी नही आत्मा, छि बकवास ! बस सच बोलती है, इसलिए कि वह सच बोलना चाहती है । मैंने सुना था कि विद्यार्थी सत्य की खोज करते है। इसलिए मैंने शराबखाने झाँके जहाँ वे मस्त होकर मदिरा-पान करते है । कुछ भी नही । ये सब मनगढन्त किस्से हैं। वे सब शराबी होते हैं, हाँ हाँ शराबी । "

अब वह बडबडाने लगा था । मेरी मौजूदगी का उसे जरा भी भान न था। मानो मैं उसके पास बैठा हुआ ही नहीं हूँ ।

"कुछ लोगो के लिए सच्चाई मानो मानो ऐसी होती है जैसे कि वह किसी ऊँचे घराने की सुन्दरी के प्रेम में बध गया हो। एक ही नजर में जिन्दगी भर के लिए उसी का होकर रह गया हो और उस तक पहुँचा न जा सके जैसे उसे कभी सपने मे देखा हो ।"

कोई कह नहीं सकता था कि मालिक नशे में है या होश मे। शायद तबियत खराब हो। उसकी जबान और होठ सुस्त थे जैसे कि वह उन मशीन शब्दो को सीधा करने का यत्न कर रहा हो। जो उसका दिमाग रट रहा था । उस वक्त वह कुछ घृणित जान पडता था और मैं ऊब-

ऊँघ कर शोलो को घूर रहा था । अब उसकी भर्राई हुई आवाज मुझे सुनाई नही दे रही थी ।

लकडियां गीली थी और तडख रही थी, सनसना कर झाग उगल रही थी, नीला और बोझिल धुआँ लगातार निकल रहा था। हल्के लाल रग की लपटें लकडी के गुद्दो के इर्द-गिर्द लिपट गई थी और भयावह आकृति बना कर भडक रही थी, सांप की जबान की तरह नीची मेहराव की ई टें चाट रही थी। और तंदूर के मुंह की तरफ मुडे हुए और और दबे हुए थे और धुआं घनघोर घटा की तरह—काला और बोझिल धुआ—उन्हे छिपाये ले रहा था ।

"बडबडिये !"

'जी ?',

'जानते हो मझे तुम्हारी किस बात पर आश्चय हुआ ?'

"बताया तो था तुमने एक बार ।"

'हा ।',

अब फिर वह खामोश हो गया और फिर एक भिखमगे जैसे-ने शिकायत भरे स्वर मे कहा

"तुममें इससे क्या कि आया मुझे सर्दी लग जाती और मै मरजाता, या न मरता । तुमने तो यो ही कह दिया था बिना सोचे-समझे । महज मजाक के लिए ?"

'तुम अब जाकर सोजाओ तो अच्छा है क्यो ?"

चुपके-चुपके मुस्कराते हुए उसने अपना सिर हिलाया और उसी शिकायती अँदाज से बोला

"लो, और सुनो ! मैने तो इसके साथ भलाई की और यह [illegible] मुझे ही भगा रहा है ।"

यह पहला मौका था कि हमारे मालिक ने सहानुभूति प्रकट [illegible] और मै उसकी हमदर्दी की सच्चाई या बनावट [illegible]

चाहता था।

मैंने कष्टकपूर्ण मार्ग पर चलते हुए कह डाला

"क्यों न नन्हे याश्का की कुछ मदद कर दो।"

मालिक ने भारीपन से अपने कंधे सिकोड़े और खामोश हो रहा।

इस बातचीत से दो-तीन दिन पहले झुनझुना बेकरी में गिर पड़ा था। उसके सिर के बाल सब जल गए थे और गंजी टाँट निकल आई थी। आंखों की तरह उसका सिर भी बिल्कुल शफ्फाफ हो गया था। अस्पताल में रहने से उसकी आँखें पहले से भी चमकीली और साफ हो गई थीं। उसका दागदार नन्हाँ-सा चेहरा दुबला गया था। नाक और भी ज्यादा टेढ़ी और ऊपर को उठ गई थी। बच्चे के मुँह पर कुछ स्वप्निल मुस्कान खेलने लगी थी। कारखाने में वह कुछ अजीब चाल से चल रहा था मानो अभी लड़खड़ा कर गिरने वाला हो। उसको डर लगा रहता था कि कहीं कमीज मैली न हो जाए। और अपने हाथ साफ देखकर उसको शायद उलझन हो रही थी क्योंकि वह अपनी नई पतलून की जेबों में हर वक्त ठूँसे रहता।

"यह सिंगार तुम्हारा किसने कर दिया?" नानबाइयों ने पूछा।

"मिस जूलिया ने।" उसने अपनी नन्ही-सी मद्धिम आवाज़ में जवाब दिया और फिर चलते-चलते रुककर और अपना हाथ जेब से निकाल कर हवा में नचाते हुए कहा

"डाक्टरनी है वह! कर्नल की बेटी। तुमने उसके पिता की टाँगें काट डालीं—घुटनों तक, मैंने भी उनको देखा है। साफ गंजी टाँट है उनकी। और वे कहते रहते हैं—कुछ नहीं, कुछ नहीं। उनसे क्या होना है।'

"वाह वाह! भाइयो, अस्पताल में तो बड़ा मजा है। और पूछो नहीं और कुछ पूछो।"

"दाहिने हाथ में तुम्हारे क्या है?"

"कुछ नही ।" उसने झट से जवाब दिया और बेकसी के आलम में उसकी निगाहे चारो तरफ जा रही थी।

'झूठ ! लाओ, लाओ हमें भी तो दिखाओ।"

बेचारा घबरा गया । उसने अपना हाथ जेब में और भी अन्दर ठूंस लिया। और खुद भी दुहरा हो गया। अब तो लोगो को और भी उत्सुकता हुई और जेबो की तलाशी लेने का फैसला हुआ। सबने लपक कर उसे दबोच लिया और थोडी देर की कशमकश के बाद उसकी जेब से बीस कोपेक का एक नया और चमकदार सिक्का तथा एक मूर्ति 'माँ' व 'बच्चे' की निकली। सिक्का तो फौरन ही याश्का को वापस कर दिया गया और मूर्ति हाथो-हाथ घूमने लगी। पहले तो बच्चा अपना नन्हा हाथ फैलाए और खिची हुई मुस्कान के साथ मूर्ति वापस मांगता रहा। फिर उसे गुस्सा आ गया और फिर रफ्ता-रफ्ता वह भी जाता रहा। जब सैनिक मिलोव ने मूर्ति वापस की तो याश्का उसे लापरवाही से जेब मे डालकर कही गायब हो गया। रात को खाने के बाद वह उदास व मलिन चेहरा लिए जगह-जगह गीले आटे के दाग चिपकाये और खुश्क आटे का उबटन मले मेरे पास आया। लेकिन उसकी वह पुरानी जिदादिली कही नजर न आई।

'अच्छा तो लाओ देखें क्या भेट लाये हो ?"

उसकी नीली आखें कही और देख रही थी।

'मेरे पास नही है।"

फिर कहाँ गया ?"

"खो गया।"

"सचमुच खो गया क्या ?"

याश्का ने एक ठण्डी सास ली।

"वह कैसे ?"

"फेंक दिया।" उसने मरी हुई आवाज मे कहा।

मेरी शक्ल देखकर वह समझ गया कि मुझे विश्वास नही हुआ, इसलिए उसने अपने सीने पर क्रास बनाते हुए कहा

"भगवान मेरा साक्षी है। तुमसे मैं झूठ हरगिज नही बोलूगा। उसे मैंने आग में फेंक दिया। पहले तो वह लाख की तरह पकने लगा, फिर जलकर खाक होगया।"

फिर वह एकदम सिसकियाँ ले-लेकर रोने लगा और मेरे दामन मे मुँह छिपाकर और हिचकियां ले-लेकर कहने लगा

"सूअर कही का, नीच! हमेशा हर चीज झपट लेता है वह फौजी ने ऐसी उँगलियाँ गडाई कि उसकी एक किरच उखड गई। गल जाये उँगलियाँ इसकी। मिस जूलिया ने जब वह मूर्ति मुझे दी थी तो पहले उसको चूमा था और बाद में मुझे भी कहा था, "लो, यह तुम्हारी है। यह तुम्हारे काम आएगी।"

मारे सिसकियो के उसका जी हलकान हो गया और बडी देर तक मैं उसे चुप न कर सका। मैं नही चाहता था कि बेकरी के नानबाई उसको रोता देखले और उसके दर्दनाक माने समझ जाए।

अचानक मालिक ने पूछा, "वह यास्का वाली क्या बात थी ?"

"वह बहुत कमज़ोर है और बेकरी मे तो वह वैसे भी काम करने योग्य नही है। उसे तो कही दूकान पर काम करने को लगा दिया जाए।"

मालिक किसी सोच में पड गया और होंठ चबाते हुए बडी गम्भीरता के साथ बोला

"अगर कमजोर है तो दूकान पर भी किस काम का ? वहा ठण्ड है, उसे सर्दी लग जायगी और सारास्का भी उससे दुर्व्यवहार करेगी। सोवका वाली दूकान पर भेज दो तो अच्छा है। वह है भी फूहड। सारी दूकान धूल में अटी रहती है। वहां जाकर वह उसका हाथ बटाए। यह कोई सख्त काम भी नहीं है।"

तंदूर के अन्दर अंगारो के सुनहरी ढेर पर नजर डालकर उसने गढे मे से पाँव निकाल लिये ।

'राख झाडो, बस अब वक्त हो गया ।"

मैं लम्बी छड तंदूर मे डाल कर राख झाडने लगा और उसने धीरे-धीरे जैसे ख्वाब में बडबडाते हूए कहा

तुम भी हो बुद्धू ! देखो तो सही तकदीर खडी तुम्हारी राह देख रही है । जो चाहे बन जाओ । और तुम हो कि उह हमारी बला से, अजीब आदमी है ।"

पुराने, टूटे-फूटे मकानो के गहरे सायो वाली सकीर्ण एव अँधियारी गलियो में मार्च का सूर्य वडी सतर्कता के साथ जरा नाक-सी चढाकर झाँक रहा था । सुवह सवेरे से रात गये तक शहर के बीचो बीच गलि-यारे तहखानो में कैद रहने के कारण हमें वसतागमन का अनुभव सील पैदा हो जाने से होता, जो दिन-ब-दिन बढती चली जाती ।

दोपहर के वाद कोई बीस मिनट के लिए सूर्य की एक किरण कार-खाने की आखिरी खिडकी मे से अन्दर झाकती और मुद्दतो का मैला व गदा शीशा कुछ देर के लिए खूबसूरत और चमकदार दिखाई देने लगता । छोटे-से रोशनदान में से बिना पहियो की गाडी चलाने वाले घोडो की टापो की आवाज सुनाई देने लगती क्योंकि अब बर्फ पिघलने से सडक के पत्थर उभर आते । बाजार का कोलाहल भी अब पहले से तेज और ज्यादा सुनाई देता ।

बिस्कुटो वाली बेकरी में गानो की आवाज लगातार गूंजती रहती ।

लेकिन अब उनमें जाड़ों की-सी न रही थी । समूहगान मंद पड़ गये, हर व्यक्ति अपने पसन्द के गीत अपनी-अपनी पसन्द की लय में गाने लगता । बार-बार धुनें व तर्जें बदली जातीं, मानो वसन्त के उस दिन की आत्मा के साथ एक सुर होने वाला कोई गीत ही न मिल रहा हो ।

छोड़कर मुझको विरह में प्रियतम

तंदूर के पास से बजारे ने गाना शुरू किया और बालुक ने अगली पंक्ति मानो बड़े यत्न से पूरी की

मेरे चरणों में पड़ा है मेरा यह निराश जीवन

गीत उसने अधूरा ही छोड़ दिया और जिस सुर में गा रहा था उसी सुर में बोला

"दस दिन और हैं फिर हमारे गाँव में लोग हल चलाना शुरू कर देंगे ।'

शातुनोव अभी आटा गूँधकर उठा था । उसके नग्न शरीर पर पसीना चमक रहा था, और अधखुले नेत्रों से खिड़की को निर्निमेष देखते हुए वह अपने बालों को ढाल के एक फीते से बाँध रहा था ।

उसकी उदास वाणी बड़े मन्द स्वर में गरजी

भगवान के ये नन्हे, ये कोमल पाखी अग्रसर हैं,
जानते कुछ भी नहीं चुपचाप चले जा रहे हैं ।

आर्तेम एक कोने में बैठा फटी हुई बोरियों की मरम्मत कर रहा था और सुरिकोव की एक कविता जो उसे कण्ठाग्र थी उसने अनोखी आवाज़ में खाँस-खाँसकर गाता जारहा था

तू हमारा अभिन्न हृदय मित्र
लकड़ी के सन्दूक में पड़ा चुपचाप
सिर से पैर तक कफ़न में ढँका
पीला चेहरा लिए पड़ा बेहोश

'हटदू !' कुद्रिन ने उसकी तरफ़ मुड़ते हुए कहा, "क्या रोना-सा गीत

कब्र में से खोदकर .उलन्‌कही का, गया अरे शैतानो ! हजार बार तुमसे कहा ।'

"हे भगवान !" बजारा गाना अधूरा छोड कर चीखा। मजा आने वाला है इस दुनिया मे अब !"

अपने पांव से ताल देते हुए उसने ऊँचे सुरो में गीत शुरू किया

एक मदमस्त सुन्दरी आरही है
दूर ही से मुस्काती फूल बरसाती हुई
यह वही गुडिया तो है जिस पर
मेरा सर्वस्व न्योछावर है आज

अगली पंक्ति उलानोव गाता है

है वही गभीर मेरी प्यारी ऐन
जिसने सारे कबीले को वश में किया
जब यहाँ आता है मौसम बसंत का
वह हरेक चीज मे जादू भर देती है

इन क्रमहीन गीतो और छीना-झपटी की बातचीत मे [illegible] की मस्तियो और नवीनता की तडपती हुई उम्मीदो का [illegible]। भांति-भांति के गीतो और तरह-तरह के गानो का अन्तहीन क्रम जारी रहा। ऐसा प्रतीत होता था जैसे कि ये सब लोग किसी [illegible] का अभ्यास कर रहे हो। जिस बेकरी मे मैं काम कर रहा था वहां विभिन्न प्रकार की इन आवाजो का मानो एक धारा बहता हुआ आ रहा था। सब आवाजे एक दूसरे से कितनी भिन्न थी किन्तु अपने [illegible] आकर्षण मे कितनी समान थी।

और चूंकि मेरे मस्तिष्क पर भी बहार छाई हुई थी इसलिए मेरी कल्पना मे एक ऐसी स्त्री थी जो पृथ्वी की प्रत्येक वस्तु मे [illegible] करती थी अत मैंने यास्का को सम्बोधित करते हुए [illegible] आवाज मे कहा

है वही गम्भीर

शातुनोव ने मैली-कुचैली खिडकी की तरफ से मुह मोड लिया और बजारे के जवाब को अपनी पाटदार आवाज मे गुम करते हुए गाने लगा

और मजिल सख्त

तख्ते की दीवार की दरार मे से मालिक के कमरे मे से बूढी मालकिन की आपत्तिपूर्ण और भिखारिन की-सी आवाज आई

'वासिली प्यारे, वासिली जानी !"

एक हफ्ते से भी ज्यादा हो गया था कि मालिक बुरी तरह पी रहा था । लेकिन अब भी मदिरा-पान का यह दौरा थमता नजर न आता था । नशे मे वह इस हद तक चूर हो गया था कि जबान से एक शब्द भी स्पष्ट नही निकलता था । हल्को मे उभरी हुई आँखे धुधली और अप्रतिभ-सी हो गई थी क्योकि वह अन्धे आदमी की नाई तनकर और सीधा होकर चलने लगा था । उसका सारा जिस्म इस तरह फूला हुआ और नर्म था जैसे अभी-अभी नदी मे से घसीट कर निकाला गया हो । उसके कान पहले से बडे लगने लग थे और खडे हुए मालूम देते थे । होठ पिचक गए थे और चेहरा वैसे ही इतना भयकर हो गया था कि खुले हुए जबडो मे से नजर आते हुए दाँत फालतू मालूम देते थे । कभी-कभी वह अपनी छोटी-छोटी टागो को लडखडाता ख्वामख्वाह भारी-भारी कदम रखता हुआ अपने कमरे से बाहर आता और जो भी कोई उसके रास्ते मे आता उसी पर बुरी तरह डट पडता । और अपने अप्रतिभ नेत्रो से उसे ऐसे भयानक ढग से घूरता कि कपकपी आने लगती । उसके पीछे बोतलो से भरी हुई एक सुराही और एक गिलास अपने बडे-बडे पजो से दबोचे और नशे मे ऊचा हिचकियाँ लेता [illegible] आता । उसके चेचक भरे चेहरे पर लाल और सफेद धब्बे होते । आँखे [illegible] होती और मुह इस तरह खुला होता जैसे कि किसी [illegible]

अपने जिस्म पर चहका लगा लिया हो और साँस लेने के लिए बेदम हो कर मुँह फाड रखा हो ।

मुँह खोले बिना ही वह मुँह-ही-मुँह मे बडबडाता 'हटो, हटो रास्ता दो । मालिक आ रहा है ।"

और सबसे आखिर मे बूढी मालकिन सिर झुकाए आती । उसकी आखो से पानी इस कदर रिसता होता मानो अब फौवारा छूटा । और जो ट्रे उसके हाथ मे है उसको भरना शुरू किया । ट्रे के अन्दर रखी हुई नीली रकाबियो मे मछली के कबाब और इसी किस्म के नाश्ते बिखरे हुए होते ।

कारखाने पर मौत का सा सन्नाटा छा गया था । मालूम होता था कि यहा दम्घोट रात ने डेरे डाल दिए है । सामान मतवाला तो यह टुकडी अपने पीछे तीखी और असह्य दुर्गन्ध के भभके छोड जाती । उन्हे देखकर भय और ईर्ष्या के मिश्रित भाव उत्पन्न होते और जब वे दरवाजे मे से अदृश्य हो जाते तो दो-तीन मिनट तक कारखाने मे वह स्तब्धता छाई रहती ।

फिर दबी-दबी आवाज मे व्यग्य कसे जाने लगते ।

पी-पीकर मर जायगा ।'

'वह ? तुम्हारे जीते जी तो मरता नहीं ।'

'ऐ लडको ! तुमने देखा कितने कबाब थे ?

खुराक् बडे मजे की थी ।"

अपने को तबाह कर रहा है वासिली सेम्योनिच ।

कितनी बोतले पी जाता है गिने तो मजा आए ।

अर तुम तो उतनी एक महीने मे भी न पी सको ।

तुम क्या जानो ?' नैतिक मिलाव ने कहा । [illegible]

यद्यपि विनम्रता भी पर साथ ही अपनी हानि पर खिन्न भी । जरा आजमाकर देखो । एक महीना अपने पास से पिला [illegible]

“अरे दीवाने हो जाओगे।”

“चलो अच्छा है। जब तक दीवानगी रहेगी तब तक की मौज ही सही।”

मालिक को देखने के लिए मैं कई बार उठकर बाहर बरामदे में गया। येगोर ने बाहर आँगन में एक पुराना पीपा उलट कर धूप में रख दिया था जो दूर से ताबूत मालूम होता था। मालिक नंगे सिर था और बीच में बैठ गया था। उसके दाहिनी तरफ कबाबों वगैरह की ट्रे रखी हुई थी और बाईं तरफ सुराही। मालकिन भी इठलाकर नीचे के एक कोने पर बैठ गई। येगोर मालिक के पीछे उसकी बगलों में हाथ डाले और पीठ को अपने घुटनों का सहारा दिए उसको सम्हाले हुए खड़ा था। खुद मालिक ने अपना सारा बोझ पीछे की तरफ डाल रखा था। और बड़ी देर से गोता खाये हुए पीले आकाश को टिकटिकी लगाए घूर रहा था।

“बाबा क्या तुम सांस ले रहे हो ?”

“जी हाँ।”

“क्या हर सांस भगवान की महिमा प्रकट नहीं करती ? हम पूछते हैं।” नहीं प्रकट करती क्या ?”

“नहीं नहीं जरूर करती है।”

“ग्लास भरो।”

मालकिन ने एक भयभीत मुर्गी की तरह फड़फड़ाते हुए भो[illegible] का एक ग्लास अपने पति के हाथ में थमा दिया। उसने ग्लास अपने मुंह से [illegible] और चुसकियां ले-लेकर पीने लगा। मालकिन ने [illegible] [illegible] के मारे हाथ से छोटे-छोटे चिन्ह बनाये और होठ इस तरह मुँह [illegible] जैसे चन्दन लेने के लिए। यह दृश्य दुखद भी था और हास्यास्पद भी।

फिर उसने आहिस्ता-आहिस्ता भिनभिनाना शुरू किया

येगोर [illegible]। हाय [illegible] तरह [illegible] वह शराब [illegible] [illegible]।

‘तुम मत घबराओ मा। भगवान की इच्छा के बिना कुछ नही होता।” येगोर ने ऐसी आवाज में कहा जैसे मुर्छा मे हो।

वसन्त ऋतु का सूरज बडी आब व ताब से चमक रहा था। बाहर गढो मे पानी की सतह और पत्थरो का प्रतिबिम्ब चमचमा रह था।

एक दिन मालिक ने आकाश और मकानो की छतो को जांचते हुए इतने जोर की झोकेली कि औंधे मुंह गिरते-गिरते बचा। फिर सभल कर पूछा

“यह किसका दिन है ?”

‘भगवान का।” येगोर ने बडी कठिनाई से उत्तर दिया। क्योंकि अभी वह मालिक को गिरते-गिरते बचा ही रहा था। सेम्योनोव ने अपनी टाग दिखाते हुए पूछा।

“यह टाग किनकी है ?”

“तुम्हारी।”

‘झूठा। मै किनका हूँ ?’

सेम्योनोव का।”

“झूठा !”

भगवान के।”

‘ह ह ह !”

मालिक ने पांव उठाया और कीचड मे जोर का छपका दिया। कीचड की छीटें उडकर उसके सारे चेहरे और सीने पर आई।

“येगोरी,” वुढिया गुनगुनाई।

येगोर ने उंगली से इशारा करते हुए कहा ‘मै मालिक की आज्ञा का उल्लँघन नही कर सकता मा।”

मालिक ने आखे झपकाते हुए और अपने चेहरे से कीचड की छींटें पोछने की परवाह किये बिना ही पूछा

क्या उसकी इच्छा के बिना एक बाल भी नही गिर सकता ?’

"हाँ अगर उस परम पिता की इच्छा न हो तो।"

"लाओ इधर लाओ।"

येगोर ने अपने झबरे बालो वाला सिर मालिक के आगे झुका दिया। मालिक ने उस कोमेक के घुंघरियाले बालो का एक गुच्छा अपनी मुट्ठी मे दबोच कर कई बाल नोच लिये। रोशनी में उन्हे बडी गौर से देखकर अपना हाथ येगोर के सामने कर दिया।

"छिपालो इन्हे, कही गिर न पडे।   "

येगोर ने बडी सावधानी से तमाम बाल अपने मालिक की मोटी-मोटी उगलियो मे से चुन लिये और हथेली पर रख कर, दोनो हाथो को मलकर उनकी एक गोली सी बनाली और अपनी ढीली-ढाली वास्कट की जेब की तह मे कही ठूस दी। उसके चेहरे को देखकर हमेशा ही से ऐसा मालूम होता था जैसे लकडी की तराशी हुई कोई मूर्ति है। उसकी आख मुदी थी। [illegible] टटोल कर कपकपाते हुए एक-एक चीज देखना [illegible] पता [illegible] कि पीने पिलाने के मामले मे वह और भी बदतर है।

[illegible] होशियारी से रखना।" मालिक हाथ का इशारा करते हुए बड़बड़ाया।

[illegible] बात के लिए उत्तरदायी होना पडता है। [illegible] बात के लिए।

मालूम होता था कि [illegible] भी [illegible] है। उनके [illegible] एक [illegible] आती [illegible]। ऐसा लगता था कि [illegible] दिलचस्पी नही है सिर्फ [illegible] निरन्तर हिल रहे थे।

[illegible]" [illegible] मालिक की [illegible] हुई [illegible]।

[illegible] ने अपनी टोपी [illegible] चेहरा बना [illegible]। और मालिक [illegible] हुए [illegible]

गाना शुरू किया ।

देखो लडके आरहे हैं डान के

मालिक ने अपना हाथ फैला दिया जैसे कोई भिखारी भीख माँग रहा हो ।

हो तरुण कोमेक तुम हो शूर-वीर

मालिक ने अपना सिर उठाया और हुकारने लगा । और उसके भयावने अप्रतिभ मुख पर बहते हुए आसुओ की लडियां देखकर ऐसा जान पडता था कि बस अब वह पिघलने ही वाला है ।

इन्ही तमाशो के दौरान मे एक बार ओसिप ने, जो मेरे पास ही बराम्दे मे खडा था, आहिस्ता से मुझसे पूछा

'देखा कुछ ?"

'अच्छा फिर ?"

उसने मेरी ओर देखा और फिर मुस्कराने लगा । यह मुस्कान बडी दयनीय और निराशाजनक थी । कुछ दिनो से वह बडा ही निढाल दिखाई देने लगा था । उसकी मगोलियन आखें मालूम होता था जैसे [illegible] होगई हैं ।

'है क्या यह ?"

ओसिप ने झुक कर मेरे कान मे कहा

"मालदार है क्यो हैना ? सुख चाहिए ? लो यह है सुख । [illegible] वह

जब मालिक का शराबनोशी का दौर चल रहा होता तो [illegible] भी कारखाने मे इस तरह लडखडाता फिरता जैसे कि वह भी नशे मे हो । उसकी आखें थरथराती और झपकती रहती । हाथ [illegible] जैसे टूट गये हो । और उसकी सुर्ख लटे चपचपाती हुई माथे पर चिपकी रहती । [illegible] चोट्टेपन के बारे मे कारखाने मे हरेक कोई बुरे ढग की बाते करता और स्वीकार सूचक मुस्कराहट से उसका स्वागत करता ।

कुजिन तो और भी चिकनी-चुपड़ी बातें मिलाकर क्लर्क के गुण गाता।

"अरे वह ? वह तो बाज की तरह है बाज की तरह ! और देख लेना यह हमारा अलेक्जान्द्र पेत्रोव कितनी ऊँची उड़ान मारता है लिख के रखलो यह बात।"

हर शख्स ने अपनी-अपनी शक्ति के अनुसार चोरी की। चोरी की और वह भी बड़ी शान व लापरवाही के साथ। और यह आमदनी फौरन शराबखोरी पर खर्च हो गई। तीनों-की-तीनों बेकरिया नशे में मस्त थीं। ऊपरी काम करने वाले छोकरों को जब शराबखानों से वोडका लेने भेजा जाता तो वे भी कुछ बिस्कुट अपनी कमीजों में छिपाकर ले जाते और उनके बदले में कहीं से मिठाई की गोलियाँ ले आते।

"इस तरह से तुम लोग सेम्योनोव का जल्दी ही दीवाला पीट दोगे।" मैंने एक दिन पजारे से कहा। वह अपने खूबसूरत सिर को हिलाते हुए बोला

"अरे भैया, मेरे हर कल्ल के पीछे वह तो ३६ कोपेक कमाता है।"

वह तो इस तरह बातें करने लगा जैसे उसे अपने मालिक के कारोबार का पूरा-पूरा और ठीक-ठीक ज्ञान हो।

मैंने ठहाका लगाया। पाशा ने मुझे इस तरह घूरा जैसे उसे मेरा ठहाका अच्छा न लगा हो और फिर मुँह बनाकर बोला

"तुम्हें तो हर छोटी-मोटी बातों की फिक्र हो जाती है। यह क्या हो गया है तुम्हें ?"

"अरे नहीं फिक्र हो जाने की बात नहीं। लेकिन यहाँ की गड़बड़ मेरी समझ में तो खाक नहीं आती।"

"अगर यहाँ सब गड़बड़ी है तो फिर समझ में क्या आयेगा ?" शातुनोव ने विस्मित होकर कहा। सारा कारखाना हमारी बातचीत बड़ी गौर से सुन रहा था।

"तुम ही तो मालिक की बडाई करते हो कि बडा होशियार आदमी है। इतना बडा कारोबार सँभाले हुए है । तुम्हारी मेहनत के बल पर। समझे ?—लेकिन फिर भी तुम ही हर मुमकिन कोशिश उसे तबाह करने की कर रहे हो।"

कई आवाजो न एक साथ जवाब दिया

' उसे तबाह करना असम्भव है !"

'जो हाथ लगे हडप कर जाओ। बस यही बेहतर है !'

"हम तो खुलकर सास ही उस घडी ले सकते हैं जब वह शराब के नशे में धुत्त हो । "

मेरी बातचीत का साश्का को फौरन पता चल गया और वह लपकता हुआ बेकरी में आया। वह हल्के कत्थई रग का सूट पहने हुए बडा तन रहा था। दात निकोस कर गुर्राते हुए बोला

"मेरी नौकरी पर दांत हैं तुम्हारे, क्यो ? कोई डर नहीं। हो तो तुम बडे चालाक पर अभी कच्चे हो जरा। "

हर शख्स भूखे शेर की तरह उसकी ताक मे था कि उस पर टूट पडे और उससे एक झडप हो जाय मगर साश्का मस्तैद तो था पर साथ ही सावधान भी। उसके अलावा हमने भी फँसना कर [illegible] की कोशिश की थी। उसकी निरतर छेडछाड और व्य [illegible] ने [illegible] एक दिन मैंने उससे साफ कह दिया था कि वह अपनी इन हरकतों से बाज आजाय वरना मैं अच्छी तरह मरम्मत कर दूगा। एक बार छुट्टी के दिन शाम के वक्त का जिक्र है। सब लोग चले गये थे। मै और वह आगन में अकेले रह गये।

'आ जाओ तो फिर !" उसने अपना कोट उतार कर [illegible] दिया और ललकार कर कहा आस्तीनें चढाई और [illegible] हो गया। हो जाय आज। मुँह पर मारने की नहीं है [illegible] पर। यह मुँह तो मुझे कारखाने के लिए चाहिए [illegible]

हो ।. "

और अन्त में हारा हुआ मास्का ही मुझसे गिडगिडा कर कह रहा था

'देखना मेरे अच्छे मे भैया, किसी और से मत कहना कि तुम मुझ से ज्यादा ताकतवर हो। मैं तुम्हारा बडा आभारी हूगा। तुम तो यहां पर अस्थायी रूप से काम कर रहे हो—उडती चिडिया हो—आज यहा हो कल कहीं और चले जाओगे। लेकिन मुझे तो इन्ही लोगो के साथ रहना है। समझ गये न मेरा मतलब ? खूब ! धन्यवाद ! चलो आओ अन्दर चलकर एक प्याला चाय का पिए ।"

उसके छोटे-से कमरे में हम दोनो किवाड बन्द किये बैठे चाय पी रहे [illegible] वह एक एक शब्द जमा-जमाकर और समझा-समझाकर कह रहा था।

"[illegible] यह तो बिल्कुल ठीक है कि [illegible] जरा यो समझलू [illegible] जानता हू। भई, मैं भी इन्सान, तुम भी [illegible] तमाम हालात पर गौर तो करो [illegible]' और मेज पर [illegible] इस अन्दाज मे कहा जैसे गीत गा रहा हो। [illegible] यह चोट खाया हुआ है।

[illegible] उसमे कम [illegible] नहीं [illegible] नहीं, [illegible] नहीं ? [illegible] लुम [illegible] रहना। [illegible] शादी नहीं [illegible] किया [illegible] नहीं [illegible]।

सेम्योनोव की क्या हस्ती है ? अरे उसे तो देखकर कै आती है । अजीब भोंदू-सा शख्स है । देखो तो भला यहाँ मौज करता है । पड़ा होता कहीं दलदल में तो अच्छा भी लगता । इस हालत में तो वह मुझे बड़ा खटकता है ।'

उसका लाल लालची मुँह गोल हो गया—बटुए के मुँह की तरह और उसमें से सीटी की-सी आवाज निकली ।

'हाँ तो यार मेरे ! ईमानदारी की जिन्दगी अगर किसी की हो सकती है तो वह पादरी है । लेकिन हर शख्स जानता है कि पादरी हमेशा कुछ सुस्त-सुस्त और उदास रहते हैं । और उनका शरीर भी दुबल होता है । थाने के मुहर्रिर को जानते हो ? वह नोदिरन ? उन्होंने लिखी है वह कविता जिसका शीर्षक है 'पादरी की गाथा' । बड़ा [illegible] विद्वान व्यक्ति है । हालांकि है पक्का शराबी । खैर तो उस [illegible] पादरी ने साफ कहा है हे भगवान तू भी बड़ा अन्यायशील [illegible] । [illegible] बिना जीवन बिता देना भी स[illegible]व ही नहीं ।"

यह चुस्त व सुडौल जिस्म और उस पर सुख [illegible] भाले का-सा नजर आ रहा था । एक अग्निबाण की भांति [illegible] जो रात्रि के समय मृत्यु और सर्वनाश का अपना कार्य सम्पन्न कर रहा हो ।

मालिक की शराबनोशी के इन दिनों में नाश्ता [illegible] पूरी तीव्रता के साथ जारी थी । छोटे-छोटे परिन्दों पर [illegible] शिकरे की तरह उसे दौड़ते और रबल एकत्र करते देखकर [illegible] होती थी । पर साथ ही वह दृश्य आकर्षक भी होता था ।

अब तो यहाँ जेलखाने का-सा वातावरण पैदा हो [illegible] शातुनोव ने एक दिन मेरे कान में कहा । "जरा [illegible] तुम भी लपेट में न आ जाओ ।"

अब दिन-ब-दिन वह मेरा ज्यादा ख्याल रखने [illegible]

मेरा काम करने के लिए हर वक्त मेरे इर्द-गिर्द ही घूमता रहता जैसे कि मैं कोई लगड़ा-लूला या अपग हूं। कभी आटा लिये चला आरहा है तो कभी मेरे वास्ते लकड़िया लारहा ह और कभी आटा गूधने पर जिद कर रहा ह ।

"आखिर मतलब क्या है तुम्हारा ?"

मुझसे निगाह चुराकर बड़बड़ाते हुए उसने कहा

"कोई हर्ज नहीं, तुम्हारी ताकत कही और अधिक और उपयोगी [illegible] मे काम आयेगी। तुम्हे इसका ध्यान रखना चाहिए। अच्छी [illegible] इन्सान को जिन्दगी में बस एक बार मयस्सर होती है।"

और फिर सदा की भाति उसने दबे स्वर मे पूछा

"[illegible] है ?"

या फिर वह कोई अजीब-सी बात कह देता

"[illegible] ठीक कहते हैं कि हमारी मा (ईसा-मसीह की मा [illegible]) [illegible] कई है।"

"[illegible] ?"

"[illegible]।"

"[illegible] कि भगवान [illegible] है ?"

"[illegible] है। [illegible] उनका [illegible] अनुसार [illegible] है। उदाहरण के लिए [illegible] है।"

[illegible] सामने बैठा हुआ [illegible]

"[illegible] कि [illegible] जाय या [illegible] जाय। [illegible] बीमारी [illegible] दिखाई दे।"

"[illegible]"

"[illegible] किसी प्रकार का [illegible]

समझे ?"

'दिमाग तो ठीक है तुम्हारा ?"

बिल्कुल !"

चारो ओर दृष्टि डालकर उसने अपने कथन की व्याख्या आरम्भ की, "मेरा ख्याल था कि मैं जादूगर बनूँगा। मुझे बडा ही शौक था उसका। मेरे नाना जादूगर थे और पिता के चाचा भी हमारे गाव मे उनके चाचा मशहूर जादूगर थे। और गाँव मे झाड-फूँक और इलाज भी किया करते थे। शहद की मक्खियाँ भी पाला करते। जिले का हर आदमी उनको जानता था। यहाँ तक कि तातारी और च्वाशी और चेरेमेसी भी उनका लोहा मानते थे। अब वह कोई सौ से भी ऊपर है। कोई सात वर्ष हुए उन्होने एक नवजवान लडकी रखली थी—एक अनाथ तातारी लडकी। और उससे उनके सन्तान भी हुई अब और शादी वह नही कर सकते। तीन शादियाँ उनकी पूरी हो चुकी।"

एक गहरी सास लेकर उसने आहिस्ता-आहिस्ता और सोच सोच कर फिर बयान करना शुरू किया

"भला बतलाओ, तुम उसे ढोग कहते हो, सौ बरस तक कोई ढोग नही रचा जा सकता ढोग तो कोई भी कर सकता है लेकिन उससे आत्मा सन्तुष्ट नही होती।"

पर सुनो तो लौंडा-लूला क्यो बनना चाहते हो तुम ?

हा हा, जी तो किसी और तरफ लगा हुआ। मैं दुनिया भर की सैर करना चाहता हू। एक-एक कोना छानना चाहता हू। देखना चाहता हूँ कि आखिर दुनिया की क्या हालत है। कैसी जिन्दगी वह बसर करती है क्या-क्या उसकी उम्मीदे है। मगर मुझ जैसा हट्टा-कट्टा आदमी क्या बहाना बना सकता है तीर्थ यात्रा को जाने को लोग कहेगे क्या बात है ? क्यो मारे मारे फिरते हो ? क्या बहाना बना सकता हूँ कुछ भी नही। इसलिए [illegible]

रहा था कि मेरा बाजू कट कर गिर गया होता या फोड़े पक-पक कर नासूर हो गए होते तो नासूर तो और बुरे हैं लोगों को उनसे वहशत होती है।"

वह अचानक खामोश हो गया। उसकी तिरछी आँखें आग को घूर रही थीं।

"तो तुम उसका पक्का निश्चय कर चुके हो?"

"अगर निश्चय न कर चुका होता तो मैं उसका जिक्र ही न करता ... तो उसने कहा, 'यह जो कहते हैं ना कि निर्णय किया ... रोब जमाता है, वैसे ही। ..."

... आग में अपने हाथ हिलाए और खामोश ...।

गालियां बक रहा था गालियां उनके मुँह से ऐसे निकल रही थी कि जैसे फटे हुए बोरे में से चने के दाने। वह भी एक से एक बढ़कर गंदा।

उसी क्षण मालिक के कमरे का दरवाजा भी एक झटके के साथ खुला और कनकं साश्का दरवाजे की चौखट पर सिमिटता हुआ आ पड़ा। मालिक उस पर बुरी तरह पिला हुआ था-कभी सीने पर कभी पसलियों में लातें और घूंसे इस तरह लगातार पड़ रहे थे जैसे यही काम है जिसे वह एकाग्रचित्तता के साथ पूरा कर रहा है।

हाय! तुम तो मुझे मार डालोगे!" लड़का बुरी तरह चीख रहा था।

सेम्योनोव बड़े सन्तोष के साथ लात रसीद करता और फिर इत्मेनान के साथ हुंकारता। इतनी देर में साश्का जमीन पर दुहरा पड़ा लुढ़कता रहता लेकिन जब भी कभी वह उठकर खड़ा होने की कोशिश करता वह उसे वहीं उठाकर जमीन पर पटक देता।

सब मजदूर बिस्कुटों की बेकरी से निकल कर बाहर हुए पर ... खामोशी के साथ एक गुट-सा बनाकर खड़े हो गये। सुबह ... और उस सुरमई रोशनी में किसी के चेहरे साफ नजर नहीं आ ... थे। लेकिन उनमें एक सनसनी और भय उत्पन्न हो जाने का ... जरूर मालूम होता था। साश्का हाँफता-कराहता उनके ... ना पड़ा।

भाइयो! यह तो मुझे मार डालेगा!"

वे सब के सब पीछे हट गए जब आखीर में एक झोंके में ... टहनियों की बाड़ झोंका खाकर गिर पड़े। इतने ही में ... आर्तेम भीड़ को चीरता हुआ बाहर आया और ... के ... ठीक पास जाकर बोला

बस बस हो चुकी!"

सेम्योनोव ठिठक गया। सारा ... ...

कड़का और भीड़ में गायब हो गया।

एकदम सन्नाटा छा गया। कई सेकन्ड तक भयानक स्तब्धता छाई रही। और कोई फैसला न कर सका कि जीत किसकी होगी—इन्सान की या हैवान की।

कौन है?" मालिक ने भराई हुई आवाज में पूछा और हाथ उठाकर आर्तेम को गौर से देखने लगा। इस अर्से में उसका हाथ सिर से ऊँचा उठ गया था।

मैं हूं!' आर्तेम ने आशंकता से अधिक जोर लगा कर कहा और एकदम पीछे हट गया। मालिक ने उस पर भी हाथ छोड़ा ... [illegible] फौरन ही ... आगे बढ़ा और उसने मुक्का अपना ... [illegible]।

कर रहा था। लेकिन जब कोई शख्स दाँत निकाले उसके ठीक सामने आजाता तो वही हिस्सा प्रकाश में आकर ऐसा लगने लगता जैसे कि जिस्म के बाकी हिस्से से कटकर अलग हो गया हो। सब-के-सब चीख-चीख कर आसमान सिर पर उठाए हुए थे। मगर फिर भी निकिता की आवाज उन सब में बुलन्द थी।

"तुमने मेरी सारी शक्ति चूस डाली। भगवान के सामने क्या मुँह लेकर जाओगे? हाय रे इन्सान, हाय!"

गालियाँ बढते-बढते बहुत ही गंदी हो गई थीं और कभी-कभी तो लोग घूसे तान-तानकर सेम्योनोव को धमकियाँ देते और वह तो मालूम होता था जैसे खडे खडे ही सोगया हो।

"तुम्हें धनवान किसने बनाया! हमने?" आतम चिल्लाया। और बेचारा किताब खोलकर पढने लगा।

'याद रखो, हम सात बोरे आटे के हर रोज बिस्कुट बनाने के लिए हरगिज तैयार नहीं हैं।"

आखिरकार मालिक मुडा और अजीब अन्दाज में सिर को हिलाता हुआ खामोशी के साथ चला गया।

बिस्कुट की बेकरी मे शांतिपूर्ण किन्तु उत्साह भरे उत्सव का दृश्य उपस्थित था। हर व्यक्ति अपने-अपने काम मे तल्लीन नजर आता था। और सब-के-सब एक-दूसरे को जैसे नई आंखों से देख रहे थे— विश्वास, नर्मदिली, और कुछ उलझन से। और बंजारा तो चहचहा रहा था।

'चलो यारो! लग जाओ काम पर कान फडफडाकर।"

'चल जवान हमेशा! बिल्कुल ठीक-ठीक और न्याय के साथ हम भी दिखा देंगे कि काम किसको कहते हैं। चलो जुट जाओ काम में।"

लापतेव आटे की बोरी कंधे पर लादे कारखाने के बीचों बीच खड़ा

अपने होंठ चाट-चाट कर चूम रहा था।

"देखा क्या होता है   जब तुम सब एका कर लेते हो तो   "

शातुनोव जो नमक तोल रहा था, हुमक कर बोला

"अरे, बच्चे एका करले तो अपने बाप को भी पीट सकते हैं।"

सब लोग ऐसे [illegible] नजर आ रहे थे, जैसा कि वसन्त ऋतु में शहर की मक्खियां   आतंम विशेषतया प्रमुख था। सिर्फ बूढ़ा कुजिन हमेशा की तरह अपनी गरगरी आवाज में कह रहा था

"अरे [illegible]! क्या सोच रहे हो तुम, कमबख्तो।"

[illegible] के [illegible] मीनारों और मकानों की छतों पर सुरमई [illegible] छाई हुई थी। सारा शहर धुंआ-सा नजर आता था। और [illegible] ऐसे मालूम होते थे जैसे सिर फटे फिर रहे हों। वायु-[illegible] हो आई हुई थी और सांस लेना तक मुश्किल [illegible]। आसपास की हर चीज पर [illegible] सफेद रंग चढ़ा हुआ था। और [illegible] जाती हुई [illegible] नहीं [illegible] थी।

एक घोडा गर्दन ताने, अगली टाँगे उछालता धुध मे से निकला और मेरे पास से होता हुआ गुजर गया ।—घोडा वडा मोटा-ताजा और कत्थई रग का था जिस पर काले दाग पडे हुए थे और उसकी लाल आंखो में दुख व उदासी की एक झलक । वग्घी पर गाडीवान की जगह पर येगोर वागे ताने ऐसा तना हुआ बैठा था जैसे कि लकडी पर नक्शा खुदा हुआ हो । वग्घी के अन्दर मालिक हिचकोले खाता दिखाई दिया । उस समय वह लोमडी की खाल का कोट पहने हुए था जवकि गर्मी काफी हो रही थी ।

यह तेज व तर्रार घोडा कई वार वग्घी के टुकडे-टुकडे कर चुका था । अभी पिछले दिनो येगोर और मालिक को कीचड और खून में लथपथ घर लाया गया था । पसली की हड्डियाँ चुर-मुर हो गई थी लेकिन फिर भी दोनो को इस मोटे-ताजे जानवर से वडी मुहब्बत थी ।

एक वार जव येगोर घोड को साफ कर रहा था जिसने अभी [illegible] मिनट पहले ही उसके कधे पर काट खाया था, तो मैंने सलाह दी कि अच्छा तो यह हो कि इस जानवर को तातारियो के हाथ बेच दिया जाय ताकि वे उसे जिवह कर डाले ! यह सुनते ही येगोर तनकर खडा हो गया और भारी खरेरे से मेरे सिर को निशाना साधते हुए धमका कर वोला

"भाग जाओ !"

वह शख्स मुझसे फिर कभी न वोला और अगर मैंने उससे [illegible] चीत शुरू करनी भी चाही तो वह वैल की तरह सिर [illegible] [illegible] तरह चल दिया सिर्फ एक वार उसने अचानक पीछे से आकर [illegible] दवोच लिया और झिझोडते हुए वोला

अरे वुद्धू ! मै तुमसे कई गुना ज्यादा [illegible] हूं । [illegible] से निपट सकता हूँ और तुमसे तो सिर्फ एक हाथ [illegible] । [illegible]

मानिक नियम ..."

यह बातचीत उसने बड़े भावुक ढंग से की और उसका इस पर इतना असर हुआ कि वह वाक्य तक पूरा न कर पाया। उसकी कन-पटियों पर नीली रगें उभर आईं और माथा पसीने से तरबतर हो गया।

नवाबजादा [illegible] उसके बारे में कहा करता था

"[illegible] तो उनके तीन जरूर हैं मगर खुद [illegible] है।"

सड़क और भी तंग होती गई। हवा और ज्यादा नम हो गई थी [illegible] भी [illegible] हो गई थी। घोड़े की टापों की आवाज [illegible] और हर चीज एक आशाजनक स्तब्धता में [illegible]।

[illegible] सुरमई [illegible] कमीज पहने और सफेद एप्रन [illegible] और डाकरी उतारते हुए उसने मुक [illegible]

बाधे एक लाल और मसले हुए तकिये पर बिखरे पड़े थे। लड़की का छोटा-सा घुटना अपने हाथ में लेकर दूसरे से उसके पाँव की उंगलियों के लाल नाखूनों को भींचा।

"बैठ जाओ! अच्छा तो आज हम गंभीरता से बात कर लें।"

सोफिया के पाँव को थपथपाते हुए उसने आवाज दी

'याश्का, समावार! चलो सोवा उठ बैठो।"

उसने जम्हाई लेते हुए धीरे से कहा

"मेरा तो जी नहीं चाहता।"

"आओ, चलो उठ भी जाओ।"

उसने उसकी टाँग अपने घुटनों पर से सरकानी और आहिस्ता से खींसते हुए कहा

"बाज बातें ऐसी हैं जो हमें करना ही पड़ती हैं चाहे हमें [illegible] लगें या न लगें। खुद जिन्दगी ही हमारे स्वभाव के विपरीत [illegible] है।'

सोफिया बेढंगेपन से फिसलकर फर्श पर लेट गई और उसका [illegible] घुटनों से ऊपर तक खुल गई। मालिक ने उसे डाँटते हुए कहा

'तुम्हें इतनी भी शर्म नहीं आती, सोवा?'

उसने अपने बाल सँवारने शुरू कर दिये और जम्हाई [illegible] बोली

तुम्हें मेरी शर्म की क्या परवाह?'

अकेला तो नहीं हूँ मैं ही? सामने लड़का बैठा है।

उससे मेरी जान पहचान है।

[illegible] नाक-नक्शा लिये, नये कुर्ते और [illegible] समावार लेकर अन्दर दाखिल हुआ। समावार [illegible] जैसा ही था वैसा ही छोटा-सा साफ-सुथरा और [illegible]

"उड़ नालायक !" सोफिया ने झटके के साथ अपनी [illegible] [illegible] और अपने [illegible] पर आते हुए कहा और [illegible] सेन के सामने आकर बैठ गई।

[illegible] मानिक ने कहना शुरू किया। इस समय उसकी [illegible] और [illegible] बिल्कुल [illegible]।

आखिर गुजारा कैसे करोगी ?"

"मैं तुमसे कुछ नही सीखूंगी, खातिर जमा रखो।

वह अपनी कुर्सी पर आराम से लेटी हुई थी। चाय की एक छोटी-सी नीली प्याली में पाँच डल्लियाँ शकर की डालकर मजे से घुला रही थी। उसकी सफेद चोली सामने से खुलगई थी और बडी-सी सुडौल छाती नजर आने लगी थी जिसकी नीली २ नसो में रक्त-सचार तेज मालूम होता था। उसके मूर्खतापूर्ण चेहरे से नीद के लक्षण दृष्टिगोचर हो रहे थे। या फिर मालूम होता था कि वह किसी गहरे सोच में है। होठ उनके इस तरह खुले हुए थे जैसे किसी बच्चे के।

"अच्छा तो खैर!" मालिक ने बातचीत का क्रम जारी रखते हुए कहा और उसकी चमकदार आँखमे रे चेहरे के भाव टटोलने लगी।

"मैं तुम्हे साश्का की जगह लगाना चाहता हूँ क्यो ?"

"धन्यवाद! पर मैं कर नही सकता वह काम।"

"नही क्यो ?"

'वह उचित नही है मेरे लिए।"

"मगर कैसे, कुछ बताओ तो सही।"

"योही, मेरा दिल नही चाहता उस काम के करने को।'

'फिर वही दि [illegible]!" उसने एक ठण्डी सास खीचते हुए कहा और बडे ही सुन्दर शब्दो मे दिल जान और आत्मा का [illegible] कहकर वह जरा जोश में आ गया और चीखते हुए उसो बोलना शुरू किया

'हाय, कही यह आत्मा मुझे देखने को मिलत [illegible] जरा अपने नाखुन से कुरेदकर देखूं [illegible] यह सब सच्चीपन नही तो और क्या [illegible] बात करता है! मगर देखा किसी ने नही [illegible] और तो कुछ नजर आता नही। उफ्फो! [illegible]

मिन भी जाव जनने ईमानदारी जरा बराबर भी [illegible] तो [illegible] वह मूर्ख निकलता है।"

नोकिया ने आहिस्ता-आहिस्ता अपनी पलकें उठाई। [illegible] [illegible] जरा मुस्कराई और पूछा

[illegible] कभी तुम्हें कोई ईमानदार आदमी भी मिला ?"

मैं [illegible] ईमानदार [illegible] अपनी [illegible]" उसने [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] सीने पर जोर से [illegible] मारा। फिर [illegible]

उदासी व विषाद इतना कष्टकर था कि रोने को जी चाहता था व्यर्थ ही दिल भारी-भारी-सा रहता, एक टीस सी उठती। क्या इन्ही लोगो के साथ जीवन व्यतीत करूँ ? साफ मालूम होता था कि ये लोग एक स्थायी विपदा मे फँसे हुए हैं। उनके दिल व दिमाग मे कोई बुनियादी कमजोरी है, उनको देखकर अफसोस होता, दिल कटने लगता। उनकी मदद करने की कोई सूरत न देखकर तबियत निढाल होने लगती और खुद भी इस बेनाम रोग का असर होने लगता।

"बीस रूबल बुढापे तक—है मजूर ?"

'नही।"

'पच्चीस ? बोलो ! मौज करना, लडकिया मिलेगी और हर तरह के ऐश रहेंगे।"

जी चाहा कि मै किसी सूरत से उसे यह समझाऊ कि हमारा साथ-साथ रहना मिल-जुलकर काम चलाना कितना असम्भव '। लेकिन मुझे समुचित शब्द ही न मिल सके और उसकी भारी [illegible] एव अविश्वसनीय आखो की ताब न लाकर मै कसमसा रहा था।

"छोडो भी बेचारे को।" सोफिया ने प्याली मे चीनी [illegible] हुए कहा मालिक ने सिर का इशारा करते हुए कहा

"अब चीनी क्यो ठूसे जा रही हो इतनी ?'

"तुम क्यो जलते हो ?"

"अरी मूर्खा। यह स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। [illegible] कैसी फूलती जा रही हो ? अच्छा तो हा हमारी [illegible] नही सकती।"

तुम हमेशा के लिए मेरे खिलाफ हो [illegible] ?

'मै चाहता हूँ कि तुम मुझे बर्दाश्त करदो।

"अच्छा अब चलदो ।" मालिक ने रुखाई के साथ कहा, जाओ अच्छा हुआ ।"

बाहर गली अब भी कुहरे में लिपटी हुई थी । मकानो की दीवारो से गदले आंसू बह रहे थे । अँधियारी परछाइयाँ भीगे हुए अँधेरे मे अकेली भटक रही थी । कही दूर लोहारखाने मे काम हो रहा था । वहाँ हथौडो की आवाज एक बधे हुए वक्त के साथ लगातार सुनाई द रही थी । और यह पूछती हुई मालूम हो रही थी, क्या ये लोग इन्सान है ? क्या इसी का नाम जिन्दगी हे ?"

मैंने अपनी आखिरी तनख्वाह शनिवार को ली । और इतवार क दिन सब लडको ने मिलकर विदाई पार्टी का आयोजन किया । गदे किन्तु आरामदायक और गर्म मयखाने मे शातुनोव, आर्तेम, नाजुक मिजाज लापतेव सैनिक मिलोव, निकिता और वानु एकत्र हुए । उलानोव एक सस्ते मगर भडकीले कपडे का था, लवे जूतो मे पायचे दबे हुए थे और नई कमीज पर वास्कट थी जिसमे काच के बटन लगे हुए थे । उसकी पोशाक और नयेपन ने उसकी बेशर्म आखो की उद्दण्डता उसके मुर्झाए हुए छोटे-से चेहरे पर कायरता के भाव उसकी एक-एक हरकत से सावधानी और घबराहट देते थे । मानो उसे हर वक्त डर लगा हुआ हो खराब न हो जायें या कोई आकर वास्कट उतरवा न

एक रोज पहले शाम को सबने स्नान किया मे सब तेल लगा कर आये थे इस वजह से

कहा

"हालांकि रहोगे तो तुम इसी शहर मे लेकिन अब तो हमारे खटमल तुम्हारे खून मे हिस्सा न बटा सकेंगे ।'

आर्तेम ने बडी मृदुल मुस्कान के साथ दबे स्वर में कहा

'अब तुम हमारे गीत के बोल नही रहे ।"

शराबखाने मे गर्मी हो रही थी । स्वादिष्ट पदार्थों की खुशबूएं नथुनो में घुसी चली आ रही थी और तम्बाकू का धुंआ नीली नीली धुंधली लहरो मे तैरता फिर रहा था । कोने वाली खिडकी में से बसन्त के साफ दिन की बुलद आवाजें अदर स्पष्टया सुनाई दे रही थी और रगबिरगे फूलो से लदी हुई डालियां मस्त होकर झूम रही थी ।

मेरे सामने दीवार पर एक दीवार-घडी लगी हुई थी । उसका पेण्डुलुम मानो थक-हार कर रुक गया था । सुइयां गायब थीं और घडी का डायल शातुनोव के चौडे-चकले चेहरे की तरह मालूम हो रहा था जो आज हमेशा से कही अधिक मलिन व उदास था ।

"इन्सान मैं कहता हूं आनी-जानी चीज है ।" उसने अपना [illegible] दोहराया । "इन्सान अपने रास्ते तक आता है और गुजर जाता है ।'

उसके चेहरे पर जर्दी-सी आगई थी । एक मुस्कराहट [illegible] उसकी आखें आहिस्ता-आहिस्ता बन्द होगई ।

शाम के समय बाहर दरवाजे पर आकर बैठना और राहगीरों की सूरतें देखना, मुझे बडा अच्छा लगता है । अनजान लोग किन्हीं [illegible] मंजिलों की ओर लपके चले जा रहे हैं । और उनमें से [illegible] ऐसे होंगे जो नेकदिल भी हों । भगवान भला करे उनका ।

उसकी आखे डबडबा आई और पलकों में दो [illegible] झिलमिलाने लगे और फौरन ही गायब हो गए जैसे उनके [illegible] हुए चेहरे पर पडते ही भाप बन गये हों । उसने [illegible] फिर कहा

जहाँ आनन्द-मग्न हो लोग हँसी-दिल्लगी कर रहे थे वहाँ उन शब्दो पर किसी ने भी ध्यान न दिया जैसे खुद यह बात कहने वाला उन सब लोगो में दिखाई ही नही दे रहा था। अब उसकी हालत बहुत ही खराब और खस्ता हो चुकी थी और वह एक तरफ बैठा ऊंघे जा रहा था उसकी आँखे बुझ गई थी। उसका झुर्रियोदार चेहरा मुर्झाई हुई जद पत्तो की तरह नजर आ रहा था।

"शक्ति तो मित्रता में है!" लापतेव आर्तेम से कह रहा था।

शातुनोव ने मुझ से कहा

"ध्यान से सुनते रहो सब बाते और याद भी रखना। शायद इन्हीं ने वह कविता बनती हो!"

"मुझे मालम कैसे होगा कि कविता इन्हीं ने बनती है?"

"पता चल ही जायगा तुम्हे तो।"

"और अगर इनसे कोई और ही कविता बनी तो?"

"कोई और?"

ओसिप ने मुझे सन्देहपूर्ण दृष्टि से देखा और फिर [illegible] करने के बाद कहा

"और कोई कविता हो ही नही सकती। सब लोगो की [illegible] खुशहाली के लिए एक ही कविता है, कोई और है ही नही।"

"लेकिन मुझे पता कैसे चलेगा कि यह वही है?"

उसने निगाहे नीची करली और कुछ रहस्यमय [illegible] कहा

भगवान इन पर दया करे। और आओ अब हम दोस्ती प्रेम और घनिष्टता के लिए मदिरापान करें।"

हमने प्याले टकराये और पीगये। फिर एक-दूसरे को हवाई चुम्बन दिये और इस दौरान मे मेज पर रखी हुई तमाम चीजों को गडमड कर दिया। मेरे सीने के अन्दर बुलबुले चहचहाने लगी और दिल में एक तीव्र वेदना अनुभव करते हुए मुझे उन तमाम लोगों पर बडा प्यार आया। वजारे ने अपनी मूछो पर हाथ फेरा और साथ ही हल्की सी व्यग्यपूर्ण मुस्कराहट भी जो उसके होठो पर खेल रही थी, मिट गई। और उसने भी इसी तरह एक भाषण आरम्भ कर दिया

'भगवान की कसम कभी-कभी तो भाइयो, अपना दिल भी इतनी शानदार लय निकालता है कि जैसे कोई मार्डविनियन बाजा बजा रहा हो। अब वही दिन याद करलो जब हम सब सेम्योनोव के खिलाफ उठ खड़े हुए थे। और आज यहा अब कोई कर ही क्या सकता है।" बस जी भर आता है। कोई अच्छी बात कहने को जी चाहता है। लेकिन हम अभागे कह नहीं सकते कि क्या हमारा जी चाहता है। भगवान साक्षी है मैं भले-मानुसों का-सा जीवन बिताऊंगा और किसी से डरा नहीं करूंगा। तुम्हारा जो जी चाहे कहो। साफ-साफ कहो! जो कुछ मेरे विरुद्ध शिकायत हो मुह पर कहो। मैं जरा भी बुरा नही मानूगा यकीन ही नहीं करूंगा, इसलिए मैं नाराज नही होऊगा। और मैं जिंदगी का सम्मान जानता हू ओसिप! तुमने लोगों के बारे मे जो कुछ कहा था वह बिल्कुल सही है। मैं सोचा करता था भाई कि तुम कूढमगज हो लेकिन वह मेरी भूल है। तुम बिल्कुल ठीक कहते हो। हम सब अच्छे और योग्य लोग हैं।"

निकिता ने मरी हुई आवाज मे उस रोज पहली बार बोलते हुए कहा

"हम सब बहुत ही नाखश और बेजार हैं।"

जहाँ आनन्द-मग्न हो लोग हँसी-दिल्लगी कर रहे थे वहाँ उन शब्दों पर किसी ने भी ध्यान न दिया जैसे खुद यह बात कहने वाला उन सब लोगो में दिखाई ही नही दे रहा था। अब उसकी हालत बहुत ही खराब और खस्ता हो चुकी थी और वह एक तरफ बैठा ऊंघे जा रहा था, उसकी आँखें बुझ गई थी। उसका झुर्रियोदार चेहरा मुर्झाई हुई ज़र्द पत्ती की तरह नज़र आ रहा था।

"शक्ति तो मित्रता में है!" लापतेव आर्तम से कह रहा था।

शातुनोव ने मुझ से कहा

"ध्यान से सुनते रहो सब बातें और याद भी रखना। शायद इन्हीं से वह कविता बनती हो!"

"मुझे मालूम कैसे होगा कि कविता इन्हीं से बनती है?"

"पता चल ही जायगा तुम्हे तो।"

"और अगर इनसे कोई और ही कविता बनी तो?"

'कोई और?"

ओसिप ने मुझे संदेहपूर्ण दृष्टि से देखा और फिर क्षण भर [illegible] करने के बाद कहा

"और कोई कविता हो ही नहीं सकती। सब लोगों की [illegible] खुशहाली के लिए एक ही कविता है, कोई और है ही नहीं।"

"लेकिन मुझे पता कैसे चलेगा कि यह वही है?"

उसने निगाहें नीची करली और कुछ रहस्यमय [illegible] कहा

घबराई हुई आवाज में कहा -

"शिश मालिक ."

बजारे ने वोडका की भरी हुई बोतल उठाकर झट मेज के नीचे छिपा दी। लेकिन फिर फौरन ही वापस मेज पर जमाकर रखते हुए झल्लाकर बोला।

"यह तो है ही शराबखाना !"

"है तो सही !" आर्तेम ने जरा जोर से कहा। और फिर सब यो-

खामोश होकर बैठ रहे मानो किसी ने भीमकाय मालिक को मेजो के दरम्यान से बच-बचकर निकलते और हमारी महफिल की तरफ रोब-दार ढग से बढते हुए देखा ही न हो। आर्तेम ही ने सबसे पहले आंखे चार की। और अपनी कुर्सी से उठते हुए बहुत ही तपाक से कहा

"नमस्कार, वासिली सेम्योनिच !"

दो-चार कदम के फासले पर रुकते हुए सेम्योनोव ने खामोशी के साथ हमारे समूह को अपनी मंजरी आंख से जाचा। सब आदमियो ने भी चुपचाप सिर के इशारे से उसे सलाम किया।

"कुर्सी !" उसने धीरे से कहा।

सैनिक उठकर खड़ा हो गया और उसने अपनी कुर्सी पेश की।

"वोडका पी रहे हो ?" उसने कुर्सी पर बैठकर एक लम्बी सांस लेते हुए कहा।

"चाय पी रहे है।" यादका ने दात निकोसते हुए कहा।

"बोतलो मे से निकाल कर ?"

सारे कमरे मे एक सन्नाटा-सा छाया हुआ था जैसे कि अब किसी भी क्षण तू-तू-मैं-मैं शुरू हुई। लेकिन ओसिप शातुनोव ने उठकर अपना गिलास वोडका से भरा और मालिक को पेश करते हुए बहुत ही नम्रता से कहा

"हमारे साथ हमारे स्वास्थ्य के लिए पियो, वासिली सेम्योनिच !"

मालिक ने धीरे-धीरे और सोच-सोचकर अपना छोटा-सा हाथ उठाया। हम सब की तबियतें बोझिल हो रही थीं। किसी को यकीन था कि यह हाथ जो उठ रहा है वह ग्लास को पटक कर फेंकने के लिए है या उठाने के लिए।

'क्यों नहीं ?" आखिरकार उसने ग्लास को अपनी उंगलियों के सहारे उठाते हुए कहा

'और हम आपके स्वास्थ्य के लिए पियेंगे।"

मालिक ने अपनी मंजरी आंख से ग्लास को गौर से देखा और अपने होंठ चूसते हुए कहा

"क्यों नहीं, अच्छा तो फिर पिया।"

उसने अपने मुँह के मेंढक जैसे सूराख में वोदका उड़ेल ली। ... का काला चेहरा दागदार-सा हो गया। कँपकँपाते हुए ... जल्दी ग्लास भरते हुए उसने पाटदार आवाज में कहा

"बुरा न मानना वासिली सेम्योनिच, हम भी आखिर ... तुम तो जानते ही हो। तुम खुद भी तो मजदूर थे, ... होना चाहिए।"

"बस-बस, ज्यादा चालाक न बनो।" ... ग़मनाक लहजे में कहा। बारी-बारी हममें से हरेक के ... गौर से देखा और फिर मेरे चेहरे पर नजर जमा कर ...

'इन्सान। ... तुम लोग इन्सान नहीं हो। तुम तो ... पक्षी हो। लो अब आओ पियें।'

रूसी सुस्वभाव जो चालाकी से खाली नहीं होता ... टिमटिमा रहा था। और उस झिलमिलाहट ने हमारा ... भड़का दिये थे। हल्की-सी मुस्कराहट ... के चेहरे पर ... उनकी आंखों में लज्जा व पश्चाताप ... लगा।

हमने ग्लास टकराए और पी गये। बजारा फिर फट पडा

"मैं सच बोलना चाहता हू।"

"बस-बस, ज्यादा हाउ-हाउ न करो!" हमारे मालिक ने रुम्बा मुह बना कर उसे रोकते हुए कहा। "कान के पर्दे फाडे देता है। और तेरे सच की जरूरत किसे है? काम प्यारा है काम। "

"जरा ठहरिए।—दिखाई नही दिया अपना काम मैंने कल-परसो?"

"सुनो-सुनाई बातें न दोहराओ। जरा अपने दिमाग पर भी जोर दो।'

नहा मैं तो कहता हू, बताओ मैंने काम करके नही दिखाया?"

बस ऐसा ही होना चाहिए!"

'और ऐसा ही होगा भी।"

हमारे आका ने एक निगाह ही मे सबको भांपा और सिर हिलाते हुए फिर वही बात दोहराई।

'बस ऐसा ही होना चाहिए। मैं तो और कुछ नही कहता। अच्छो था। अच्छा है। ऐ सिपाही बच्चे, एक दर्जन बियर का आर्डर दो।"

वह आर्डर मानो विजय का नारा था। महफिल की जिन्दादिली और भी बढ गई। हमारे मालिक ने अपनी आंखें बन्द करली और बोला

'अननत्रिया के साथ तो मैंने वोद का की नदियां पी डाली, लेकिन खुद अपने भाई-बन्दो के साथ महफिल का रग जमता देखे जमाना बीत गया।"

हमदर्दी के भूखे दिलो, जिन्दगी की खुशियो से वचित दिलो पर ता इस वाक्य ने आग पर तेल का काम किया। सब-के-सब एक दूसरे से और भी सटकर बैठ गये। शानुनोव ने एक आह भर कर मानो

नवकी ओर से कहा

'हम तो तुम्हे जरा भी नुकसान नही पहुँचाना चाहते थे मगर आखिर करते क्या ? तग आ गये थे जिन्दगी से । पिछले जाड़े बड़ी मुसीबत से कटे । बस यही वजह है ।

मैंने महसूस किया कि मिलाप के इस उत्सव मे मेरी उपस्थिति खटकती है और मेरे ही कारण दृश्य कुछ असहाय-सा होता जा रहा । शराब फौरन ही उन लोगो के सिर पर सवार हो गई और वे [illegible] के ताँबे जैसे चेहरे को देख-देखकर मस्त हुए जा रहे थे और [illegible] यह चेहरा भी कुछ असाधारण-सा प्रतीत हो रहा था । [illegible] दयालुता, विश्वास और बुद्धिमत्ता की चमक दिखाई दी ।

वह बड़े धीरे-धीरे और लापरवाही से बात कर रहा था [illegible] आदमी जिसे मालूम हो कि उसका मतलब फौरन समझ लिया जायेगा । और वह बैठा अपनी घड़ी की चाँदी की जजीर अपनी [illegible] लपेट रहा था ।

यहाँ कोई अजनबी नही है हम सब हमवतन [illegible] मे सबका वतन एक ही है ।"

'सो तो है ही । हमवतन ।' नापतेव ने [illegible] आवाज में कहा ।

भेड़ियो की-सी आदत के कुत्ते [illegible] चाहे [illegible] मे रखने योग्य तो होता नही ।"

सैनिक ने अपनी पूरी आवाज से चीखते हुए कहा

'ख-ब-र-दा-र । सुनो ।"

बजारे ने आख बचाकर अपने मालिक की तरफ [illegible] कहा

तुम समझते हो कि मै कुछ नही समझता ?

महफिल का रग और भी जम गया । [illegible]

का और आर्डर दिया गया। ओसिप ने मेरी तरफ झुककर लड़खड़ाती हुई जबान में कहा

"हमारा मालिक पादरी है। बिल्कुल लाट पादरी। लाट पादरी मठाधीश होता है।"

"यहां बुलाया किसने उसे? कमबख्त ने सारा मजा किरकिरा कर दिया।" आर्तेम ने जरा आवाज को दबाकर कहा।

हमारा मालिक मशीन की तरह बियर के ग्लास हलक में उंडेलता रहा और बड़ी खामोशी के साथ। कभी-कभी बीच में बड़े रौब के साथ खखार कर गला साफ कर लेता जैसे अभी कुछ कहने ही वाला है। उसने मेरी मौजूदगी पर कोई ध्यान नहीं दिया। कभी-कभार जब उसकी उचटती हुई नजर मेरे चेहरे पर पड़ती तो खाली-खाली आंखों को जैसे कुछ दिखाई ही न देता।

मैं चुपके से उठकर बाहर खिसक आया। लेकिन आर्तेम लपक कर मेरे पीछे आया। वह खूब डटकर पिये हुए था। फूट-फूट कर रोने लगा और सुबकियां लेते हुए बोला

"हाय भाई। मैं तो अकेला रह गया अब। बिल्कुल अकेला!"

राह चलते नाविक से कई बार भेंट हुई। हमने एक दूसरे को सलाम किया। अपने मोटे-से हाथ से अपनी गरम टोपी उठाकर वह बड़ी संजीदगी के साथ कहता

"जिन्दा हो?"

"जी हां, जिंदा हूं।"

"बस यही चाहिए!" वह इस तरह कहता जैसे मारी दे रहा

है। और मेरे कपडो को एक आलोचक की हैसियत से जाचते हुए [illegible]
भारी-भरकम जिस्म को लुढकता आगे बढ जाता।

ऐसी ही एक मुलाकात एक बार शराब खाने के सामने हुई [illegible]
उसने सुझाव दिया

'कहो बियर पिये तो कैसी रहे ?"

हम तीन सीढियाँ उतर कर तलघर नुमा कमरे मे पहुचे। उन
वहाँ सबसे ज्यादा अन्धियारा कोना तलाश करके [illegible]
पर बैठकर चारो तरफ नजर दौडाई जैसे मेजे गिन रहा हो। [illegible]
के अलावा वहाँ पाँच मेजे और थी। सब पर मटिया[illegible]
फटे-पुराने मेज पोश बिछे थे। एक ठिगनी-सी [illegible] औरत [illegible]
ओढे शराब खाने के मालिक की जगह बैठी [illegible]

सफेद पत्थर की दीवारो पर तस्वीरो के चौखटे [illegible]
भेडिये के शिकार का दृश्य था और दूसरी मे [illegible]
का कनकटा चेहरा तीसरी मे [illegible]
में दो नग्न लडकियो की तस्वीर थी। इनमे [illegible]
छाती पर बडे स्पष्ट शब्दो मे यह इबारत [illegible]
गालानोवा विद्यार्थियो की प्रेमिका, [illegible]
की आँखे किसी ने खोद ली थी। उन [illegible]
जो सारे वातावरण पर धब्बो की तरह पडी हुई [illegible]
कर दिया।

दरअसल जाने करना न चाहती थी और खास रूसी किस्म की बेजारी और उकताहट उसके सिर पर सवार थी। आहिस्ता-आहिस्ता चुस्कियां लेकर उसने बियर पी और खाली ग्लास मेज पर रखकर अपनी उंगली से एक ऐसा झटका दिया कि अगर मैं न थाम लूं तो ग्लास फर्श पर गिर कर चकनाचूर हो जाए।

"क्यों पकड़ा?" सालिक ने शांतिपूर्ण स्वर में पूछा "गिर जाने दिया जाता। फर्श पे गिरकर टूट जाता। मैंने दाम दे दिये होते।"

गिरजाघर की घंटियां शाम की नमाज के लिए जोर-जोर से बजने लगीं और आसमान में उड़ते हुए कौवों की पंक्तियों में खलबली [illegible]।

"मुझे [illegible] की जगह पसंद है।" सेम्योनोव ने बातचीत जारी [illegible] "[illegible] मुझे [illegible] है।" और मक्खियां भी नहीं हैं मक्खियां [illegible] पसंद करती हैं।"

[illegible] उसने [illegible] ढंग से मुस्कराते हुए कहा

"[illegible] हो गई। जब उसने एक छोटे पादरी से इश्क [illegible] -कुरेंट, फट [illegible] है दुनिया उसका [illegible]। उसे मन्त्र सुनाया करता है [illegible] फूट-फूट कर रोया करती है। मुझ पर जब [illegible] मुझे क्या परवाह? मुझे [illegible]।"

उसने भी फदक-फुदक कर छ छोटे कह कहे लगाये ।

"शैतान !" उसने अपने कंध फुदकाकर गर्राते हुए कहा शैतान । हमारे भगवान के बनाये हुए नही छि ।"

उसने अपनी रंग-बिरंगी आँखो के छोटे-छोटे आंसू अपनी उंगली से पोछ डाले ।

'ओसिप के बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है ? याद है ना वह ? नौकरी छोड दी उसने, गधा कही का ,'

"गया कहाँ वह ?"

"कहते है तीर्थ यात्रा को गया है । जितना अनुभव उस है उम्र उसकी है—अब तक वह नानबाई हो गया होता कमकर है वह । अपना काम खूब अच्छी तरह जानता है ।

सिर हिलाकर उसने चन्द घूंट बियर के पिये और का नाया करते हुए बाहर देखकर बोला

'देखो तो कितने कौवे है । शादी के दिन है—अच्छा वडिये कौन-सी चीज फिजूल है और कौन सी वास्तव में कोई नही जानता भाई, ठीक-ठीक कोई नही जानता ने कहा था, जरूरत की सब चीजे आदमियो के लिए है चीजें भगवान के लिए ।' वह पिये हुए था उस वक्त । न्यायोचित ठहराने के लिए सब कोई-न-कोई बहाना लेते है । देखो तो नही शहर मे कितने फानूस लगे है । रहे है, पी भी रहे हैं । लेकिन वह खाना-पानी है कितना और यह सब आता कहां से है ?'

वह हडबडाकर एक दम उठ खडा हुआ । एक हाथ और दूसरा मेरी तरफ बढ़ाया । वह कुछ आता था । और उसकी आख किसी फिक्र से सिकुडी हुई थी ।

'अब चलना चाहिए, अच्छा नमस्ते ।'

उसने एक भारी-सा बटुआ निकाला और उसके अन्दर उंगलियां चलाते हुए इत्मीनान के साथ कहा

'अभी पिछले दिनों पुलिस इन्सपक्टर तुम्हारे बारे में मुझसे पूछ-गछ कर रहा था।"

चाहता क्या था वह ?"

मालिक ने अपनी सिकुडी हुई भवों में से देखते हुए लापरवाही के साथ कहा

तुम्हारे चाल-चलन और तुम्हारी जबान के बारे में पूछ रहा था। मैंने कह दिया कि तुम्हारा चालचलन खराब है और जबान कची की तरह चलती है। अच्छा, चल दिये !"

दरवाजा पूरा खोलकर और अपनी हाथी जैसी टांगें सीढ़ियों पर जमाकर रखते हुए उसने अपनी तोंद बाहर बाजार में धकेल दी।

उसके बाद फिर मेरी उससे मुलाकात नहीं हुई। मगर दस वर्ष बाद मुझे यों ही संयोगवश मालूम हुआ कि उसकी कारोबारी जिन्दगी किस तरह खत्म हुई। सन्तरी—(मैं उन दिनों राजनैतिक कैदी था, सन्तरी) कुछ सौदा अखबार में लपेट कर लाया और उस पुर्जे में मैंने यह खबर पढ़ी

गुड फ्राइडे के त्योहार पर हमारे शहर में एक बड़ी ही विचित्र घटना घटी। नामिनी सम्योनोव 'बन' और बिस्कुटों की बेकरी का मालिक था और यहां के बहुत प्रसिद्ध व्यक्ति रुआन्सी सूरत बनाये शहर में धनी व्यक्तियों के घरों पर गया और उसने रो-रोकर उन्हें विश्वास दिलाना चाहा कि वह बिल्कुल तबाह हो गया है और उसने उनसे प्रार्थना की कि वे उसे जेल न भिजवायें। उस व्यक्ति के कारोबार से जो सब परिचित थे, सभी लोग किसी ने भी उस पर विश्वास न किया। त्योहार के दिन जेलखाने में गुजारने की उसकी बेमौके इच्छा से लोगों ने बड़ा आनन्द लिया। इस अद्भुत स्वभाव वाले व्यक्ति के

सनकीपन से सभी परिचित थे । लेकिन चन्द ही दिनो बाद शहर भर के व्यवसायिक वर्ग मे बडी खलबली मच गई क्योकि पता चला कि सेम्योनोव कोई पचास हजार रूबल का कर्जा छोडकर लापता हो गया है और अपनी हरेक बिकाऊ चीज ठिकाने लगा गया है। निस्सदेह उस पर धोखे बाजी से दीवालिया हो जाने का मुकदमा कायम होगा।"

इसके बाद फिर दीवालिया भगोडे की विफल तलाश, की परेशानी और सेम्योनोव की विभिन्न विचित्र हरकतो का ब्यौरा दिया गया था। मैंने कागज के इस मैले-कुचैले और चिकने पुर्जे को पढ़ा और खिडकी के सामने जाकर विचारो के तूफान मे खो गया। धोखे बाजी, अदूर दर्शी एव दुर्भाग्यपूर्ण दीवालियापन की घटनाऐ जीवन से पलायन, कायरता, और अकर्मयता के अनुभव की घटनाएं रूस मे बहुत आम थी।

क्या परेशानी है यह, कैसी मुसीबत है ?

एक आदमी है जो जिदा है और कुछ सृजन करना चाहता है अपनी कामनाओ और अपने विचारो की रौ मे। और सैकडो लोगो का दिमाग ख्वाहिश और मेहनत शामिल करता है, जबरदस्त इन्सानी मेहनत हजम कर जाता है फिर अचानक और धोखा देकर सब कुछ अधूरा और अपूर्ण छोड देता है और अक्सर खुद अपने आप भी जिदगी की हल चल से निकल भागता है। और इस प्रकार इन्सान के गाढे पसीने की मेहनत बरबाद हो जाती है। उसका नामोनिशान तक बाकी नही रहता। और अक्सर दुख, दर्द भरी मेहनत व मशक्कत की कली बिन खिले ही मुर्झा जाती है।

जेलखाने की दीवार पुरानी और नीची है और भयावनी भी नही है। इस दीवार के बाहर, करीब ही वसन्त ऋतु के आनददायक नीलाकाश में लाल ईंटो का एक ऊचा अम्बर नजर आता है। जो गराज

के कारखाने के मालिक और इजारादार की मिल्कियत है। उसके समीप ही बस्तियों के और ऊँचे-ऊँचे मकानों के झाड़-झंखाड़ के दरम्यान मकानों की एक नई इमारत बन रही है जो किराये पर उठाई जाएगी।

इससे भी आगे एक उजाड़ मैदान फैला हुआ है जहाँ कहीं-कहीं गड्ढे नाले हैं, उनके किनारों पर सब्जा उग आया है। और इधर दक्खिनी ओर एक तरफ के ऊपर झुकी हुई चट्टान पर यहूदियों का कब्रिस्तान [illegible] के पास ही दरख्तों के एक अंधियारे झुण्ड पर मुर्दनी छाई [illegible]। [illegible] में भूरे रंग के फूल झूम-झूमकर आपस में [illegible] कर रहे हैं। एक छोटी-सी काली मटमैली खिड़की के मेल-

मेरी आखो मे उनका भारी-भरकम जिस्म बग्घी की गद्दी पर लोटता-पोटता, उछलता-थिरकता फिर रहा है। और वह गाड़ी न न जिन्दगी की तेज धार को अपनी मँजरी और चमकीली आग मे देखता नजर आ रहा है। येगोर का लकड़ी की मूर्ति बना हाथ फैलाये पकड़े बैठा है और अक्खड़ मिजाज कत्थई घोड़ा अपनी गरदन झटकाता और सड़क के ठण्डे पत्थर पर अपने सुमो को खटखटाता चला जा रहा है।

"येगो मैं किसका हूँ ? एक भेड़ निगल जाता है ... लेता है—लेकिन कसम भगवान की वह फिर भी ... रहता है।"

सीने मे किसी चीज के उठने से दम घुटने ... रहा था जैसे किसी व्याकुल व पीड़ित भावना ... आ रहा हो उस शख्स के लिए जा रही जा ... जो ससार मे अपना कोई स्थान ही ... किसी रँगरूट' के आलस्य और दीनतापूर्ण ... शायद शक्ति की हद से ज्यादा अहतियात ... था।

की भाति चिपटे हुए ह । और इमारत को दिन-ब-दिन ऊंची करते जा रह है।

और मजदूरो आर उनकी व्यस्तताओ की इस धमाधमी को देखते देखते मुझे यह विशाल और पेचीदा ससार की भूल-भुलैयो के बने जाल में एक अकेला मुसाफिर ओसिप शातुनोव आनदमग्न हो चलता, अविश्रम्त निगाहो मे चारो ओर घूरता और हर बात को शौक मे और पूरे ध्यान मे सुनता नजर आता है। कि शायद कही वे शब्द मिल जाए जो जनसाधारण की 'खुशी' की कविता रचें।